48वाँ अंक, अप्रैल 2025– सितम्बर 2025

सत्यमेव जयते

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

दिशा

राजभाषा पत्रिका

वर्ष–2025

प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) झारखण्ड का कार्यालय, राँची
पो. डोरण्डा, राँची – 834002 (झारखण्ड)
दूरभाष :– 0651–2412942, 2412582 फैक्स :– 0651–2411745
वेबसाइट :– https://cag.gov.in/ae/jharkhand/en | ई–मेल पता :– rajbhasha.jhr.ae@gov.in

हिंदी पखवाड़ा 2024 के दौरान आयोजित अनुवाद प्रतियोगिता।

हिंदी पखवाड़ा 2024 के दौरान आयोजित निबंध प्रतियोगिता।

हिंदी पखवाड़ा 2024 के दौरान आयोजित टिप्पण / मसौदा लेखन प्रतियोगिता।

हिंदी पखवाड़ा 2024 के समापन समारोह पर श्री वी. पी. सुधीर, उप महालेखाकार को श्रीमती गीतांजलि कुमारी द्वारा पौधा भेंट किया गया।

हिंदी पखवाड़ा 2024 के समापन समारोह पर श्री सुभाष कुमार रजक, उप महालेखाकार को श्री अमित कुमार द्वारा पौधा भेंट किया गया।

प्रधान महालेखाकार महोदय हिंदी पखवाड़ा 2024 का समापन समारोह की अध्यक्षता करते हुए।

उप महालेखाकार महोदय द्वारा श्री श्यामेंदु कुमार, सहायक लेखा अधिकारी को प्रमाण पत्र प्रदान किया गया।

प्रधान महालेखाकार महोदय द्वारा श्री अमित कुमार, कनिष्ठ अनुवादक को पुरस्कार प्रदान किया गया।

दिशा

दिशा

राजभाषा पत्रिका

राजभाषा परिवार

मुख्य संरक्षक

श्री चन्द्र मौलि सिंह
प्रधान महालेखाकार

संरक्षक

सुश्री सुमेधा अमर
वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन)

प्रकाशक परामर्शदातृ समिति

श्री सुभाष कुमार रजक
उप महालेखाकार (पेंशन)

श्री भार्गव राम ख्याति
उप महालेखाकार (लेखा, कार्य, वन एवं वी.एल.सी)

संपादक मंडल

प्रधान संपादक

श्री सुनील कुमार साव
सहायक निदेशक (राजभाषा)

श्रीमती असाई माई पाड़ेया
वरिष्ठ लेखा अधिकारी

श्री दीपक दयाल प्रसाद
वरिष्ठ लेखा अधिकारी

श्री हिमांशु पाण्डेय
सहायक लेखा अधिकारी

संपादन सहयोग

श्रीमती मधु कुमारी पाण्डेय
कनिष्ठ अनुवादक

श्री अमित कुमार
कनिष्ठ अनुवादक

अस्वीकरण
पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएँ रचनाकारों के व्यक्तिगत विचार हैं।
कार्यालय के संपादक मंडल का रचनाकारों के विचारों से सहमत होना आवश्यक नहीं है।

दिशा

राजभाषा पत्रिका

अप्रैल 2025 – सितंबर 2025

स्वत्वाधिकार

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) झारखण्ड, राँची

प्रकाशन

'दिशा' राजभाषा पत्रिका

प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) झारखण्ड, राँची

अंक

48वाँ

मूल्य

राजभाषा के प्रति निष्ठा

इस पत्रिका में संकलित सभी रचनाओं में रचनाकारों के निजी विचार हैं, जिनसे दिशा परिवार का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

संपादक मंडल

अनुक्रमणिका

क्र.संख्या	संदेश		पृष्ठ सं
1.	प्रधान महालेखाकार का संदेश	श्री चन्द्र मौलि सिंह	1
2.	वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन) का संदेश	सुश्री सुमेधा अमर	2
3.	संपादकीय	श्री सुनील कुमार साव	3
4.	आपके पत्र		4–5
	लेख/स्वानुभूति/जीवन/दर्शन/कहानी/अनुवाद	लेखक/रचनाकार	
5	कृत्रिम बुद्धिमत्ता और हिंदी का भविष्य	श्री सुनील कुमार साव, सहायक निदेशक (राजभाषा)	06–07
6.	भारतीय पर्यटन एवं संभावनायें	श्री बृज नन्दन कुमार (द्वारा–श्रीमती असाई माई पाड़ेया, वरिष्ठ लेखा अधिकारी	08–10
7.	सरकारी लेखांकन पद्धति का भविष्य	श्री हिमांशु पाण्डेय, सहायक लेखा अधिकारी	11–13
8.	बेतला की यात्रा – एक संस्मरण	श्रीमती असाई माई पाड़ेया, वरिष्ठ लेखा अधिकारी	14–15
9.	राग ठेकेदारी	श्री पुरुषोत्तम दास, प्रमंडलीय लेखा पदाधिकारी	16–18
10.	युद्ध उत्सव नहीं है	श्री कृष्ण लाल, लेखाकार	19–20
11.	स्वर्ग और नरक : कर्मों का परम सत्य	श्री अमित कुमार, कनिष्ठ अनुवादक	21–24
12.	भारतीय रेल का सफ़र : कुछ खट्टे–मीठे अनुभव	श्री प्रदीप कुमार, लेखाकार	25–26
13.	डर	सुश्री गूंजा मालवीय, आशुलिपिक	27
14.	बेचारी बूढी माँ	श्री संतोष कुमार राय, लेखाकार	28
15.	पारसनाथ की यात्रा	श्री वैभव नंदन डान्गिल (द्वारा– श्रीमती असाई माई पाड़ेया, वरिष्ठ लेखा अधिकारी)	29–31
16.	शाकाहार बनाम मांसाहार	श्री प्रतीक जैन, सहायक लेखा अधिकारी	32–33
17.	प्रेम	श्री पुरुषोत्तम दास, प्रमंडलीय लेखा पदाधिकारी	34–36

अनुक्रमणिका

क्र.संख्या	कविता/गीत/व्यंग्य	लेखक/रचनाकार	पृष्ठ सं
18.	थोड़ा रुक जाना भी ज़रूरी है	श्री राहुल कुमार, सहायक लेखा अधिकारी	37
19.	श्रेय नहीं तो कम–से–कम दोष मत देना	श्री अमन कुमार सिन्हा, लेखाकार	37
20.	मेरा गांव अब उदास रहता है....	श्री अमित कुमार, कनिष्ठ अनुवादक	38
21.	मेरे जीवन की यात्रा	श्री कृष्ण लाल, लेखाकार	39
22.	संवेदना कहीं खो गई है	श्री प्रदीप कुमार, लेखाकार	40
23.	आ रहा अहेरी है	श्री अमित कुमार पुष्पम (द्वारा– श्री अमित कुमार, कनिष्ठ अनुवादक)	41
24.	नादान परिंदा	श्रीमती गीतांजलि कुमारी, लेखाकार	42
25.	सनातन धर्म और महाकुंभ	श्रीमती रंजना कुमारी (द्वारा– श्री विनय प्रधान, वरिष्ठ लेखाकार)	43
26.	भ्रष्टाचार (भाग 2)	श्री जगर नाथ सन्डील, वरीय प्रमंडलीय लेखा पदाधिकारी	44
27.	एक स्वप्न – मां का गुजरना	श्री अमित कुमार, कनिष्ठ अनुवादक	45
28.	सफर का हमसफर	श्री राहुल कुमार, सहायक लेखा अधिकारी	46
29.	संघर्ष से थका मन	श्री सुनील कुमार साव, सहायक निदेशक (राजभाषा)	47
30.	इन्दुवचन बाबा	श्री अमित कुमार पुष्पम (द्वारा– श्री अमित कुमार, कनिष्ठ अनुवादक)	48
31.	शिक्षक की भूमिका	श्रीमती गीतांजलि कुमारी, लेखाकार	49
	बाल रचनाकार		
32.	भगवान जी से इंटरव्यू	श्री ओम (द्वारा– श्री उमेश कुमार ओझा, लेखाकार)	50
33.	यदि धरा पर वृक्ष न होंगे	सुश्री श्रद्धा ओझा (द्वारा– श्री उमेश कुमार ओझा, लेखाकार)	50
34.	मेहनत का पेड़	सुश्री ज्योति कुमारी/कक्षा–III (द्वारा– श्री कृष्ण लाल, लेखाकार)	51

प्रधान महालेखाकार का संदेश

भारत की संविधान सभा ने 14 सितंबर 1949 को हिंदी को संघ सरकार की राजभाषा के रूप में अंगीकार करने के महत्वपूर्ण निर्णय के बाद राजभाषा विभाग की स्थापना के 50 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में 26 जून 2025 को राजभाषा विभाग द्वारा स्वर्ण जंयती समारोह का आयोजन भारत मंडपम, नई दिल्ली में तथा इसी उपलक्ष्य में, एक अन्य सम्मेलन 11 जुलाई 2025 को, जी. एम.सी. बालयोगी इनडोर स्टेडियम, हैदराबाद में किया गया।

साथ ही, इस वर्ष माननीय गृह एवं सहकारिता मंत्री जी की अध्यक्षता में 14 सितंबर, 2025 को हिंदी दिवस तथा 14 एवं 15 सितंबर को 5वें अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन का सम्मिलित आयोजन महात्मा मंदिर कन्वेंशन सेंटर, गांधी नगर, गुजरात में आयोजन किया गया। इस गरिमामयी अवसर पर आप सभी को हार्दिक अभिनंदन एवं शुभकामनाएं। इस शुभ अवसर पर अपने कार्यालय की 'दिशा' पत्रिका के 48वें अंक आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे बेहद खुशी हो रही है। राजभाषा के रूप में हिंदी भारत की सामासिक संस्कृति के सभी तत्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम बनकर संपूर्ण देश को एक सूत्र में बांधने की अहम भूमिका निभा रही है। हमारी पत्रिका 'दिशा' हिंदी भाषा की मूल भावना के प्रति हमारी प्रतिबद्धता का प्रतीक है।

मुझे पूरा विश्वास है कि इस पत्रिका में समाहित सभी रचनाएँ न केवल आपको पसंद आएंगी बल्कि आपको इस मनोरम भाषा में लिखने के लिए प्रेरित भी करेंगी। मैं सभी रचनाकारों का हार्दिक अभिनंदन करता हूँ जिन्होंने अपनी रचनाओं से इस पत्रिका को सजाया है। संपादकीय मंडल भी बधाई के पात्र हैं जिनके प्रयासों से हमारी पत्रिका का निरंतर प्रकाशन सुनिश्चित हुआ है।

पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति की शुभकामनाओं के साथ।

(चन्द्र मौलि सिंह)
प्रधान महालेखाकार
(लेखा एवं हकदारी)

वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन) का संदेश

मुझे अत्यंत खुशी हो रही है कि हमारी अर्द्ध–वार्षिक गृह पत्रिका 'दिशा' आपके हाथों की शोभा बढ़ा रही है। यह हमारे लिए गर्व की बात है कि इस अंक में हमारे कार्यालय के कार्यक्रमों तथा उनके परिवार के सदस्यों के विविध विचारों और अभिव्यक्तियों को सारगर्भित एवं रोचक तरीके से प्रस्तुत किया गया है।

भाषा विचारों को साझा करने का एक सशक्त माध्यम है, जिसके जरिए हम अपनी बातों और भावनाओं को सहजता से व्यक्त कर पाते हैं। इसी माध्यम से हम अपनी बात को सरल और प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करते हैं। हिंदी केवल एक राजभाषा ही नहीं, बल्कि एक जीवंत भाषा भी है। इस कार्यालय के कर्मी न केवल इसे कार्यस्थल पर उपयोग में ला रहे हैं, बल्कि अपनी रचनात्मक अभिव्यक्ति से अपनी आंतरिक भावनाओं और सोच को भी हिंदी के माध्यम से व्यक्त कर रहे हैं।

हमें पूर्ण विश्वास है कि 'दिशा' का यह नवीन अंक हिंदी भाषा के विकास एवं कार्यालयीन हिंदी के प्रचार–प्रसार में सहायक सिद्ध होगा। साथ ही यह कार्यालय के कर्मियों में लेखन प्रतिभा, कलात्मकता और रचनात्मकता को प्रोत्साहित करता रहेगा।

(सुमेधा अमर)
वरिष्ठ उप महालेखाकार
(प्रशासन)

संपादकीय

संविधान सभा ने 14 सितंबर 1949 को हिंदी को संघ की राजभाषा के रूप में अंगीकार किया है। इसी उपलक्ष्य में प्रतिवर्ष 14 सितंबर को हिंदी दिवस के रूप में मनाया जाता है। भारतीय संविधान के अनुच्छेद 351 में संघ से यह उपेक्षा की गई कि वह हिंदी भाषा का प्रसार बढ़ाए, उसका विकास करें जिससे वह भारत की सामासिक संस्कृति के सभी तत्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम बन सकें।

भारतीय संविधान के 75 वर्षो का राजभाषा की विकास यात्रा का विश्लेषण करें तो यह निर्विवाद सत्य पाएंगे कि सरकार की राजभाषा नीति के चार प्रमुख स्तम्भ है– प्रेरणा, प्रोत्साहन, सद्भावना और प्रशिक्षण। पिछले 75 वर्षो से राजभाषा हिंदी का प्रगामी प्रयोग इन चार स्तम्भों पर मजबुती से टीका हुआ है। राजभाषा के संबंध में सांविधिक प्रावधानों, राजभाषा संकल्प, राजभाषा अधिनियम, राजभाषा नियम, संसदीय राजभाषा समिति के प्रतिवेदनों पर महामहिम राष्ट्रपति के आदेशों और समय–समय पर भारत सरकार द्वारा जारी अनुदेशों के आधार पर यदि हम एक वाक्य में राजभाषा नीति का सार प्रस्तुत करना चाहें तो कहा जा सकता है – ”सरकारी कामकाज मूल रूप से हिंदी में करने के लिए सरकारी कर्मचारियों को पूरी तरह से सक्षम बनाना तथा हिंदी में काम करने के लिए उन्हें प्रेरित और प्रोत्साहित करना“। इस दिशा में प्रशिक्षण सबसे कारगर माध्यम है और प्रशिक्षण के माध्यम से ही इस बहुभाषी देश में हम अपने कार्यालयों में विशेष रूप से हिंदीत्तर भाषी कार्मिकों को हिंदी के साथ सहज और स्वाभाविक रूप से जोड़ने में बहुत हद तक सफल हुए है और उनमें यह विश्वास कायम करने में सफल हुए है कि हिंदी का प्रयोग आसान है और वे आसानी से हिंदी की प्रयोग कर सकते हैं।

हिंदी केवल एक राजभाषा ही नहीं, बल्कि एक जीवंत साहित्यिक भाषा भी है। इस कार्यालय के कर्मी न केवल इसे कार्यस्थल पर उपयोग में ला रहे हैं, बल्कि अपनी रचनात्मक अभिव्यक्ति से अपनी आंतरिक भावनाओं और सोच को भी हिंदी के माध्यम से व्यक्त कर रहे हैं। हमारी अभिव्यक्ति की पठनीयता, रोचकता और आकर्षण का आधार हमारी भाषा ही होती है। भाषा केवल अभिव्यक्ति का माध्यम ही नहीं है ,बल्कि हमारी संस्कृति की वाहक और सांस्कृतिक पहचान भी है।

आपकी अपनी राजभाषा कार्यान्वयीन पत्रिका ‘दिशा’ का 48वां अंक आपको सौंपते हुए अत्यन्त सुखद अनुभूति का अनुभव हो रहा है। यह सब आपके अतुलनीय सहयोग से ही संभव हो सका है। ‘दिशा’का यह अंक कार्यालय में हिंदी भाषा के अधिकाधिक प्रयोग और प्रचार–प्रसार के उद्देश्य को मजबूती से आगे बढ़ाता है। विभागीय हिंदी पत्रिकाओं का प्रमुख लक्ष्य होता है कि कार्यालयीन कार्यो में हिंदी का अधिकाधिक और प्रभावी प्रयोग सुनिश्चित किया जाए और ‘दिशा’ पत्रिका ने इस दिशा में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

कार्यालय की ओर से मैं सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों का आभार व्यक्त करता हूँ जिनके बहुमूल्य सुझावों एवं सहयोग से पत्रिका को साकार रूप दिया जा सका। भविष्य में भी उनसे ऐसे ही सहयोग की अपेक्षा रहेगी। पत्रिका की निरन्तरता बनाये रखने हेतु सभी विद्वतजनों के सुझाव एवं मार्गदर्शन की प्रतीक्षा रहेगी।

पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति की हार्दिक शुभकामनाओं सहित।

(सुनील कुमार साव)
सहायक निदेशक (राजभाषा)

श्री कृष्ण लाल, लेखाकार कविता पाठ करते हुए।

श्री अमित कुमार, कनिष्ठ अनुवादक हिंदी पखवाड़ा 2024 के समापन समारोह पर कविता पाठ करते हुए।

श्रीमती गीतांजलि कुमारी, लेखाकार हिंदी पखवाड़ा 2024 के समापन समारोह पर कविता पाठ करती हुई।

प्रधान महालेखाकार महोदय द्वारा श्री राम नारायण सिंह, लेखाकार को प्रमाण पत्र प्रदान किया गया।

प्रधान महालेखाकार महोदय द्वारा श्री राजेंद्र मिंज, वरिष्ठ लेखाकार को प्रमाण पत्र प्रदान किया गया।

वरिष्ठ उप महालेखाकार महोदय द्वारा श्री अभिषेक कुमार, सहायक लेखा अधिकारी को प्रमाण पत्र प्रदान किया गया।

ऑडिट दिवस 2024 के अवसर पर आयोजित चित्रकला प्रतियोगिता।

ऑडिट दिवस 2024 के अवसर पर आयोजित किये गए चित्रकला प्रतियोगिता का पुरस्कार वितरण।

आपके पत्र

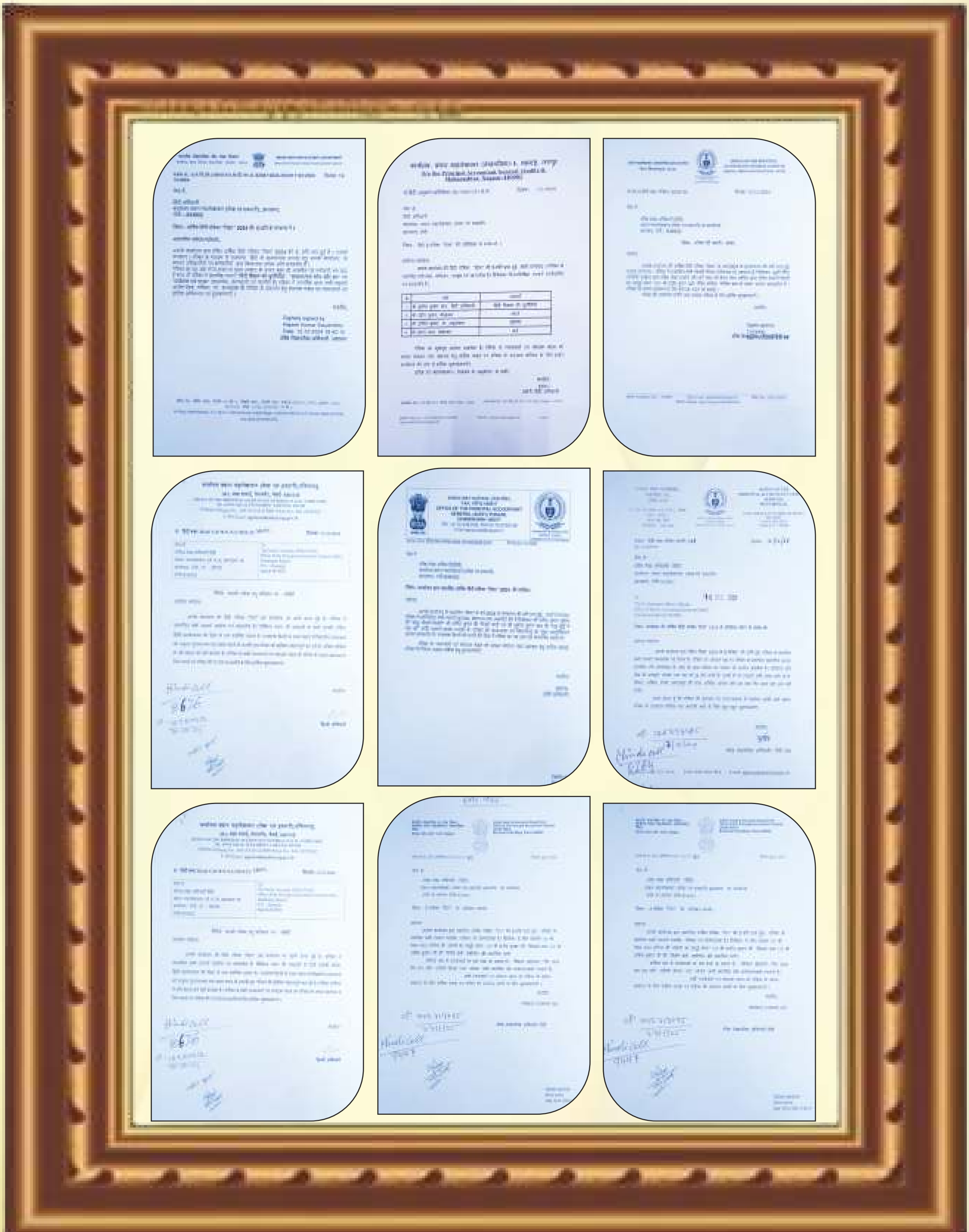

आपके पत्र

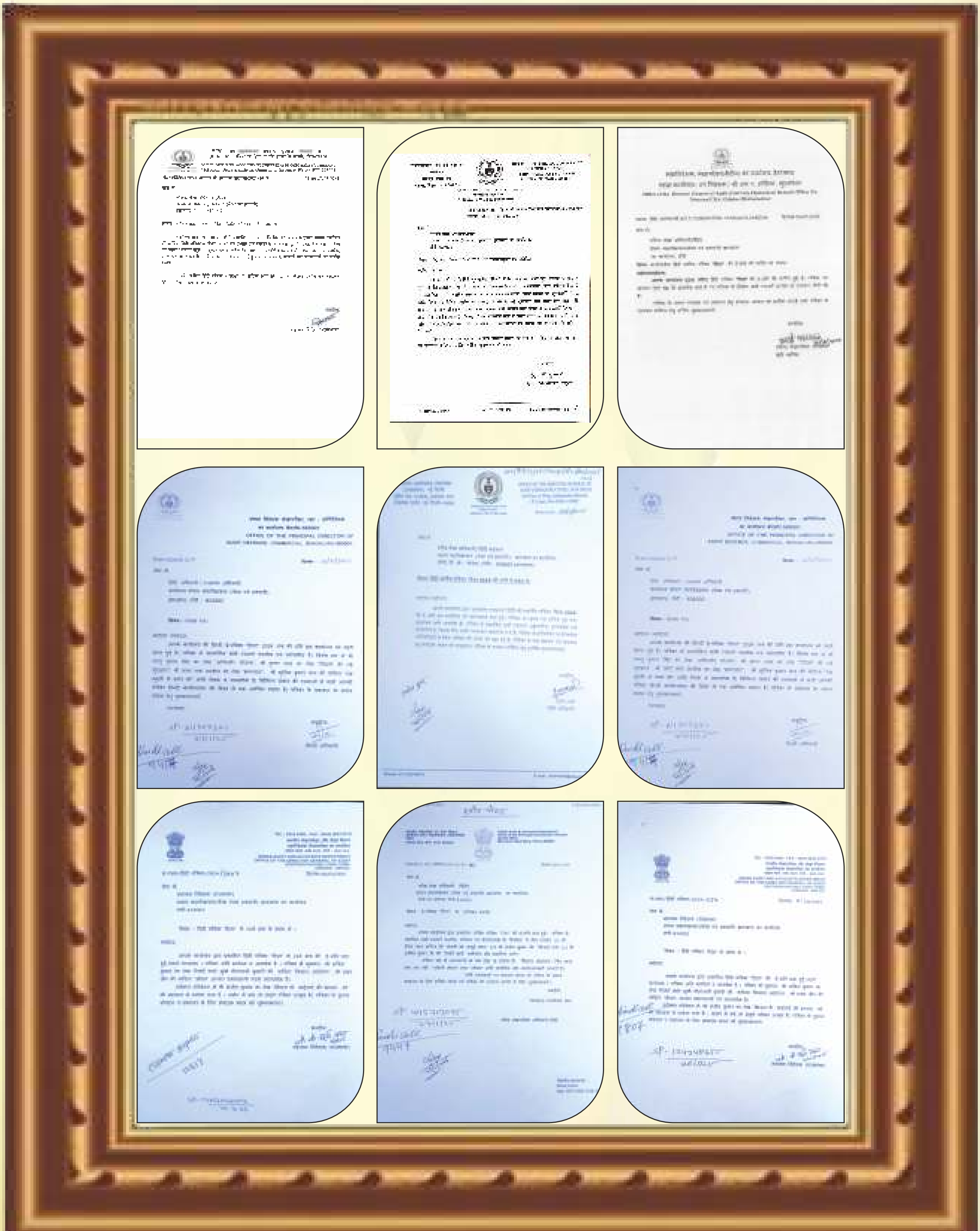

कृत्रिम बुद्धिमत्ता और हिंदी का भविष्य

श्री सुनील कुमार साव
सहायक निदेशक
(राजभाषा)

आज कृत्रिम बुद्धिमत्ता जीवन के हर पहलू को प्रभावित कर रही है और ऐसा माना जा रहा है कि अगले एकाध दशक में कृत्रिम बुद्धिमत्ता की बदौलत हमारी दुनिया का कायाकल्प होने वाला है। हिंदी सहित हमारी भारतीय भाषाएँ भी इस बदलाव से अछूती नहीं रहने वाली है और न ही उन्हें इससे अप्रभावित रहना चाहिए। जो भाषाएँ बदलते युग के साथ तालमेल बिठाकर नहीं चल पाती उनके स्थायी अस्तित्व की गारंटी नहीं ली जा सकती। वैसे हीं, जैसे अपने दौर के विकास, बदलाव, नवाचार आदि से अछूते रह जाने वाले समाज न सिर्फ प्रगति की दौड़ में पिछड़ जाते हैं बल्कि धीरे–धीरे अपनी प्रासंगिकता खो बैठते हैं। अफगानिस्तान, इराक, सीरिया, उत्तर कोरिया और पाकिस्तान जैसे देशों के उदाहरण आपके सामने है। विज्ञान, प्रौद्योगिकी, बाजार और बदलाव एक वास्तविकता है। उनका प्रतिरोध करने में कोई लाभ नहीं। हाँ, उनके साथ आने में हम सबका लाभ है, हमारी भाषाओं का भी।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता की अथाह शक्ति के अनगिनत उदाहरण हमारे सामने है। इस शक्ति के बारे में सकारात्मक और नकारात्मक दोनों तरह की चर्चाएँ हैं। एक तबके को लगता है कि यह मानव सभ्यता के भविष्य के लिए संकट खड़ा कर देगी इसलिए इससे बचना श्रेयस्कर है। दूसरे तबके को लगता है कि यह हमारी तरक्की के ऐसे नए रास्ते खोलने वाली है जिनकी अब तक हमने कल्पना भी नहीं की, इसलिए इसका अधिकतम दोहन किया जाना चाहिए। मुझे लगता है कि सही रास्ता दोनों के बीच से आता है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता को तय सीमाओं के भीतर, जिम्मेदारी के साथ इस्तेमाल किया जाए तो वह मानव सभ्यता की प्रगति का सबसे शक्तिशाली माध्यम बन सकती है।

यह प्रश्न स्वाभाविक रूप से उठता है कि हिंदी भाषा के लिए कृत्रिम बुद्धिमत्ता की क्या प्रासंगिकता है और वह इस भाषा के भविष्य को किस तरह प्रभावित कर सकती है? इसका उत्तर समझने के लिए हमें हिंदी की वर्तमान चुनौतियों, अवसरों तथा कृत्रिम बुद्धिमत्ता में निहित शक्तियों पर विचार करने की आवश्यकता है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का अर्थ तकनीक की उस शक्ति से है जिसका प्रयोग करते हुए वह इंसानों की ही तरह (किंतु उनकी तुलना में बहुत बड़े पैमाने पर) सीख सकती है, विशाल स्तर पर आंकड़ों का विश्लेषण कर सकती है, चीजों पर निगरानी (ऑब्जर्वेशन) कर सकती है, भिन्न–भिन्न परिस्थितियों का मंथन कर सकती है, अपनी क्षमताओं में वृद्धि कर सकती है, निर्णय ले सकती है और परिणाम दे सकती है। यह सामान्य प्रौद्योगिकी से अलग है जो पहले से निर्धारित काम करती है, अपनी सीमाओं में रहती है और पहले से दिए गए निर्देशों (प्रोग्रामिंग) के आधार पर परिणाम देती है। वह स्वयं को बदलती नहीं है और स्वयं को निरंतर बेहतर बनाने में सक्षम नहीं है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता हिंदी के स्थायी भविष्य को सुनिश्चित कर सकती है। यूनेस्को ने अपनी एक रिपोर्ट में कहा था कि दुनिया की 7200 भाषाओं में से लगभग आधी इस शताब्दी के अंत तक विलुप्त हो जाएंगी। अगर हम हिंदी को विलुप्त होने वाली इन भाषाओं की सूची में नहीं देखना चाहते तो हमें कृत्रिम मेधा को खुले दिल से अपनाना चाहिए। वजह यह कि यह प्रौद्योगिकी भाषाओं के बीच दूरियाँ समाप्त करने में सक्षम है। आज हम अंग्रेजी की प्रधानता से त्रस्त हैं और कृत्रिम मेधा तथा दूसरी आधुनिक प्रौद्योगिकियाँ अंग्रेजी के दबदबे से मुक्त होने में हमारी मदद कर सकती है। जो लोग यह सोचते हैं कि हिंदी जैसी गैर–पश्चिमी भाषाएँ अगले कुछ दशकों में प्राकृत और पालि की स्थिति में आ सकती है, उन्होंने संभवतः इस पहलू पर विचार नहीं किया कि जहाँ इन भाषाओं के सामने कई दिशाओं से ढेरों चुनौतियाँ आ रही है, वहीं प्रौद्योगिकी भाषाओं के बीच दूरियों को पाटने में लगी है।

जिस अविश्वसनीय और चमत्कारिक अंदाज में कृत्रिम बुद्धिमत्ता चीजों को बदल रही है, उसे देखते हुए अगले एक–दो दशकों में हम भाषा–निरपेक्ष विश्व की ओर बढ़ सकते हैं। ऐसा विश्व जिसमें हिंदी जैसी भाषाएँ बोलने–लिखने वाला व्यक्ति अवसरों से वंचित न हो क्योंकि प्रौद्योगिकी एक भाषा से दूसरी भाषा में अनुवाद को इतना सटीक, सहज, सरल तथा सार्वत्रिक बना सकती है कि आप अंग्रेजी की सामग्री को हिंदी में पढ़ सकेंगे और हिंदी की सामग्री को अंग्रेजी में।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता का दूसरा बड़ा प्रभाव होगा अन्य प्रमुख भाषाओं के साथ हिंदी के गहरे संबंधों का विकसित होना। प्रेमचंद, रवींद्रनाथ ठाकुर, सुब्रमण्य भारती, रामधारी सिंह दिनकर, जयशंकर प्रसाद, सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', महादेवी के साहित्य से लेकर रामायण, महाभारत, श्रीमद्भग्वद्गीता, वेद, पुराण, उपनिषद् जैसे ग्रंथ,

आयुर्वेद–योग जैसी ज्ञान संपदा, हमारी पत्रकारिता और विश्वविद्यालयों के शोध आदि दुनिया भर में गैर–हिंदी पाठकों तक पहुँच सकते हैं। यह हमारी साहित्यिक, सांस्कृतिक, आध्यात्मिक तथा शैक्षणिक संपदा को वैश्विक पहचान दिलाने में योगदान देगा। इतना हीं, बल्कि इससे कहीं अधिक आवश्यक है विश्व के ज्ञान, शोध, साहित्य का हिंदी भाषी लोगों तक पहुँचना।

हिंदी में विज्ञान, तकनीक, चिकित्सा, अर्थव्यवस्था आदि विषयों पर विश्व–स्तरीय सामग्री की कमी है। जहां हम स्वयं ऐसी सामग्री तैयार करने में कृत्रिम बुद्धिमत्ता की मदद ले सकते हैं वहीं हम मशीन अनुवाद के माध्यम से वैश्विक ज्ञान को अपनी भाषा में ग्रहण कर सकेंगे। यह ज्ञान अंग्रेजी तक सीमित नहीं होगा बल्कि पूर्वी–पश्चिमी, उत्तरी तथा दक्षिणी– सभी क्षेत्रों से हम तक आ सकेगा, भाषाओं की सीमा के बिना। वैश्विक भाषाओं के साथ ज्ञान के इस आदान–प्रदान से एक बड़ा अंतराल भरा जा सकेगा।

हिंदी में शिक्षण सामग्री तैयार करना आसान तथा तेज हो जाएगा। आज केंद्र सरकार तथा कुछ राज्य सरकारों के निर्देश पर हिंदी में पाठ्य–सामग्री तैयार करने के लिए कृत्रिम बुद्धिमत्ता का प्रयोग होने लगा है। यह प्रक्रिया निरंतर सटीक और तीव्र होती चली जाएगी। अंग्रेजी–फ्रेंच या जर्मन की किताबों को स्कैन करके चंद मिनटों में सीधे हिंदी में अनुवाद करना संभव हो गया है। कल्पना कीजिए कि हम हिंदी में जिन विषयों में अच्छी सामग्री की कमी से परेशान रहे हैं, उन विषयों में अचानक ही दर्जनों या सैंकड़ों पुस्तकें उपलब्ध हो जाएँ। हिंदी में पारंपरिक ज्ञान का दस्तावेजीकरण आसान हो जाएगा। वाचिक ज्ञान को डिजिटल स्वरूपों में सहेजा जा सकेगा। हिंदी भाषी लोग वैश्विक संस्थानों में पढ़ सकेंगे, भाषाओं की सीमाओं से मुक्त रहते हुए कौशल प्राप्त कर सकेंगे और विश्व को अपनी सेवाएँ दे सकेंगे। ऐसी अकल्पनीय घटनाएँ आने वाले वर्षों में सामान्य परिपाटी बन सकती है, यदि हमारी भाषा अपने दौर के इन आधुनिक अनुप्रयोगों को आशंका, उपेक्षा या घृणा की दृष्टि से न देखे बल्कि उनके प्रति खुला दृष्टिकोण रखें।

हिंदी में कृत्रिम बुद्धिमत्ता के क्षेत्र में महत्वपूर्ण कार्य घटित हो रहा है। ध्वनि प्रसंस्करण की बदौलत वाक् से पाठ और पाठ से वाक् (स्पीच टु टेक्स्ट) प्रौद्योगिकी उपलब्ध हो गई है। कंप्यूटर विज्ञान के कारण हिंदी के दस्तावेजों को स्कैन करके उनके पाठ को कंप्यूटर में टाइप किए गए पाठ के रूप में सहेजना संभव हो गया है। डेढ़ सौ से अधिक वैश्विक भाषाओं और बीस से अधिक भारतीय भाषाओं के साथ हिंदी के पाठ का दोतरफा अनुवाद संभव है। अलेक्सा, कोर्टाना, सिरी और गूगल असिस्टेंट जैसे डिजिटल सहायकों के साथ या तो हिंदी में संवाद करना संभव है या इंटरनेट सर्च तथा अनुवाद आदि के लिए उनकी मदद ली जा सकती है। माइक्रोसॉफ्ट और गूगल जैसी कंपनियों की ए.पी.आई. का प्रयोग करके हिंदी में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस से युक्त एप्लीकेशन बनाना संभव हो गया है। बात चैट जी.पी.टी. तक जा पहुँची है जो ऐसी कृत्रिम मेधा है जिसके साथ संवाद किया जा सकता है और अपने प्रश्नों के उत्तर प्राप्त किए जा सकते हैं। हिंदी समाज में इस तरह की तकनीकी उपलब्धियों को गिनाने और उन पर प्रसन्न होने की प्रवृत्ति दिखाई देती है। इससे लोगों में कौतूहल तो अवश्य पैदा हो सकता है और नए घटनाक्रमों के बारे में उनकी जानकारी भी बढ़ती है, लेकिन हिंदी, अन्य भारतीय भाषाओं या भारतीय समाज की प्रगति पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। यह प्रभाव तब पड़ेगा जब हम इन उपलब्धियों की जानकारी देने से आगे बढ़ेंगे और इनमें कौशल प्राप्त करेंगे। हम कृत्रिम बुद्धिमत्ता पर आधारित सुविधाओं के कुशल प्रयोक्ता तो बनेंगे ही, उनके विशेषज्ञ, शोधकर्ता और विकासकर्ता (डेवलपर) बनने की तरफ आगे बढ़ेंगे। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा था कि भारत दुनिया में कृत्रिम बुद्धिमत्ता का केंद्र (ग्लोबल हब ऑफ आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस) बनने की क्षमता रखता है। हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाएँ बोलने वाले हम लोग यह सपना सच करने में मदद कर सकते हैं। सूचना प्रौद्योगिकी भारत के लिए एक नया अवसर लेकर आई है। उस देश के लिए, जिसकी 65 प्रतिशत आबादी युवाओं की है। ऐसे युवा, जिनके लिए प्रौद्योगिकी कोई पहेली नहीं है बल्कि उनकी जीवनशैली का हिस्सा है और जो सीखने–सिखाने तथा परिणाम देने की उम्र में है। शर्त यह है कि हम उन्हें ऐसा पारिस्थितिकी तंत्र प्रदान करें जिसमें वे अपनी ही भाषा में कृत्रिम मेधा, डेटा विश्लेषिकी, क्लाउड कंप्यूटिंग तथा इसी तरह के विज्ञान–तकनीक आधारित विषयों में कौशल तथा विशेषज्ञता हासिल कर सकें।

अगर हम ठोस तकनीकी प्रवीणता की ओर बढ़ते हैं तो कृत्रिम बुद्धिमत्ता हमें अब तक की सीमाओं, वैश्विक व भाषायी असमानताओं आदि से मुक्त होकर विकास की नई दौड़ में बढ़त लेने का मौका दे सकती है। वैसे ही, जैसे विनिर्माण (मैन्युफैक्चरिंग) ने चीन की सूरत बदल दी, कृत्रिम बुद्धिमत्ता हमारी शक्ल बदलने में सक्षम है। वह यकीनन दुनिया के भविष्य को प्रभावित करेगी।

> "हिंदी को जीवन की भाषा बनाओ। यह केवल बोलचाल की भाषा नहीं,
> बल्कि विचारों की अभिव्यक्ति की भाषा है।"
> – मुंशी प्रेमचंद

भारतीय पर्यटन एवं संभावनायें

श्री बृज नन्दन कुमार
श्रीमती असाई माई पाड़ेया
वरिष्ठ लेखा अधिकारी

आम तौर पर पर्यटन को घुमक्कड़ी, सैर–सपाटा और मस्ती–खोरी के नजरिये से देखा जाता है किन्तु इसमें ऐतिहासिक, पुरातात्विक, शैक्षणिक, सामाजिक–सांस्कृतिक एवं आर्थिक आदि कारक भी सम्मिलित होते हैं।

प्रारंभ में पर्यटन धार्मिक महत्व के तीर्थ–स्थलों की पावनता, उसकी महत्ता, आध्यात्मिक खोज, शांति, ऐतिहासिक–पुरातात्विक महत्व एवं व्यापार विनिमय के साधन के रूप में सीमित था।

आज के दौर में पारंपरिक पर्यटन के अलावे ट्रेकिंग, कैंपिंग, रिवर राफ्टिंग, पैराग्लैडिंग, स्नो–स्कीइंग, स्नो बार्डिंग, स्लेजिंग, सी–डाइब, नाइट सफारी, नाइट कैम्पिंग, बोर्डर टूरिज्म, ट्राइबल टूरिज्म आदि भी पर्यटन के लोकप्रिय हिस्सा बन गये हैं।

पर्यटन के दौरान प्राकृतिक सुन्दरता आँखों के रास्ते दिल में उतरती तो है हीं, साथ ही स्थान विशेष के विशेषताओं–विभिन्नताओं को भी जानने–परखने का अवसर मिलता है। पर्यटन सुखद अनुभव और खुशियों के अलावे अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देने और स्थानीय लोगों के लिए रोजगार के अवसर का भी सृजन करता है।

पर्यटन का छुट्टियों के साथ–साथ पॉकेट बजट, अनुकूल मौसम, परिस्थितियों से भी गहरा संबंध है। पर्यटक अपने पसंद, प्राथमिकता और समय के अनुसार जगह का निर्धारण करते हैं।

यहाँ हम पर्यटन के सन्दर्भ में अपने देश भारतवर्ष की चर्चा करने जा रहे हैं।

हमारा देश उष्ण कटिबंधीय क्षेत्र में आता है तथा इसकी भौगोलिक संरचना और बनावट अनूठी है। उत्तर, उतर–पूर्व और पश्चिमोत्तर भागों में हिमालय पर्वत की श्रृंखलाएं हैं जहाँ ऊँची–ऊँची, हरी–भरी पहाड़ियां, फूलों से लदे घाटियाँ, चीड़, देवदार ,पाइन, ओक आदि के ऊँचे–ऊँचे दरख्त सुशोभित है तो कहीं धरती बर्फ से ढकी हुई है।

दक्षिण–पश्चिम में अरब सागर और दक्षिण पूर्व में बंगाल की खाड़ी, पश्चिम में राजस्थान में दूर–दूर तक फैले थार मरुस्थल के रेतीले टीलें हैं तो दक्षिणी किनारा हिन्द महासागर और तट पर हमारा खुबसूरत कन्याकुमारी स्थित है।

कुदरत ने हमें हसीन वादियाँ, बर्फीली चोटियाँ, खुबसूरत पहाड़ियां, इठलाती हुई नदियाँ, अनमोल छः ऋतुएँ, शांत, स्वच्छ लंबे समुद्री तट जैसे नैसर्गिक सौन्दर्य से नवाजा है, जो पर्यटकों का मन बरबस मोह लेती है। इसके अलावा प्राचीन महल, पुराने किले, स्मारक, मकबरा के स्थापत्य कला एवं नक्कासी से पर्यटकों में कौतुहल एवं उत्सुकता जगाती है तो तीर्थ स्थल, बौद्ध मठ, जैन मन्दिर आदि

श्रद्धालु पर्यटकों को अध्यात्मिक शांति एवं सुकून से भर देता है।

पर्यटक वन्य जीव अभ्यारण, वन्य पक्षी, प्रवासी पक्षी आश्रय स्थली में जब पशु–पक्षी को अपने प्राकृतिक आवास में स्वछन्द विचरण करते हुए देखते हैं तो उनके क्रिया–कलापों को अपने कैमरे में कैद करने को मजबूर हो जाते हैं।

आज दुनिया योग, ध्यान और आयुर्वेद के प्रति काफी उत्सुक एवं जिज्ञासु है। विगत कुछ वर्षों से दुनिया भर से हजारों योग उत्साही, अध्यात्मिक साधक और वेलनेस ट्रेवलर्स अपने योगाभ्यास को बेहतर करने, प्रसिद्ध योग कार्यक्रमों में भाग और योग प्रशिक्षण लेने के लिए भारत आ रहे हैं।

शीतकालीन गतिविधियों के लिए कश्मीर, लेह, लद्दाख और उत्तराखंड के कुछ पहाड़ी एवं पठारी क्षेत्र (देहरादून, मसूरी) जन्नत बनते जा रहे हैं।

समुद्र से जुड़ी गतिविधियों के लिए गोवा, अंडमान–निकोबार, दमन–दीव, लक्षद्वीप जैसे शांत वातावरण स्वच्छ समुद्री तट पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करने के लिए पर्याप्त हैं।

देश को विकसित राष्ट्र बनाने, अर्थव्यवस्था को मजबूत करने में पर्यटन की अहम भूमिका है, इस कारण सरकार ने पर्यटन को उद्योग का दर्जा प्रदान किया है।

आज केंद्र एवं राज्य सरकारें गंभीरता से पर्यटन नीति पर सामंजस्य बनाते हुए कार्य कर रही है। पर्यटन क्षेत्र को और अधिक आकर्षक बनाने के लिए बुनियादी ढांचे एवं सुविधाओं को बढ़ाया या अपग्रेड किया जा रहा है। केंद्र सरकार 'स्पेशल असिस्टेंट टू स्टेट फॉर कैपिटल इन्वेस्टमेंट' के तहत राज्य सरकारों को पर्यटन क्षेत्र के विकास एवं सौन्दर्यकरण के लिए राशि मुहैया करा रही है। निजी पूंजी निवेश को आकर्षित एवं निजी भागीदारी को प्रोत्साहित किया जा रहा है।

केंद्र एवं राज्य सरकारों की मंशा है कि पर्यटन का विकास इस तरह से किया जाये कि राजस्व में वृद्धि तो हो ही साथ ही साथ प्रत्यक्ष एवं

अप्रत्यक्ष रोजगार के अवसरों का भी सृजन हो।

बेहतर पर्यटन के लिए बेहतर कनेक्टिविटी पहली शर्त होती है। केंद्र सरकार आवागमन के तेज, सुगम एवं आरामदायक साधनों पर विशेष ध्यान दे रही है। बेहतर और किफायती विकल्प के रूप में रेल सेवा सबसे प्रमुख है। देश के कोने–कोने तक रेल पटरियों का जाल बिछाया जा रहा है। सरकारी आंकड़े बताते हैं कि वर्ष 2025 तक 65,584 किलोमीटर में पटरियां बिछ जाएँगी। रेल खंड में दुनिया का सबसे ऊँचा रेलवे पुल (चिनाव पुल), भारत का पहला केबल पर टिका रेलवे पुल (अजीरबाद पुल) दोनों कश्मीर राज्य में स्थित है। रामेश्वरम में देश के पहले वर्टिकल सी–लिफ्ट पुल (पंबन पुल) तकनीक एवं विरासत का अनूठा समागम है जो यात्रा को सुगम बना रही है, जो सैलानियों को काफी लुभा रही है। देश के कोने–कोने में बेहतर रेल कनेक्टिविटी के लिए रेल लिंक परियोजनाओं पर कार्य चल रहे हैं।

नई रैपिड रेल (वन्दे मेट्रो), वन्दे भारत स्लीपर, अमृत भारत रेल, नमो भारत वर्ष 2025 के अंत तक तथा कुछ निर्धारित मार्गो पर बुलेट ट्रेन 2027 तक पूर्ण रूप से चलने लगेगी। गन्तव्य स्थान के मुहाने तक यात्रियों एवं पर्यटकों को सहज पहूँच के लिए सरकारें सड़क मार्गो के विस्तारीकरण, मजबूतीकरण एवं चौड़ीकरण पर विशेष ध्यान दे रही है। वर्ष 2025 के अंत तक ग्यारह और नए राष्ट्रीय राजमार्ग और एक्सप्रेस–वे बन कर तैयार हो जायेंगे। भारत माला परियोजना के तहत राष्ट्रीय राजमार्ग एसेस कंट्रोल हाइवे, ग्रीन फील्ड हाइवे आदि बनाये जा रहे हैं।

एयर कनेक्टिविटी के लिए कई नई एयरपोर्ट उत्तर प्रदेश, ग्रेटर नोयडा, बिहार, असम आदि राज्यों में बनाये जा रहे हैं जो विश्वस्तरीय सुविधाओं से लैस होंगे। छोटे शहरों, पर्यटन स्थलों को भी विमान सेवा से जोड़ा जा रहा है। पर्वतीय एवं दुर्गम क्षेत्रों में हवाई सेवाओं का दायरा बढ़ा है।

नदी एवं समुद्री तट के किनारे अवस्थित दर्शनीय स्थलों को देखने, निहारने के लिए जलमार्गो पर जैसे सुरत से राजकोट, वाराणसी आदि स्थानों पर फेरी सर्विस, मुम्बई–गोवा–लक्षद्वीप के लिए लग्जरी क्रूज शिप चलाए जा रहे हैं।

दुर्गम पहाड़ी क्षेत्रों में स्थित तीर्थ स्थान जहाँ पहुंचना चुनौतीपूर्ण हो, रोप–वे परियोजनाएं संचालित की जा रहीं हैं। जैसे कि केदारनाथ और हेमकुंड साहिब जी, राजगीर, देवघर आदि। रोपवे से आरामदायक सफर के साथ समय की भी बचत होती है साथ ही ऊपर से नैसर्गिक सुन्दरता का विहंगम दृश्य भी देखने को मिलता है।

पर्यटकों के ज्यादा आने के अन्य कारणों में यहाँ शांति, भरोसेमंद सुरक्षा की स्थिति, नाइट लैंडिंग की सुविधा, ट्रांसपोर्ट सिस्टम में सुधार और रेल – सड़क का विस्तार एवं कनेक्टिविटी है। आज अंतर्राष्ट्रीय सीमाओं तक हमारा नेटवर्क बेहतर हो रहा है।

आवागमन के साधनों के अतिरिक्त जो दूसरी सबसे ज्यादा जरुरत पड़ती है, वो है प्रवास के दौरान रहने–खाने की सुविधा। यूँ तो हर बड़े और छोटे शहरों में बजट के अनुसार होटल, लॉज, गेस्ट हॉउस, धर्मशाला आदि उपलब्ध होते हैं। इसके अलावे केंद्र एवं सरकारें ऐतिहासिक महलों, इमारतों को होटलों में परिवर्तित कर उसके संरक्षण एवं विकास पर जोर दे रही है। इन होटलों में पांच सितारा सुविधाओं के साथ–साथ पर्यटन से संबंधित अन्य सुविधाओं को टैग कर एक छत के नीचे सारी सुविधाएँ उपलब्ध करा रही है। टूर एंड ट्रेवल एजेंसी को लाइसेंस दिए जा रहे हैं।

प्रतिवर्ष होने वाले उत्सव, मेले में आने वाले पर्यटकों को खास अनुभव देने के उद्देश्य से अस्थायी रूप से टेंट सिटी निर्माण करने में भी उद्यमियों को ऋण अथवा सब्सिडी देकर प्रोत्साहित किया जा रहा है। राजस्थान के रेतीले टीलों में भी टेंट सिटी कल्चर काफी लोकप्रिय हो रहा है। पर्यटक रात्रि पहर में खुले आसमान के नीचे राजस्थान के लोक नृत्य, संगीत का आनंद लेते हुए स्थानीय व्यंजनों का लुफ्त उठाते हैं।

सरहदी एवं दूरस्थ इलाकों में जहाँ कहीं होटल आदि की सुविधा न हो, स्थानीय लोगों को अपने घर को 'होम–स्टे' के रूप में संचालित करने के लिए लाइसेंस, ऋण, सब्सिडी दिए जा रहे हैं, इससे स्थानीय लोगों की पर्यटकों से अच्छी कमाई हो रही है।

इसके अतिरिक्त सशुल्क अतिथि (पेइंग गेस्ट) योजना शुरू करने वालों को लाइसेंस दिए जा रहे हैं, जहाँ पर्यटकों को घर जैसी सुविधा एवं माहौल मिल जाता है।

आज सरकारें पर्यटन के भिन्न–भिन्न सेक्टर को अलग–अलग परिक्षेत्र में बांटकर उसका विकास कर रही है – जैसे कि अध्यात्मिक जोन के लिए प्रयागराज के साथ वाराणसी, अयोध्या, विन्ध्याचल, चित्रकूट को शामिल किया गया है।

तीर्थ सेक्टर, चारधाम जोन में बद्रीनाथ, केदारनाथ, हरिद्वार और ऋषिकेश है। इसी चारधाम मार्ग पर अन्य कई तीर्थ स्थल जो कि पंच–प्रयाग के नाम से विख्यात हैं। ये हैं – विष्णु प्रयाग, नन्द प्रयाग, कर्ण प्रयाग, रूद्र प्रयाग तथा देव प्रयाग।

बुद्ध सर्किट – सारनाथ, गया, बोधगया, राजगीर।

भारत में धर्मार्थ पर्यटन काफी तेजी से बढ़ रहा है। देश के कई हिस्सों में मौजूद हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, बौद्ध, जैन श्रद्धालुओं के महत्वपूर्ण तीर्थ और पर्यटन स्थलों की पूरी एक श्रृंखला है।

भारत के घरेलु पर्यटन का 60% हिस्सा तीर्थाटन ही होता है।

एक अनुमान के अनुसार वर्ष 2024 तक धार्मिक पर्यटन 14 अरब डॉलर का कारोबार कर चुकी है। वर्ष 2032 तक इसके 40 अरब डॉलर तक पहुँचने की संभावना है। लेकिन इससे बड़ी बात यह है कि वर्ष 2030 तक यहाँ 14 करोड़ लोगों के लिए प्रत्यक्ष–अप्रत्यक्ष रोजगार पैदा होने की संभावना दिख रही है।

वार्षिक मेले और महोत्सव आयोजन पर्यटकों के आकर्षण के केंद्र होते हैं। हिमाचल के कुल्लू में दस दिनों तक चलने वाला दशहरे का मेला विश्वविख्यात है जिसमें काफी संख्या में देशी–विदेशी पर्यटक शिरकत करते हैं।

अयोध्या दीपोत्सव में 25 लाख से अधिक दीप प्रज्वलित कराकर गिनीज बुक ऑफ़ वर्ल्ड रिकार्ड कायम किया गया। पुष्कर मेला (राजस्थान), काशी की गंगा आरती, मकर संक्रांति में पतंगबाजी, बिहार का सोनपुर मेला आदि देखने भी विदेशी मेहमान आते हैं।

हाल–फिलहाल उत्तर प्रदेश में संपन्न हुए महाकुंभ मेले के सफल आयोजन ने पर्यटन क्षेत्र को एक नई दिशा दी है। देश–विदेश के करोड़ लोगों ने इसमें शिरकत किया। कई नामचीन हस्तियाँ जैसे कि एप्पल के संस्थापक स्टीव जॉब्स की पत्नी लॉरेन जॉब्स भी प्रवास कर चुकी हैं। इस आयोजन से सरकार को जहाँ करोड़ों रुपयों को राजस्व प्राप्त हुआ। वहीं लोगों को प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रोजगार भी मिला। पर्यटकों की बड़ी आमद से ट्रांसपोर्ट, होर्टीकल्चर, हैंडलूम और हस्तशिल्प और होटल उद्योग को सबसे ज्यादा फायदा पहुँचा। शिल्पियों, कारीगरों के बाजार एवं हुनर को भी अंतर्राष्ट्रीय ख्याति दिलाने में सहायक सिद्ध हुई है।

विदेशी पर्यटकों को हम अतिथि देवो भव: के रूप में देखते हैं। इस कारण उनका सम्मान एवं सत्कार होना चाहिए। सरकार उनको विशेष दर्जा प्रदान करती है। प्रवास के दौरान संवेदनशीलता के साथ–साथ संरक्षण एवं सुरक्षा होती है। संवेदनशील जगहों पर भ्रमण के लिए ई–पास निर्गत होते हैं ताकि उन्हें कोई असुविधा न हो।

पर्यटन उधोग के विकास एवं प्रोत्साहन एवं देश की एकता एवं अखंडता को मजबूत करने में मददगार सिद्ध होने हेतु भारत सरकार अपने करोड़ों कर्मचारियों को सपरिवार भारत भ्रमण के लिए अवकाश यात्रा रियायत की सुविधा प्रदान करती है तथा प्रवास के लिए उचित शुल्क पर गेस्ट हॉउस, होलीडे होम की सुविधा मुहैया करती है।

आधारभूत सुधारों के अतिरिक्त कुछ अन्य सुधारों पर भी ध्यान दिया जा रहा है जो पर्यटन क्षेत्र में अपनी सार्थकता सिद्ध कर रहे हैं।

आज सोशल मिडिया का युग है। पर्यटन से जुड़ी सभी जानकारियां ऑनलाइन उपलब्ध होती हैं। वाटर शो, लेजर शो, लाइट एवं साउंड शो, एडवेंचर स्पोर्ट्स, प्रतिवर्ष आयोजित होने वाले उत्सव, मेले आदि कार्यक्रम के विवरण ऑनलाइन डिस्प्ले किए जाते हैं ताकि इच्छुक पर्यटक ससमय सहभागी बन सकें।

खनिज निकालने (माइनिंग), उसका प्रोसेस और उनसे धातुएं और अन्य उत्पाद बनाने की पूरी प्रक्रिया को बकायदा पर्यटकों के लिए दिलचस्प बनाया जा रहा है। चूँकि पर्यटक जिज्ञासु, खोजी एवं रोमांचित होते हैं। कुछ न्यूनतम शुल्क लेकर प्रक्रिया को प्रदर्शित किया जाता है। मसलन टी–गार्डन, बाँस, केला, सेब, रेशम, तसर, नारियल आदि स्थानीय उत्पाद पर आधारित प्रोसेसिंग यूनिट देश और दुनिया के दुसरे हिस्सों में इसके प्रत्यक्ष उदाहरण हैं।

इससे पर्यटक उत्पादों से परिचित तो होते ही हैं। इसके गुणों से प्रभावित होकर खरीद भी करते हैं। इससे स्थानीय उत्पाद को बेहतर बाजार एवं प्रसिद्धि भी मिलती है।

पर्यटन प्राचीन समृद्ध भारतीय परम्परा एवं विरासत को वैश्विक पटल पर लाने में काफी सहायक सिद्ध होगी और इसके विकास की असीम सम्भावनाएं हैं।

सरकारी लेखांकन पद्धति का भविष्य

(फ्यूचर ऑफ़ गवर्नमेंट एकाउंटिंग सिस्टम)

श्री हिमांशु पाण्डेय
सहायक लेखा अधिकारी

सरकारी लेखांकन पद्धति भविष्य में पारदर्शिता, जवाबदेही और दक्षता की ओर महत्वपूर्ण बदलावों से गुजरेगी। इसका भविष्य अधिक पारदर्शी, तकनीकी–संचालित और व्यापक वित्तीय जानकारी प्रदान करने वाला होगा, जिसका मुख्य उद्देश्य सार्वजनिक धन का कुशल और जवाबदेह प्रबंधन सुनिश्चित करना है। आने वाले समय में दुनिया भर के देशों में सरकारी खातों में निम्नलिखित बदलाव देखने को मिल सकते हैं।

उपार्जन लेखांकन (एकुअल एकाउंटिंग) की ओर बदलाव

व्यापक वित्तीय तस्वीर: कई सरकारें नकद–आधारित लेखांकन (केवल नकदी के आदान–प्रदान होने पर लेनदेन रिकॉर्ड करना) से उपार्जन–आधारित लेखांकन की ओर बढ़ रही है। उपार्जन लेखांकन सरकार की वित्तीय स्थिति की संपूर्ण तस्वीर प्रदान करता है, दुनिया में राजस्व और व्यय को तब मान्यता दी जाती है जब वे अर्जित या किए जाते हैं, भले ही नकदी का प्रवाह कभी भी हो। इसमें पेंशन जैसी दीर्घकालिक देनदारियां और बुनियादी ढांचे जैसी संपत्तियां शामिल है।

बेहतर वित्तीय प्रबंधन : उत्सर्जन लेखांकन बेहतर बजट, वित्तीय योजना तथा ऋण और परिसंपत्तियों के प्रबंधन में मदद करता है। यह पेंशन देनदारियों को संबोधित करने और दीर्घकालिक वित्तीय दायित्वों को अधिक पारदर्शी बनाकर अंतर–पीढ़ीगत इक्विटी को बढ़ावा देने में भी सहायक है।

वैश्विक रुझान: यह अनुमान लगाया गया है कि दुनिया भर में सरकारों का एक महत्वपूर्ण उपार्जन आधार पर रिपोर्ट करेगा। अंतर्राष्ट्रीय सार्वजनिक क्षेत्र लेखांकन मानक (APSAS) सार्वजनिक क्षेत्र में उच्च गुणवत्ता वाली वित्तीय रिपोर्टिंग के लिए एक ढांचा प्रदान करके इस बदलाव में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं।

प्रौद्योगिकी और ए.आई. को अधिक अपनाना

स्वचालन: डेटा प्रविष्टि, समाधान और रिपोर्ट तैयार करने जैसे दोहराव वाले कार्यो को प्रौद्योगिकी का उपयोग करके स्वचालित किया जा रहा है। यह मानवीय त्रुटियों को कम करता है और दक्षता बढ़ाता है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता (ए.आई.) : बजट के लिए धोखाधड़ी का पता लगाने, भविष्य में किये जाने वाले विश्लेषण और वित्तीय डेटा से गहरी जानकारी प्राप्त करने जैसे कार्यो के लिए ए.आई. को लागू किया जा रहा है। ए.आई. विसंगतियों की पहचान करने और रुझानों की भविष्यवाणी करने के लिए बड़े डेटासेट को संसाधित कर सकता है, जिससे बेहतर निर्णय लेने में मदद मिलती है।

क्लाउड–आधारित समाधान: सरकारें मापनीयता, लचीलापन और बेहतर डेटा सुरक्षा के लिए क्लाउड–आधारित लेखांकन प्रणालियों की ओर बढ़ रही है, जिससे वास्तविक समय में डेटा तक पहुंच और संभव हो पाता है।

बड़ी हुई पारदर्शिता और जवाबदेही

खुली डेटा पहल: सरकारें अधिक विस्तृत वित्तीय रिपोर्ट ऑनलाइन प्रकाशित कर रही है, पारदर्शिता को बढ़ावा दे रही है और नागरिकों, व्यवसायियों और शोधकर्ताओं द्वारा सार्वजनिक खर्च की अधिक जांच की अनुमति दे रही है।

प्रदर्शन बजटिंग: वित्तीय परिणामों की रिपोर्टिंग के साथ–साथ सार्वजनिक निवेशों के मूल्य और प्रभाव को प्रदर्शित करने के लिए प्रदर्शन मेट्रिक्स पर भी अधिक जोर दिया जा रहा है। प्रदर्शन–धारित बजट, जो वित्तीय संसाधनों को मापने योग्य परिणामों के साथ संरेखित करता है, उसका अधिक प्रयोग किया जा रहा है।

स्थिरता रिपोर्टिंग पर ध्यान

पर्यावरण, सामाजिक और शामन (ई.एस.जी.) कारक: पर्यावरण संरक्षण के बारे में बढ़ती जागरूकता के साथ सरकारी लेखांकन में स्थिरता रिपोर्टिंग अधिक महत्वपूर्ण होती जा रही है। लेखाकारों को कार्बन फुटप्रिंट कटौती और सामाजिक जिम्मेदारी जैसे ई.एस.जी. कारकों से संबंधित रिपोर्टिंग मानकों में विशेषज्ञता विकसित करने की आवश्यकता होगी।

कार्यान्वयन में चुनौतियाँ

नियामक अनुपालन: सरकारी एजेंसियां अक्सर विभिन्न लेखांकन मानकों वाले नियामकों में काम करती हैं, जिससे सामंजस्य स्थापित करना चुनौतीपूर्ण हो जाता है।

कानूनी वाधाएँ: मौजूदा कानून पुराने होकर अप्रासंगिक हो गए हैं, जिससे बदलाव के दौरान बाधाएँ आ सकती हैं।

कौशल विकास: लेखाकारों और वित्तीय अधिकारियों को डेटा विश्लेषण और ए.आई. जैसी नई तकनीकों के उपयोग सहित अपने कौशल सेट को विकसित करने की आवश्यकता होगी। अत: उनको सतत शिक्षण और प्रशिक्षण देना आवश्यक होगा।

संक्षेप में, दुनिया भर में सरकारी लेखांकन का भविष्य अधिक पारदर्शी कुशल और तकनीकी रूप से संचालित प्रथाओं की ओर इशारा करता है, जिसमें सार्वजनिक वित्त का व्यापक दृष्टिकोण प्रदान करने और जवाबदेही सुनिश्चित करने पर जोर दिया जाता है। उपार्जन लेखांकन में बदलाव और ए.आई. का एकीकरण इन परिवर्तनों के केंद्र में है।

उपार्जन लेखांकन पद्धति को दुनिया भर के कई देशों ने अपनाया है। सटीक संख्या और अपनाने का स्तर अलग–अलग हो सकता है, लेकिन यहाँ कुछ प्रमुख देश और क्षेत्र दिए गए हैं जिन्होंने इसे अपनाया है या इस प्रक्रिया में हैं :

पूर्ण रूप से अपनाने वाले या व्यापक रूप से उपयोग करने वाले देश: ऑस्ट्रेलिया, कनाडा, यूनाइटेड किंगडम, न्यूजीलैंड, फ्रांस, स्वीडन, स्पेन, एस्टोनिया, लिथुआनिया, स्लोवाकिया, संयुक्त राज्य अमेरिका (संघीय स्तर पर)

APSAS (अंतर्राष्ट्रीय सार्वजनिक क्षेत्र लेखांकन मानक) को अपनाने या उसे संदर्भ के रूप में उपयोग करने वाले देश: कई अन्य देश भी आई.पी.एस.ए.एस. को सीधे अपना रहे हैं या अप्रत्यक्ष रूप से उपयोग कर रहे है, अथवा अपने राष्ट्रीय मानकों के लिए एक संदर्भ बिंदु के रूप में उपयोग कर रहे हैं। इनमें शामिल हैं: चिली, कोलंबिया, ब्राजील, पनामा, कोस्टा रिका, इंडोनेशिया, मलेशिया, चीन, कम्बोडिया, वियतनाम, नाइजीरिया, घाना, तंजानिया, केन्या, यूगांडा, रवांडा, बुरुंडी

यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि कई देश धीरे–धीरे इस पद्धति की ओर बढ़ रहे हैं, और कुछ आंशिक रूप से उपार्जन लेखांकन का उपयोग कर सकते हैं। ओ.ई.सी.डी. (आर्थिक सहयोग और विकास संगठन) के लगभग तीन–चौथाई सदस्य देश अपने वार्षिक वित्तीय रिपोर्टों के लिए उपार्जन लेखांकन का उपयोग करते हैं।

यह सूची संपूर्ण नहीं है, लेकिन यह दर्शाता है कि दुनिया भर में सरकारी लेखांकन में अधिक पारदर्शिता और बेहतर वित्तीय प्रबंधन की दिशा में एक महत्वपूर्ण रुझान है।

उपार्जन लेखांकन पद्धति को संयुक्त राष्ट्र (UN), विश्व बैंक, अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (IMF) और ऐसी ही प्रतिष्ठित संस्थाओं का अनुमोदन और समर्थन प्राप्त है।

संयुक्त राष्ट्र (UN) अपने विभिन्न अंगों और एजेंसियों में वित्तीय रिपोर्टिंग के लिए उपार्जन लेखांकन को बढ़ावा देता है और कुछ हद तक इसका उपयोग भी करता है। यह पारदर्शिता और जवाबदेही बढ़ाने के प्रयासों का हिस्सा है।

विश्व बैंक: विश्व बैंक सक्रिय रूप से सार्वजनिक क्षेत्र में उपार्जन लेखांकन को अपनाने का समर्थन करता है। उनका मानना है कि यह सरकारों को अपनी वित्तीय स्थिति और दायित्वों का अधिक व्यापक दृष्टिकोण प्रदान करता है, जिससे बेहतर वित्तीय प्रबंधन और निर्णय लेने में मदद मिलती है। विश्व बैंक इस विषय पर रिपोर्ट और मार्गदर्शन भी प्रकाशित करता है।

अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (IMF): आई.एम.एफ. भी उपार्जन लेखांकन के महत्व को पहचानता है, खासकर व्यापक आर्थिक विश्लेषण और राजकोषीय स्थिरता के आकलन के लिए उनका 'गवर्नमेंट फाइनेंस स्टैटिस्टिक्स मैनुअल' (GFSM), जो सरकारी वित्तीय आंकड़ों के संग्रह और प्रसार के लिए एक ढांचा है, उपार्जन लेखांकन अवधारणा पर आधारित है।

इसके अलावा, अंतर्राष्ट्रीय सार्वजनिक क्षेत्र लेखांकन मानक बोर्ड (APSASB), जो सार्वजनिक क्षेत्र की संस्थाओं के लिए उच्च गुणवत्ता वाले लेखांकन मानक विकसित करता है, उपार्जन लेखांकन पर आधारित मानकों का एक पूरा सेट जारी करता है। आई.पी.एस.ए.एस. को दुनिया भर की कई सरकारें अपना रही है या अपने राष्ट्रीय मानकों के लिए एक आधार के रूप में उपयोग कर रही है। इन मानकों को विकसित करने और बढ़ाना देने में भी संयुक्त राष्ट्र, विश्व बैंक और आई.एम.एफ. जैसी संस्थाओं का समर्थन रहता है।

संक्षेप में, उपार्जन लेखांकन को इन प्रमुख अंतर्राष्ट्रीय संस्थानों से मजबूत समर्थन प्राप्त है क्योंकि यह सार्वजनिक वित्तीय प्रबंधन में पारदर्शिता, जवाबदेही और दक्षता में सुधार करने के लिए एक महत्वपूर्ण उपकरण माना जाता है।

भारत में भी निकट भविष्य में उपार्जन लेखांकन पद्धति के अपनाए जाने की संभावना है। इस दिशा में पहले से ही कई कदम उठाए गए हैं:

सिफारिश: बारहवें वित्त आयोग ने केंद्र और राज्य सरकारों दोनों के लिए उपार्जन लेखांकन अपनाने की सिफारिश की थी, जिसे सरकार ने सैद्धांतिक रूप से स्वीकार कर लिया है।

सरकारी प्रयास: भारत सरकार के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक (CAG) के कार्यालय के तहत सरकारी लेखांकन मानक सलाहकार बोर्ड (GASAB) इस दिशा में काम कर रहा है और उपार्जन लेखांकन में परिवर्तन के लिए एक विस्तृत रोडमैप और परिचालन ढांचा तैयार कर रहा है।

पायलट परियोजनाएँ: केंद्र सरकार के कई संगठनों जैसे रेलवे और डाक विभाग ने उपार्जन लेखांकन की ओर बढ़ने के लिए पायलट अध्ययन भी किए हैं।

राज्य स्तर पर स्वीकृति: कई राज्य सरकारों ने भी सैद्धांतिक रूप से उपार्जन लेखांकन अपनाने की सहमति दी है।

शहरी स्थानीय निकाय: सर्वोच्च न्यायालय ने भी राय दी है कि स्थानीय निकायों के खाते उपार्जन प्रारूप में होने चाहिए, जिसके बाद कई नगर निगमों ने इस प्रारूप में खातों का रखरखाव शुरू कर दिया है।

GASAB ने 'भारतीय सरकारी वित्तीय रिपोर्टिंग मानक' (AGFRS) भी जारी किए हैं, जो उपार्जन आधारित लेखांकन प्रणाली पर आधारित है। वे शुरू में पायलट अध्ययनों के लिए अनुशंसित हैं और भारत सरकार द्वारा अधिसूचना की तारीख से अनिवार्य हो जाएंगे।

इसलिए, यह कहना सही होगा कि भारत धीरे–धीरे लेकिन निश्चित रूप से सरकारी लेखांकन में उपार्जन पद्धति को अपनाने की दिशा में बढ रहा है। हालांकि, इसे पूरी तरह से लागू होने में कुछ समय लग सकता है, लेकिन निकट भविष्य में इस दिशा में और प्रगति देखने को मिल सकती है।

भारत में उपार्जन लेखांकन लागू होने पर ए.जी. ऑफिस (महालेखाकार का कार्यालय) की कार्यशैली में कई महत्वपूर्ण बदलाव आ सकते हैं।

1. लेखांकन प्रक्रिया में बदलाव:

वर्तमान में, ए.जी. ऑफिस मुख्य रूप से नकद आधारित लेखांकन पर काम करता है, जहाँ लेनदेन तभी दर्ज किए जाते हैं जब नकदी का आदान–प्रदान होता है। उपार्जन लेखांकन लागू होने पर, लेनदेन तब दर्ज किए जाएंगे जब वे घटित होते हैं, भले ही नकदी का आदान–प्रदान बाद में हो।

इससे राजस्व और व्यय की पहचान के समय में बदलाव आएगा, जिसके लिए ए.जी. ऑफिस को नई प्रक्रियाओं और प्रणालियों को अपनाना होगा।

2. वित्तीय विवरणों की प्रकृति में बदलाव:

उपार्जन लेखांकन के तहत, वित्तीय विवरण अधिक व्यापक होंगे। बैलेंस शीट में अब परिसंपत्तियां (जैसे बुनियादी ढांचा) और दीर्घकालिक देनदारियां (जैसे पेंशन दायित्व) भी शामिल होंगी, जो पहले नकद आधारित प्रणाली में स्पष्ट रूप से दिखाई नहीं देती थी।

आय और व्यय विवरण भी अलग दिखेंगे, जिसमें अर्जित राजस्व और उपगत व्यय शामिल होंगे, भले ही उसका नकदी प्रवाह उस अवधि में न हुआ हो।

3. डेटा संग्रह और प्रबंधन में वृद्धि:

उपार्जन लेखांकन के लिए अधिक विस्तृत डेटा की आवश्यकता होगी, जिसमें गैर–नकदी लेनदेन, मूल्य ह्रास, प्रावधान आदि शामिल है।

ए.जी. ऑफिस को इस अतिरिक्त डेटा को एकत्र करने, रिकॉर्ड करने और प्रबंधित करने के लिए अपनी प्रणालियों को उन्नत करना होगा।

4. नई विशेषज्ञता की आवश्यकता:

ए.जी. ऑफिस के कर्मचारियों को उपार्जन लेखांकन सिद्धांतों और प्रक्रियाओं को समझने और लागू करने के लिए प्रशिक्षित किया जाना होगा।

परिसंपत्तियों का मूल्यांकन, देनदारियों का आकलन और वित्तीय विवरणों की तैयारी जैसे क्षेत्रों में नई विशेषज्ञता की आवश्यकता हो सकती है।

5. लेखापरीक्षा की प्रक्रिया में बदलाव:

लेखापरीक्षा अब केवल नकदी प्रवाह की जांच तक सीमित नहीं रहेगी, बल्कि इसमें परिसंपत्तियों, देनदारियों और गैर–नकदी लेनदेन की भी जांच शामिल होगी।

ए.जी. ऑफिस के लेखापरीक्षकों को उपार्जन आधारित वित्तीय विवरणों की लेखापरीक्षा करने के लिए नई तकनीकों और ज्ञान की आवश्यकता होगी।

6. रिपोर्टिंग में बदलाव:

ए.जी. ऑफिस को सरकार को अधिक व्यापक और विस्तृत वित्तीय रिपोर्ट प्रस्तुत करनी होगी, जिसमें सरकार की वित्तीय स्थिति और प्रदर्शन का अधिक सटीक चित्र होगा।

संक्षेप में, भारत में उपार्जन लेखांकन के लागू होने से ए.जी. ऑफिस की कार्यशैली में व्यापक बदलाव आएंगे, जिसमें लेखांकन प्रक्रियाओं, वित्तीय विवरणों की प्रकृति, डेटा प्रबंधन, आवश्यक विशेषज्ञता और लेखापरीक्षा की प्रक्रिया में परिवर्तन शामिल हैं। इसके लिए ए.जी. ऑफिस को अपनी क्षमता निर्माण और तकनीकी ढांचे को मजबूत करने की आवश्यकता होगी।

SAS (Subordinate Accounts Service) परीक्षा के नए सिलेबस में भी सरकारी लेखांकन से संबंधित टॉपिक्स शामिल किए गए हैं, जो निम्न है:–

लेखा एवं लेखा परीक्षा के सामान्य सिद्धान्त तथा क्रियाविधि (सशस्त्र सेना के सामान्य संगठन सहित): इस पेपर में लेखांकन के सामान्य सिद्धांत और सरकारी लेखांकन की प्रक्रियाएं शामिल होंगी।

PC 84: वित्तीय नियमावली, सरकारी लेखाओं/लेखापरीक्षा एवं निर्माण लेखा: यह पेपर सरकारी वित्तीय नियमों, लेखांकन और लेखापरीक्षा के सिद्धांतों पर केंद्रित होगा।

यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि सिलेबस समय–समय पर बदल सकता है, इसलिए, नवीनतम और विस्तृत जानकारी के लिए CAG की आधिकारिक वेबसाइट देखना सबसे अच्छा होगा।

बेतला की यात्रा – एक संस्मरण

श्रीमती असाई माई पाड़ेया
वरिष्ठ लेखा अधिकारी

बात उन दिनों की है जब मैं अपने स्नातक पाठ्यक्रम के अंतिम वर्ष में थी। अंतिम वर्ष में प्रतिष्ठा के चार पेपर होते थे। मेरा प्रतिष्ठा का विषय वनस्पति शास्त्र था। जीव–जन्तुओं से ज्यादा मुझे पेड़–पौधों से लगाव था, ऐसा कहा जा सकता है। मेरे साथ करीबन बारह लड़कियां इस विषय में ऑनर्स कर रही थी।

पाठ्यक्रम के अंतिम वर्ष हमें शैक्षणिक भ्रमण के लिए लातेहार जिला स्थित बेतला राष्ट्रीय उद्यान के वन्य जीव अभ्यारण ले जाने का कार्यक्रम बना। चाईबासा से रांची की दूरी करीब 125 किलोमीटर तथा रांची से डाल्टनगंज की दूरी 165 किलोमीटर है। हम सभी बारह लड़कियां, हमारी विभागाध्यक्षा श्रीमती अपराजिता फौजदार गुप्ता, अनुदेशिका सुश्री कृष्णा के साथ महाविद्यालय के बस चालक एवं खलासी इस यात्रा का हिस्सा थे। अनुदेशिका कृष्णा दी ने हमें सूचित किया कि हम महाविद्यालय के बस से सुबह आठ बजे महाविद्यालय परिसर से रवाना होंगे, सभी समय पर आ जाएँ।

मैं चक्रधरपुर से चाईबासा, बस से रोजाना आना–जाना कर के कॉलेज की पढ़ाई कर रही थी। हमारी एक अन्य प्राध्यापिका सुश्री मनजीत कौर, जो उस वक्त महाविद्यालय छात्रावास की अधीक्षक भी थीं, ने मुझे सलाह दिया कि एक दिन पहले मैं रात्रि विश्राम के लिए महाविद्यालय छात्रावास में आ जाऊं ताकि अगले दिन कोई परेशानी न हो।

स्कूली दिनों से ही मुझे छात्रावास में रहने की बड़ी ललक थी। दिन–रात चौबीसों घंटे दोस्तों के साथ, वाह! क्या बात है! बल्ले–बल्ले! वाली अनुभूति थी। चलो एक दिन ही सही छात्रावास में रहने को तो मिलेगा यही सोचकर कर मैं एक दिन पहले छात्रावास आ गई।

चूँकि हमारे विभाग की हीं प्राध्यापिका छात्रावास अधीक्षक थी। अतः छात्रावास वार्डन को खबर दे दी गई थी कि एक गेस्ट छात्रावास में रुकने वाली है। छात्रावास में एक कमरे में छः लड़कियां रहती थीं। मैं अपनी दोस्त विश्वासी कंडीर के कमरे में रुकी। रात के खाने में मेरे लिए डाइनिंग हॉल में विशेष इंतजाम था। अपनी आवभगत देख मैं गदगद थी।

सुबह नहा–धोकर हम तैयार हो गए, छात्रावास से अंजू शर्मा, जयश्री पात्रा, शुभ्रा एवं चाईबासा से मधु, कविता सिन्हा, ब्यूटी महापात्रा, शोभा, भूभू दत्ता, सुषमा पोद्दार और अन्य थीं। मुझे अपने सहपाठियों के साथ दो–तीन दिनों के लिए घर से बाहर जाना, बड़ा ही आनंददायक अनुभव होने वाला था।

स्कूली दिनों में मेरी एक खास सहेली हुआ करती थी नाम था मीना विश्वकर्मा। मैं और मीना एक–दूसरे की पर्याय हुआ करती थी। वह दसवीं के बाद चक्रधरपुर से ही आइ०ए० और बी०ए० की पढाई की। इसी दरम्यान उसके पिताजी, जो रेलवे में टी.टी.ई. थे, रिटायर हो गये। वे विलासपुर, मध्यप्रदेश (अब छत्तीसगढ़ में है) शिफ्ट हो गए। उसकी शादी भी हो गई, और हमारी दोस्ती छूट गयी। हम घंटों गप लड़ा सकते थे, हमारे बीच समय रुक जाया करती थी, समय का पता ही नहीं चलता था। कॉलेज आने पर मुझे हमेशा उसकी कमी महसूस होती। समय के साथ धीरे– धीरे मैं भी अपने नये दोस्तों में मशगुल हो गयी।

छात्रावास के गेट के पास ही कॉलेज बस खड़ी की गई थी। हम सभी अपने सामानों के साथ बस में दाखिल हो गये। कृष्णा दी एक सुराही में ठंढा पानी भी लेकर आयी थी। कुछ कार्टूनों में खाने के पैकेट थे। आठ बजे तक सभी पहुँच चुके थे। मैं भी अपना लगेज बस में चढवा कर जयश्री के साथ सीट पर बैठ गयी। सवा आठ बजे हमारी बस चाईबासा से अपने गन्तव्य को चल पड़ी। सुबह की ठंढी हवा का आनंद लेते हुए हम आगे बढ़ रहे थे। नौ बजे हमें नाश्ता का पैकेट मिला, चलती बस में ही हमने नाश्ता किया।

दोपहर के एक बजे हम रांची पहुंच चुके थे, रांची कचहरी रोड स्थित किसी होटल में हमारा लंच हुआ। लंच में बटर नान और मटर पनीर की सब्जी थी। मेरा पहली बार बटर नान और पनीर से पाला पड़ा था। छोटे शहरों या कस्बों में नान और पनीर जैसी आधुनिक व्यंजन विशेष मांग पर ही उपलब्ध हो पाती है। ढाई बजे हम बेतला के लिए रवाना हुए और साढ़े पांच बजे हम बेतला स्थित गेस्ट हाउस पहुंचे। हमारी विभागाध्यक्षा ने गेस्ट हॉउस के कार्यालय में कुछ औपचारिकताएँ पूरी की और हमें कुछ देर में ही गेस्ट हॉउस के गार्ड ने कमरे का ताला खोलकर कमरा दिखलाया। मैं, जयश्री, शोभा और भूभू एक कमरे में आ गए। हमें आधे घंटे में फ्रेश होकर कैंटीन आने को कहा गया। वहां चाय–नाश्ते के बाद हम राष्ट्रीय उद्यान के संध्याकालीन भ्रमण के लिये कॉलेज बस से गए। कैंटीन में ही रात्रि भोजन का इंतजाम था। एकाध घंटे भ्रमण के बाद रात्रि भोजन कर हम सभी अपने–अपने कमरे में विश्राम करने चले गए। दिन भर के सफर के थकान के कारण हमें जल्दी ही नींद आ गई।

अगले दिन हमें नमूना संग्रह करने के लिए फिर से वन्य जीव अभ्यारण भ्रमण के लिए जाना था। हम सभी नहा–धोकर, तैयार होकर फिर से कैंटीन नाश्ता करने गए, फिर बस से अभ्यारण भ्रमण के लिए निकले। फिर से हमारी मैडम टिकट वगैरह हेतु औपचारिकताएं पूरी की और एक गाइड हमारे साथ हो लिया। हम अपने साथ पानी की बोतलें, नमूना संग्रह के लिए कुछ पोलीथिन के थैलें और कुछ लड़कियां फोटो खींचने के लिए कैमरा लायीं थीं। हम बस से ही नजारा देख रहे थे। मार्च का महीना था, चारों तरफ पलाश

के फूलों की बहार थी, महुआ के फूलों की महक वातावरण को मदहोश करने के लिए काफी थी। जंगल में पेड़ पर नई कोपलें आई थी। अत: पत्तों की हरियाली पर रंग–बिरंगी छटा हावी थी। गाइड के मार्गदर्शन में बस चल रही थी। गाइड ने हमें कुछ जंगली जानवरों से रु–ब–रु करवाया। यहाँ हमें बन्दर, चीतल, बाईसन, हिरन आदि देखने को मिले।

यह बेतला राष्ट्रीय उद्यान झारखंड के लातेहार जिला के 226 स्क्वायर किलोमीटर क्षेत्रफल में फैला हुआ है। यहाँ मेदिनीराय का पुराना किला खंडहर के रुप में स्थित है।

हमने राजा मेदिनीराय के पुराने किले, जो कि अब खंडहर में तब्दील हो चूका है, के आस–पास उगे पौधों को कुछ अलग तरह के नमूने के रूप में संग्रह किया। हमें खास हिदायत मिली थी कि ऐसे नमूने इकठ्ठा किया जाये जिसमें पत्ते, फूल एवं फल स्पष्ट रूप से हों। खण्डहर के पास स्थित चट्टानों पर बैठकर हमने ग्रुप फोटो लिया। इसके बाद हम एक छोटी बहती नाले या नदी के पास आये और बहती नदी के ठंडे पानी से अपने आपको तरो–ताजा किया। हाथ–पांव धोये, अपने मुख–मंडल पर पानी के छींटे मारे। कुछ जलीय पौधे और आसपास के नमूने इकठ्ठे किये। हममें से किसी को कोई खास पौधा मिलता तो हम इसे लेकर अपनी मैडम को दिखलाते और उनकी सहमति मिलते ही हम उसे नमूना के रूप में सहेज लेते। नमूना संग्रह में बड़ा आनंद आया। दोपहर होते ही धूप तेज होने लगी, हम बस में बैठकर अभ्यारण्य से बाहर आ गये।

अभ्यारण्य के बाहर एक संग्रहालय भी था जहाँ हमने तितलियों के संग्रह का अवलोकन किया। अभ्यारण्य के संबंध में और कुछ अन्य जानकारियाँ भी थी। कुछ हमने भी नोट किये। वहीं कैंटीन में हमारा लंच हुआ और हम वापसी के लिए अपने सामानों को फिर से बस में लाद लिये।

वापसी में हमारी बस खूंटी के आगे मुरहू में खराब हो गई। ड्राइवर और खलासी ने मिलकर बस ठीक करने की बहुत कोशिश की, परन्तु ठीक नहीं हो पाई। तय किया गया कि रात रांची में गुजारा जाय, सुबह बस ठीक करवाकर चाईबासा के लिए प्रस्थान किया जायगा। हम वापस रांची आये और मैडम ने मेन रोड स्थित माँ आनंदमयी आश्रम में रात्रि विश्राम का इंतजाम किया। उस रात हमने पूड़ी–सब्जी खाई और आश्रम के बड़े से हॉल में बिछे दरी पर हमने रात बितायी। रांची में ड्राइवर ने बस ठीक करवाई और हम सुबह चाईबासा के लिए निकल पड़े। दस बजे के करीब मैं चक्रधरपुर में उतर गई और बस आगे निकल गई।

इस शैक्षणिक भ्रमण के दौरान हमने अच्छे–अच्छे नमूने संग्रह किये थे। चार–पांच पौधों की मैंने बढ़िया पहचान की थी, जिसकी शाबासी भी मिली। मैडम के साथ बैठकर ग्रुप फोटो खिंचवाए। इसकी मुझे बड़ी प्रसन्नता है। इस पूरी यात्रा में हमें कहीं भी किसी दिक्कत का सामना नहीं करना पड़ा। हमारी मैडम ने पूरी सुझ–बुझ के साथ इस यात्रा को सफल बनाया।

आज भी स्कूल और कॉलेज के दिनों को याद करती हूँ तो मन बड़ा प्रफुल्लित हो उठता है।

राग ठेकेदारी

श्री लाल शुक्ल की 'रागदरबारी' से प्रेरित यह रचना–

श्री पुरुषोत्तम दास
प्रमंडलीय लेखा पदाधिकारी, ग्रेड–।।
ग्रामीण विकास विशेष प्रमंडल, जामताड़ा

चंपापुर डिस्ट्रिक्ट बोर्ड से जल–मीनार का टेंडर निकला हुआ था और इसको लेकर ठेकेदारों में सरगर्मी बढ़गई थी। चंपापुर में एक खास बात थी कि डिस्ट्रिक्ट बोर्ड से कोई भी काम का टेंडर निकला हो, वहाँ के लोकल ठेकेदार ही हावी रहते थे और बाहरी ठेकेदार को घुसने नहीं देने के लिए विख्यात थे। टेंडर आपस में मिल–बांट कर लेने और मिलकर खा लेने के लिए कमिटी बना ली गई थी। कमिटी के लोग आपस में सैमी–डेमी कर के टेंडर डालते और मैनेज कर लेते थे। किसी बाहरी का झंझट नहीं रखते थे और इस तरह आपसी रजामंदी से सबकुछ सही चल रहा था। सबको उसकी बारी और क्षमता के अनुसार काम मिल जाता। उसी में न चाहे तो भी हाथ मलाई में रहता। कमिटी रखने का एक फायदा यह था कि कमिटी के डर से बाहर का कोई ठेकेदार टेंडर डालना तो दूर, टेंडर का पेपर तक नहीं खरीदता था। सरकारी कायदा अपने जगह था और कमिटी का नियम अपने जगह, पर कहना न होगा कमिटी का नियम तमाम सरकारी कायदों पर भारी पड़ता था।

लेकिन आज कमिटी की बैठक हो रही थी। और बैठक के कोलाहल से आसपास का वातावरण चरम पर था। खबर थी कि पड़ोसी जिले बाबूगंज से दो ठेकेदार टेंडर कमिटी में सेंध लगाना चाहते हैं। चंपापुर कमिटी के ठेकेदार यह सुनकर फांय–फांय कर रहे थे।

बिना दस्तावेजों वाली संवेदक समिति के अध्यक्ष शंकर शरण बैठक की अध्यक्षता ले रहे थे। समिति को बचाने और धरती पुत्रों के हितों की रक्षा की दोहरी जिम्मेवारी उनकी कंधों पर अटकी थी। डिस्ट्रिक्ट बोर्ड के ठेकेदारों में अधिकांशतः धरतीपुत्र थे इसलिए कमिटी में में भी उनकी ही बहुलता थी। अल्पसंख्यकों के पास बैठक में नहीं आने का विकल्प नहीं था इसलिए वे भी मन मार कर बैठक में हाजिर थे ताकि बैठक को लोकतांत्रिक जामा पहनाया जा सके। लेकिन बैठक में होता वही था जो धरतीपुत्र चाहते थे और यही वहाँ की सर्वमान्य परंपरा रही थी।

अध्यक्ष शंकर शरण– "अब तक हमारी समिति सभी के सहयोग से और विश्वास से सब काम मिल–जुलकर करते आ रहे हैं और एक भी काम किसी बाहरी को लेने नहीं दिया है। लेकिन अभी सुनने में आया है कि बाबूगंज का ठेकेदार रूप्पन और बिनोद टेंडर डालने के लिए कुलबुला रहा है।"

भवतोष सिंह– "कुलबुलाने से क्या होगा चच्चा, ऊ क्या समझता है उसको यहाँ काम करने देंगे। उसको तो कह दिये हैं यहाँ आओगे तो उसके साथ–साथ उस के रीग के कंम्प्रेशर में भी गोली मारेंगे।"

अध्यक्ष ने इस बात पर उसको झिड़का– "सब बात में आप गोली–बंदूक क्यों करते हैं जी। बोलना–बाजना अपनी जगह है और करना अपनी जगह। समझदार होगा तब स्वयं इधर नहीं आएगा। लेकिन दूसरा का क्या कहें जब अपने में फूट पड़ी हो तो। मेढ़कों को तराजू पर चढ़ाना भी तो कठिन है।"

बैठक डिस्ट्रिक्ट बोर्ड के अहाते में चल रही थी, पुराने पाईपों के जखीरे पर जिले के छंटे हुए ठेकेदार डटे हुए थे। बगल में वर्षों पहले दमतोड़ चुकी एक सरकारी जीप अस्थि–पंजर छोड़ लगभग मिट्टी हो चली थी। सड़े जीप के बोनट पर बैठकर खैनी झाड़ते हुए ठेकेदार साजन सिंह ने कहा– "करना क्या है, पाँच काम है, पाँच लोगों में बांट दीजिए।"

"हिसाब से जिसकी बारी नहीं पड़ती है वह भी काम चाह रहा है। श्यामजी कह रहा है कि मेंटेनेंस वाले काम में उसे घर से घाटा हुआ इसलिये उसे भी एक काम मिलना चाहिए।"

बमबम लाल ने भी इस बात पर अपनी सहमति प्रकट की– "हाँ, उसको घाटा हुआ तो है मैं भी जानता हूँ। उसको एक काम मिलना ही चाहिए।"

बमबम लाल ने वह बात कह दी जिस पर सिर फुट्टव्वल होना तय था।

उसके कहने की देरी थी कि जिसको काम मिलने की बारी थी वह ठेकेदार बिदक गया– "घाटा हुआ कि मुनाफा, हम देखने गए हैं। जिसके नसीब में जो था मिला। और मेंटेनेंस में काम क्या होता है जो घाटा हो गया।"

श्यामजी– "नसीब में नहीं, जो मिलना चाहिए उसी की बात हो रही है। कहीं सूप में, कहीं चुप में, अब नहीं चलेगा।"

इस पर बात बढ़ी और दोनों पक्षों ने जम कर बवाल काटा। ऑफिस का कंपाउंड जल्द ही अखाड़े में तबदील हो गया। गगनचुंबी गर्जना कान फाड़ने लगी। ऑफिस से नाजिर निकलकर ठेकेदारों के बीच गया तब जाकर ठेकेदारों में मारपीट शुरू हुई। मनोनीत अध्यक्ष ने झगड़ा होने पर अपना व्याख्यान देना बंद किया और नाजिर के साथ मिलकर मार–पीट का मुआयना करने लगा। अल्पसंख्यक ठेकेदार मौका देखते ही समिति का निर्णय को होने से पहले, अपने पैर सर–माथे पर रखकर वहाँ से खिसक गए।

'भागो रे, दौड़ो रे, जान बचाओ, उसको पकड़ो– इसको मारो, किसी–को नहीं छोड़ेंगे, कुछ है, लाठी निकालो, लाठी नहीं मिल रही तो पाईपे लावो, घर से बंदूक लावो। अगले एक घंटे तक ये शब्द वातावरण को सुरमयी करते रहे।"

जिस ठेकेदारका शर्ट फटा था वह गिड़गिड़ाते हुए कह रहा था– 'हम थाना जाएंगे।' फिर शर्ट फाड़नेवाला ठेकेदार उसको गेट तक खदेड़ा। कुछ देर में माहौल ठंढा गया और फटे हुए शर्ट का और शर्ट फाड़नेवाला ठेकेदार दोनों साथ बैठकर बीयर पी रहा था और बता रहा था कि जो उसके साथ हुआ है दरअसल उन दोनों की वजह से नहीं बल्कि कार्यपालक अधिकारी की वजह से हुआ है। आखिर इतना कम काम निकालने की क्या जरूरत थी कि सारे लोग को एक–एक काम भी नहीं मिल पाये। फिर वे मिलकर देर तक कार्यपालक अधिकारी को एक से एक भद्दी गालियों का श्रद्धसुमन अर्पित करते रहे, यह जानकर कि कार्यपालक अधिकारी पिछले पंद्रह दिनों से सरकारी दौरे पर अपने घर गए हैं, उन्हें ऐसा करने में कोई खतरा महसूस नहीं हुआ। हालांकि वे जानते थे कि कार्यपालक अधिकारी रहते तो भी ऐसा करने में कुछ खास अंतर नहीं पड़नेवाला था। फिर भी दिखाने के लिए यह जरूरी था कि उनके मुँह पर कुछ नहीं कहकर उनका लिहाज करते आए हैं।

लेकिन बला टली नहीं थी। सूचना में टेंडर पेपर बिकने के लिए दो दिन रखे गए थे पर जब समिति के लोग पेपर खरीदने के लिए कार्यालय पहुँचे तो पेपर बेचने वाला बाबू गायब मिला। पेपर बेचने वाला बाबू दूसरे दिन भी नहीं मिला। किसी ने यह अफवाह उड़ाई कि टेंडर पहले ही मैनेज कर लिया गया है और ऑफिस भी इसमें शामिल है। समिति को यह बात अप्रिय लगी कि जो उसका काम था, वह ऑफिस कर ले रहा है। फिर ठेकेदारों की समिति ने जिलाधिकारी को ज्ञापन देकर टेंडर निरस्त करने का प्रस्ताव ध्वनिमत से पारित किया और इस बार ठेकेदार कार्यपालक अधिकारी सहित बड़ा बाबू के परिजनों को भी अपनी गालियों में स्थान दिया और नारेबाजी की। इससे पहले की जिलाधिकारी को ज्ञापन मिलता, ठेकेदारों को बड़ा बाबू से पेपर मिल गया।

कुल पाँच कामों के लिए पाँच ठेकेदारों ने मिलकर दस निविदाएं डाली और काम अपने नाम कर लिया। बमबम महाराज ने अलबत्ता भवतोष सिंह से यह जानना जरूर चाहा कि जब उसने जलमीनार का काम पहले किया ही नहीं है तो उसे बिना अनुभव प्रमाण पत्र के काम कैसे मिल गया। भवतोष सिंह ने उसे तिरछी नजर से देखा और कहा कि भला वह ठेकेदार कैसे बन गया और यह भी कोई समस्या है। प्रमाण पत्र लगाने का मतलब उसका सत्यापन होना थोड़े ही है।

बाबूगंज का ठेकेदार निविदा डालने के दिन कहीं आस–पास तक नहीं नजर आया। काम भले सरकार का हो जान तो अपनी है, इस बात को वे बखूबी से समझते थे।

निविदा मूल्यांकन के एवज में उसका उचित–अनुचित जो भी हो मूल्य पाकर विकास शाखा ने ठेकेदारों को काम आवंटित कर दिया। जो भी हो जनता का काम जनता के पैसों से ठेकेदारों द्वारा जमीन पर उतरने की फ़िराक़ में लगा रहा। काम चुँकि जनता का था तो लोकल जनप्रतिनिधि ने साइट का औचक निरीक्षण कर लिया, और यह देखकर की सीमेंट, बालू और गिट्टी का अनुपात 1:2:3 की जगह 1:4:6 मिलाया जा रहा है, छः लोहे की जगह तीन प्लास्टिक का पाईप लगाया जा रहा है उसने अपना सिर पीट लेने का उपक्रम

किया। और ठेकेदार के सामने ही उसने कार्यपालक अधिकारी को तलब कर लिया।

कार्यपालक अधिकारी ने आते ही अपने हथेलियों को अपने छाती से दो फीट आगे ले जाकर जोड़ा और कहा – "प्रणाम सर।"

जनप्रतिनिधि– "प्रणाम को भेजिए तेल पीने, ऐसे काम कराईयेगा मेरे तहसील में? मटैरियल का क्वालिटी देखिए, लोहे की जगह प्लास्टिक का पाइप, और एस्टीमेट में यही रेसियो है सीमेंट का और ढलाई के बाद कंक्रीट में भूल से भी पानी की छींट तक जो पड़ी हो!"

कार्यपालक अधिकारी ने आँखें तरेरते हुए ठेकेदार की तरफ देखा। ठेकेदार पीछे हाथ बाँधे शांत खड़ा रहा जैसे कुछ हुआ ही न हो।

जनप्रतिनिधि– "ऐसे ही दोनों एक–दूसरे को देखते रहिएगा या कुछ बोलिएगा भी। और आपके इंजीनियर कहाँ रहते हैं जी, साईट विजीट नहीं करते हैं क्या? मैं अभी सरकार को लिखता हूँ।"

कार्यपालक अधिकारी– "नहीं सर ऐसी बात नहीं है इंजीनियर को अभी रिपोर्ट बनाने में भिड़ाए हैं। जब रिपोर्ट नहीं बनाते हैं तब साईट विजीट करते हैं सर।"

जनप्रतिनिधि– "हाँ ये भी खूब कहा, आपका विभाग केवल रिर्पोट ही तो बना रहा है। पब्लिक के काम का भगवान मालिक है ।बढ़िया तो है आपलोग रिपोर्ट भरिये और ठेकेदार बिल फारम भरेगा। ऐसे चलेगा देश!"

इस पर ठेकेदार ने खीसें निपोरते हुए क्षेत्रीय लहजे में उतरते हुए कहा– "हुजूर हमर मालिक भी आप औउरो भगवान भी आप। माय–बाप आप से कोय बात छुपा नहींये है। कम्पीटीशन में रेट गीर वैल पड़ी गैले सर, कहां से मैकअप होईते। दू पैसा नैय होते ते बाल–बच्चा की खायते हुजूर। डेरा पर साहेब के साथे अईबै हुजूर, सांझ के भेंट होई जैते। आपनेक समर्थक है किये हुजूर।"

डेरा और समर्थन का नाम सुनते ही जनप्रतिनिधि नरम पड़े और कह उठे–"कोई बात नहीं, जहाँ स्कोप है दु का चार सब कोई करता है। आप दू का दस बनाईये लेकिन पब्लिक को पानी पिला दीजिए।"

ठेकेदार– "कईसन बात कहीस हैं हुजूर, पब्लिक के पूरा पानी पिला दईबै हुजूर। पब्लिक पानी पीये खातिर होइ हे हैं हुजूर।"

यह सुनकर नेताजी आश्वस्त होकर अपनी फॉर्चूनर पर बैठे और उसके बेशकीमती टायर पास के नाली के कीचड़ को सिमेंट, बालू और गिट्टी के मसाले पर पैवस्त करते हुए अपनी राह चले गए।

उनके जाते ही कार्यपालक अधिकारी ने ठेकेदार की ओर मुखातिब होते हुए कहा– "आप भी ठेकेदारजी आदमी देखकर बात नहीं करते हैं। नेताजी स्वयं घांटे हुए हैं उनके सामने रेट, कम्पीटीशन मत बोला कीजिए नहीं तो लेने का देने पड़ जाएंगे। नेताजी, नेता होने से पहले से ठेकेदारी करते थे और अच्छी तरह जानते हैं कि जिस एस्टीमेट पर आप एक जलमीनार बना रहें हैं उतने में दो जलमीनार बन सकता है।"

ठेकेदार– "तब ते अपने बिरादरी के ने छेई ये हुजूर सब जानते छिये। नेताजी के डेरा पर मिठाई के डिब्बा पहुँची जैते हुजूर, सब ठीक भैजैते। चिंता के कौनो बात नहीं हिये।"

कार्यपालक अधिकारी– "ठीक है शाम को चले आईयेगा। और हाँ पेपर वगैरह सब दुरुस्त रखिएगा, इस बार योजना का जाँच बाबू कुछ ज्यादे कानूनची है। बिल पास करने में खीच– खीच करेगा।"

ठेकेदार– "मारिये गोली ससुर के नाती के। पैसा विभाग के, काम विभाग के, काम करे औउरू, करावे वाला भी विभाग के, मने आप और हम, तब ई जाँच बाबू खीचीर–पीचीर नहीं करीता की करी।"

गाँव में नया जल मीनार बनकर, रंग–रौगन होकर खड़ा था। जलमीनार के अहाते में बड़ा–सा टेंट लगा था, नेताजी ने अपने हाथों से जलमीनार के उद्घाट्न का फीता काटा था। टेंट में नेताजी का भाषण भी पुरजोर हुआ था। गाँववालों में उस दिन नाश्ते का पैकेट मिलने से खुशी की लहर भी दौड़ी थी। पैकेट में रसगुल्ला, टीपकचौड़ी, सिंघाड़ा, चमचम, और एक केला भी था। अब उस गाँव में उद्घाटन के तीन साल बीत रहे हैं और पब्लिक को अभी भी जलमीनार से पानी मिलने का इंतजार है।

युद्ध उत्सव नहीं है।

श्री कृष्ण लाल
लेखाकार

भारत–पाकिस्तान की सरहद के पास एक छोटा सा गाँव था, शांति नगर, जहाँ राजेंद्र अपने परिवार के साथ रहता था। उसका घर उस नियन्त्रण रेखा से ज्यादा दूर नहीं था, जहाँ आए दिन गोलीबारी होती रहती थी। राजेंद्र का दिल कभी शांत नहीं रहता था, क्योंकि उसे हमेशा डर रहता था कि पाकिस्तान के आतंक पोषित नीति के कारण कभी भी हालात बिगड़ सकते थे।

राजेंद्र की पत्नी, सीमा, और उनके दो छोटे बच्चे – अंश और साक्षी, उसका साथ देते थे। बच्चों की छोटी–सी दुनिया थी, जो अपनी मासूमीयत और हंसी के बीच सुकून से जी रहे थे। लेकिन, जैसे–जैसे दिन गुजरते थे, राजेंद्र को यह डर सताने लगता था कि उनकी यह शांति और सुकून किसी भी समय टूट सकती है। सीमा को भी यह डर सताता था कि एक दिन उनका यह छोटा सा परिवार इस युद्ध की आहट में खो सकता है। वह दिन दूर नहीं था, जब उनके डर का सच होने का वक्त आ गया। गाँव के लोगों की घबराहट, सैनिकों की आवाजाही और सीमा पार से बढ़ती आतंकवाद की घटनाएँ यह संकेत दे रही थी कि युद्ध बस शुरू होने वाला था। राजेंद्र और सीमा दोनों ने कई बार अपने बच्चों से यह बात छुपाने की कोशिश की कि जो हो रहा है, वह उनकी दुनिया को एक पल में बदल सकता है। लेकिन बच्चों के सवालों और डर से बचना संभव नहीं था। अंश और साक्षी अब कुछ समझने लगे थे, और उन्हें यह महसूस होने लगा था कि कुछ गलत हो सकता है।

राजेंद्र हर रोज ऊपरवाले से प्रार्थना करता, लेकिन उसका दिल जानता था कि हाल ही में हुए पहलगांव आतंकी हमले के बाद युद्ध जैसे हालात बन गए थे। वह रोज़ अपने परिवार को सुरक्षित रखने की सोचता, लेकिन यह डर उसके भीतर बढ़ता ही जा रहा था। उसे यकीन था कि युद्ध आने पर सरहद से दूर बैठे लोग टेलीविजन और सोशल मिडिया पर लाइव देख कर सक्रिय दर्शक की भूमिका अच्छी तरह से निभाएँगे, जबकि सीमा पर रहने वाले लोग इसकी असली कीमत चुकाएँगे। वे लोग, जो सीमा से काफी दूर रहते थे, युद्ध की संभावना पर बात करते हुए बड़े उत्साहित रहते थे। उनका मानना था कि पाकिस्तान से युद्ध का मतलब भारत की विजय होगी। 'हमें पाकिस्तान से युद्ध करना चाहिए! हमें उनकी जवाबी कार्रवाई का मुंहतोड़ जवाब देना चाहिए!' ये आवाजें हर कहीं सुनाई देती थीं। ये लोग बिना किसी वास्तविक अनुभव के युद्ध को एक उत्सव के रूप में देख रहे थे। टेलीविजन और सोशल मिडिया पर कुछ बेलगाम एंकर लोगों की भावनाओं को हवा देने में कोई कसर नहीं छोड़ रहे थे 'हम तैयार हैं! हमें जंग चाहिए!'

लेकिन राजेंद्र और उसके जैसे लोग, जो सीमा के पास रहते थे, युद्ध के इन खुशहाल सपनों से बिल्कुल अलग थे। उनके लिए युद्ध कोई खेल नहीं था, बल्कि यह उनके जीवन का वो भयानक सच था जिससे वे दूर रहना चाहते थे। और फिर एक दिन, वही घड़ी आ गई जिसका डर राजेंद्र को था। पाकिस्तान ने सीमा पर हमला कर दिया। भारतीय सेना ने इस हमले का मुंहतोड़ जवाब दिया फिर भी यह इतना तेज और अचानक था कि कोई भी खुद को बचा नहीं सका। राजेंद्र और उसके परिवार ने जैसे–तैसे घर से बाहर निकलने की कोशिश की, लेकिन अचानक से शुरू हुई बमबारी ने सबकुछ बदल दिया। राजेंद्र की पत्नी सीमा बच्चों को एक सुरक्षित स्थान पर ले जाने की कोशिश कर रही थी, लेकिन भारी गोलाबारी के कारण वे कहीं भी सुरक्षित नहीं जा पा रहे थे।

राजेंद्र दिल थामे हुए था, उसे बार–बार यह ख्याल आता कि उसके परिवार को कुछ हो न जाए। बमों की आवाज़ें अब पूरे गाँव में गूंज रही थी, और राजेंद्र का घर भी एक ड्रोन का निशाना बन, एक पल में टूट

कर गिर गया। राजेंद्र और सीमा ने बच्चों को बचाने के लिए कड़ी मेहनत की, लेकिन एक और भारी बमबारी ने उनकी उम्मीदों को चूर कर दिया। अंश और साक्षी, दोनों मलबे के नीचे दब गए। सीमा की चीखें धमाकों में घुल गईं, और राजेंद्र का दिल पूरी तरह से टूट गया। वह कुछ समझ नहीं पा रहा था, बस यह सोचता रहा कि उसने अपने बच्चों को कैसे खो दिया। दोनों बच्चों का जीवन छीन लिया गया, और उनका परिवार हमेशा के लिए शून्य हो गया। राजेंद्र और सीमा की आँखों में वही दर्द था, जिसे शब्दों में नहीं कहा जा सकता।

बाद में, राजेंद्र और उसकी पत्नी को सुरक्षित स्थान पर शरण दी गई। वहाँ पहुंचने के बाद भी उनका दिल नहीं भरा। उन्होंने अपनी ज़िंदगी के सबसे अहम हिस्से को खो दिया था। वे राहत शिविर में बैठे, लेकिन उनके दिल में जो खालीपन था, वह कभी पूरा नहीं हो सकता था। लेकिन सबसे चौंकाने वाली बात यह थी कि जब राजेंद्र और उसका परिवार अपनी पीड़ा का सामना कर रहा था, तब सरहद से दूर–दराज के मैदानों में लोग युद्ध की खुशी में झूम रहे थे। वे जीत का जश्न मना रहे थे, और प्रधानमंत्री के भाषणों में उत्साहित हो रहे थे। मीडिया में युद्ध की सफलता की चर्चा हो रही थी, लेकिन किसी ने भी यह नहीं सोचा कि सीमा पर रहने वाले लोगों की तकलीफ क्या होती है।

दूर मैदानों में लोग केवल अपनी विजय को देख रहे थे, लेकिन उन्हें यह एहसास नहीं था कि सीमा पर रहने वाले लोग उनके उत्सव का हिस्सा नहीं हो सकते। उन्होंने न केवल अपने परिवार को खोया, बल्कि अपनी ज़िंदगी की हर खुशी को भी खो दिया। राजेंद्र और उसकी पत्नी अब कभी भी युद्ध का समर्थन नहीं करेंगे, क्योंकि उन्होंने इसकी असली कीमत चुका दी थी। वे अब केवल यही चाहते थे कि लोग समझें, युद्ध सिर्फ मैदानों के उत्सव नहीं होते, बल्कि सीमा पर रहने वाले लोग इसके सबसे बड़े शिकार होते हैं। वे दोनों जानते थे कि युद्ध का असली मतलब तब समझ में आता है जब आप सीमा पर होते हैं, और आपको हर दिन अपने परिवार को बचाने की लड़ाई लड़नी होती है।

इस कहानी का अंत यही था कि जब तक लोग युद्ध की वास्तविकता को नहीं समझेंगे, तब तक वे कभी भी इसका सही मूल्य नहीं जान सकते। युद्ध एक उत्सव नहीं है, बल्कि यह उन परिवारों के लिए एक असहनीय दर्द और दुख का कारण बनता है जो राजेन्द्र की तरह सरहद के पास रहते हैं।

स्वर्ग और नरक - कर्मों का परम सत्य

श्री अमित कुमार
कनिष्ठ अनुवादक

एक समय की बात है, धरती पर जीवन की अनेकानेक उमंगें, संघर्ष, प्रेम और त्याग का संगम था, वहीं एक बुजुर्ग औरत अपने जीवन के अंतिम क्षणों के समीप पहुँच रही थी। वह अपने बीते कल के पन्नों में जिन यादों को संजोए हुए थी, उनमें अच्छाई और सौम्यता की झलकें प्रमुख थीं। उसने अपने जीवन में जितने भी अच्छे कर्म किए, वे सभी उसे एक अनोखे मुकाम पर ले जाने का वादा करते थे, जो कि किसी भी स्वार्थ, धन–दौलत या सांसारिक सुख–सुविधाओं से परे था। जैसे उसका जीवन का अंत करीब आता गया, उसके मन में अनेक भावनाएँ उमड़ने लगीं– कृतज्ञता, शांति और साथ ही एक जिज्ञासा कि मृत्यु के पार क्या है?, स्वर्ग की झलक कैसी होगी या नरक की भयावहता में क्या राज छिपा है? इसी दौरान, जब उसकी उम्र ने वहम रूपी सीमा पार की, तो अचानक यमराज स्वयं प्रकट हुए और उसे लेने आए।

बुजुर्ग औरत, जिनकी आंखों में अनुभवों की चमक थी और जिनके चेहरे पर जीवन भर के संघर्षों और जीत की कहानियाँ अंकित थी, उन्होंने आत्मिक शांति और संयम के साथ अपने अंतिम क्षणों का स्वागत किया। उनके चारों ओर, वातावरण में एक अद्‌भुत मौन व्याप्त था, मानो सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड उस क्षण को श्रद्धा और ध्यान से देख रहा हो। उनकी आत्मा में संचित अनगिनत पाप, पुण्य और सुंदर यादों के बीच एक विशेष स्थान था– वह स्थान, जहाँ उन्होंने निस्वार्थ प्रेम, साहस और सच्चाई के दीये जलाए थे।

जब यमराज आए, तो उनकी उपस्थिति में एक अतीत से उभरते संदेश का अनुभव हुआ: जैसे स्वयं प्रकृति की गति में ही समय की सत्यता झलक रही हो। यमराज की काली वेशभूषा में वह दिव्यता छिपी थी, जो यह संकेत देती थी कि मृत्यु केवल अंत नहीं, बल्कि एक नए जीवन की शुरुआत भी है। बुजुर्ग औरत ने शांति के साथ उनसे पूछा, "आप मुझे स्वर्ग ले जाएँगे या नरक?" यह प्रश्न केवल एक जिज्ञासा नहीं, बल्कि उस आत्मा की, जिसने स्वयं में कर्मो की प्रशंसा करते हुए भगवान के चरणों में अपनी शर्तें देखी थीं।

यमराज ने गंभीर स्वर में उत्तर दिया, "दोनों में से कहीं नहीं। इस जन्म में तुम्हारे द्वारा किए गए उत्कृष्ट कर्मों के कारण, मैं तुम्हें सीधे प्रभु के धाम ले जा रहा हूँ।" इस उत्तर में न केवल उन शुद्ध कर्मो का न्याय था, बल्कि यह भी संदेश था कि जीवन में किये गए अच्छे कार्य स्वयं एक अमूल्य धरोहर हैं, जिनका फल किसी नश्वर न्यायाधीश से कम नहीं।

स्वर्ग की ओर प्रस्थान के निर्णय के पश्चात, बुजुर्ग औरत के मन में एक नई इच्छा प्रबल हुई – वह स्वयं स्वर्ग तथा नरक की झलक देखना चाहती थी। उनके मन में यह सवाल उमड़ पड़ा कि कैसे उन दोनों स्थलों के बीच का अंतर है, यदि दोनों ही अंततः प्रभु की ओर ले जाते हैं। उन्होंने यमराज से विनती की, "मैंने जहाँ धरती पर स्वर्ग–नरक के बारे में अनेक कथाएँ सुनी हैं, इसलिये क्या मैं एक बार दोनों स्थलों का दर्शन कर सकती हूँ?"

यमराज की नजरों में उनकी मधुर जिज्ञासा का प्रतिबिम्ब स्पष्ट था। उन्होंने कहा, "तुम्हारे कर्म उत्तम हैं, अतः मैं तुम्हारी यह इच्छा पूरी करता हूँ। चलो हम स्वर्ग और नरक के रास्ते से होते हुए प्रभु के धाम की ओर अग्रसर होते हैं।" इस क्षण में यह बात आत्मसात हो गई कि स्वर्ग और नरक केवल किसी नियत स्थान नहीं, बल्कि हमारे कर्मो के परिणामस्वरूप हमारे द्वारा निर्मित मनोभाव और जीवनशैली के प्रतिबिंब हैं।

यमराज के साथ कदम से कदम मिलाते हुए, दोनों एक ऐसे मार्ग पर चल पड़े, जहाँ पहले नरक का दृश्य प्रकट हुआ। जैसे ही बुजुर्ग औरत ने नरक की ओर देखा, उनके कानों में लोगों के रोने, चीखने और पीड़ा की आवाज़ें भर गई। उन आवाज़ों में मानो उस भयंकर पीड़ा की प्रतिध्वनि थी, जो कर्मो के अपूर्ण फलस्वरूप उत्पन्न होती है। नरक में उपस्थित लोग दुबले–पतले थे, मानो उनके जीवन में नित्य काल तक एकमात्र भूख और पीड़ा ही उनका साथी रही हो।

बुजुर्ग औरत ने अपने आँखों से उस भयावह दृश्य का निरीक्षण किया, जहाँ वे देखते ही समझ गई कि यहाँ के लोगों की हालत अत्यंत दयनीय है। वहां, एक विशाल पतीला था, जिसकी ऊँचाई बहुत थी। यह पतीला एक गवाह था उन सभी प्रयासों का, जो इतना स्वादिष्ट एवं संतोषजनक खीर से भरा था। उस पतीले के शीर्ष पर एक विशाल चम्मच लटका हुआ था, जो उस खीर के स्वाद की ओर इशारा कर रहा था।

उनकी दृष्टि उस समय विशेष रूप से उस पतीले पर जमी, जिसे देखकर उन्हें लगे कि यह कहीं काव्यात्मक कल्पना नहीं बल्कि वास्तविकता का प्रतिबिम्ब है। बुजुर्ग औरत ने पास खड़े एक आदमी से पूछा, "यहाँ इस पतीले में क्या है?" उस आदमी का उत्तर ने उनकी प्रवृत्ति को और भी स्पष्ट कर दिया। आदमी ने अत्यंत दुखी स्वर में कहा, "यह पतीला अत्यंत स्वादिष्ट खीर से भरा रहता है, परंतु हममें से कोई भी इस तक नहीं पहुँच पाता।"

उस आदमी के शब्दों में एक गहरी विडंबना बस चुकी थी– जहां अविश्वसनीय स्वाद भंडार में स्थित था, वहीं इंसान की सामर्थ्य और प्रयास की कमी के कारण, उनलोगों की आत्माएँ भूख से त्रस्त थी। उन्होंने जारी रखते हुए बताया कि "मरने के पश्चात जब से यहाँ आये हैं, हमने एक दिन भी खाना नहीं खाया। हमारी आत्माएँ भूख से तड़प रही हैं।"

यह सुन कर बुजुर्ग औरत के मन में न केवल सहानुभूति का भाव जागृत हुआ, बल्कि उन्हें यह प्रश्न भी करने पर मजबूर कर दिया कि ऐसे स्वादिष्ट खीर के होते हुए भी लोग क्यों नहीं अपनी भूख मिटाते। आदमी ने निराश स्वर में कहा कि " कैसे खायें, यह पतीला इतनी ऊंचाई पर है कि हममें से कोई भी उस तक नहीं पहुँच पाता।"

इस दृश्य ने उनके मन में यह सोच पैदा कर दी कि शायद ईश्वर ने इन लोगों को किसी प्रकार का दंड दिया है। ऐसा प्रतीत होता था कि नरक में कर्मों का फल केवल व्यक्ति के मेहनत और प्रयास पर निर्भर रहता है । यदि कोई प्राणी अपने जीवन में समर्पण और मेहनत छोड़ दे, तो वह इस प्रकार की निराशा में जीवन व्यतीत करता है।

हर एक कोने में दर्द और निराशा का जिस्मानी अनुभव था– रोते–बिलखते लोग, उन चुप्पियों में छुपी हुई पीड़ा, और वह पतीला, जो एक ओर अमूल्य स्वाद का भंडार था, पर दूसरी ओर अकल्पनीय दूरी और कठिनाई का प्रतीक भी। इससे यह स्पष्ट हो गया कि नरक केवल किसी नियत स्थान का नाम नहीं, बल्कि हमारे कर्मों और हमारी आत्मिक उन्नति की कमी का परिणाम है।

जब नरक का भयावह दृश्य यथासंभव मर्मस्पर्शी हो गया, तो यमराज ने बुजुर्ग औरत से कहा, "अब चलो, तुम्हें अगला पड़ाव दिखाता हूँ।" थोड़े ही समय में, उनकी यात्रा स्वर्ग की दिशा में मोड़ लेने लगी। स्वर्ग का दृश्य नरक से बिल्कुल विपरीत था – वहाँ का वातावरण आनंदमय, प्रशांत और उल्लासमय था । जैसे – जैसे बुजुर्ग औरत ने स्वर्ग के द्वार पर कदम रखा, उनकी आँखों के सामने एक अद्भुत दृश्य प्रकट हुआ।

स्वर्ग में जहाँ हर दिशा से हँसी, गुंजन एवं आनंद की ध्वनियाँ सुनाई दे रही थीं, वहीं वातावरण में एक शांत, सुसंगत ऊर्जा बह रही थी। वहाँ के लोगों के चेहरे पर सुखद मुस्कान थी, उनकी आँखों में आत्मिक संतोष झलक रहा था, और ऐसा लग रहा था कि जहाँ पर भी देखो–खुशियों की बौछार हो रही हो।

स्वर्ग में भी एक विशाल पतीला था, जिसकी ऊँचाई नरक के पतीले जितनी ही प्रतीत हो रही थी, परन्तु इस बार उससे कुछ अलग ही चमक झलक रही थी। उस पतीले के ऊपर भी एक विशाल चम्मच लटका हुआ था, जो उस मीठी खीर की ओर इशारा कर रहा था। बुजुर्ग औरत ने पुनः उस पतीले की ओर ध्यान दिया और यह बताते हुए पूछा, "इस पतीले में क्या है?"

स्वर्ग के निवासियों ने हँसते हुए उत्तर दिया , "इस पतीले में अत्यंत स्वादिष्ट खीर है, जिससे हम सब इच्छा अनुसार अपने मन को तृप्त कर लेते हैं।'' उस उत्तर से बुजुर्ग औरत थोड़ा सा भ्रमित हो उठीं। उन्होंने पुनः सवाल किया, "परंतु यह पतीला तो अत्यंत ऊँचा है, ऐसे में आपलोग इसे कैसे प्राप्त करते हैं?"

स्वर्ग के लोगों ने गर्व भरे स्वर में बताया, "स्वर्ग में हमारा जीवन केवल आराम और विलासिता का नहीं है, बल्कि सतत प्रयास एवं सत्कार्य से भरा हुआ है। यहाँ जितने भी पेड़– पौधे हैं, उन्हें हमने प्रिय मित्रों की भांति अपनाया है। हमारे चारों ओर फैले हरे–भरे वृक्षों ने हमें न केवल छाया प्रदान की है, बल्कि इन वृक्षों की प्रदान की लकड़ियों से हमने मिलकर एक विशाल सीढ़ी का निर्माण किया है। उस सीढ़ी की सहायता से हम सब उस पतीले तक आसानी से पहुँचते हैं और मिल–जुलकर खीर का आनंद लेते हैं।"

यह सुनने के पश्चात बुजुर्ग औरत का मन न केवल प्रसन्नता से भर उठा, बल्कि उन्हें यह बोध हुआ कि दो ही स्थान–नरक और स्वर्ग– में अंतर केवल निष्क्रियता तथा सक्रियता में निहित है। जहाँ नरक में रहनेवालों ने अपनी अवस्था को बदलने के लिए कोई प्रयास नहीं किया, वहीं स्वर्ग के लोगों ने मिलकर मेहनत, सहयोग और साहस का परिचय दिया और फलस्वरूप अपने भाग्य को स्वर्ग में परिवर्तित कर लिया।

जब स्वर्ग के उस सुखद वातावरण में बुजुर्ग औरत के मन में अनेक प्रश्न उभरने लगे, तो यमराज ने एक बार पुनः उन्हें संबोधित करते

हुए कहा, "देखो, ईश्वर ने स्वर्ग और नरक मनुष्यों के हाथों में सौंप रखा है। जहां एक ओर कर्मों का फल अपार होता है, वहीं पुरुष एवं महिला दोनों के लिए यह सत्य है कि जब तक आप स्वयं अपने लिए प्रयास नहीं करते, तब तक आपके भाग्य में परिवर्तन नहीं आ सकता।"

उनकी बातों से यह स्पष्ट हो गया कि स्वर्ग वह स्थान नहीं है जहाँ किसी विशेष चुनौतियों या विशेष मोहमाया से भरपूर सुख सुविधा उपलब्ध हो, बल्कि वह स्थान है जहाँ प्रयास, लगन और मानवीय सहयोग से निर्मित सच्ची खुशियाँ मिलती है। यमराज ने आगे कहा, "यहाँ नरक में भी पेड़–पौधे प्रचुर मात्रा में हैं, परंतु नरक के निवासियों में से अधिकतर आलसी हैं। उन्हें वह रस चाहिए, वह खीर चाहिए, जो उनके हाथ में आनी चाहिए– किन्तु बिना किसी प्रयत्न के वह आपके पास नहीं आती। ये लोग कर्म के महत्व को समझने की बजाय अपनी कमी की वजह से भूख और पीड़ा में जीवनयापन कर रहे हैं।"

यमराज के इस उपदेश ने बुजुर्ग औरत के मन में गहरी छाप छोड़ दी। उन्होंने देखा कि स्वर्ग और नरक का अंतर केवल बाहरी सुविधाओं में नहीं, बल्कि स्वाभाविक सजगता, मेहनत, उत्साह और आपसी सहयोग में निहित है। जहाँ स्वर्ग के लोगों ने विद्यमान संसाधनों का उपयोग कर आधुनिकता की सीढ़ी बनायी और मिल–जुलकर अपनी खुशियाँ साझा कर लीं, वहीं नरक के लोग बस अपनी निराशा में ही डूबे हुए थे।

इस उपदेश के माध्यम से यमराज ने यह स्पष्ट कर दिया कि ईश्वर ने किसी के लिए विशेष रूप से स्वर्ग या नरक आरक्षित नहीं किए हैं। सभी मनुष्य एक समान प्रारंभिक स्थिति में जन्म लेते हैं, परंतु उनके कर्म और प्रयास ही उनके भाग्य का निर्धारण करते हैं। तथा, यह सत्य है कि किसी के जीवन को स्वर्ग बनाना या नरक में परिवर्तित करना, वह उसके हाथ में है– चाहे वह अधिक मेहनत करे या आलस्य के सुख में डूब जाए।

जब बुजुर्ग औरत ने यमराज के उपदेशों को आत्मसात किया, तो उनके मन में गहरी चिंतनशीलता और स्पष्ट दृष्टिकोण उत्पन्न हुआ। उन्होंने स्वयं यह अनुभव किया कि यह केवल किसी परलोक की कथा नहीं है, बल्कि जीवन और मृत्यु की उस सत्यता का प्रतीक है, जो हमें रोजमर्रा की छोटी–छोटी क्रियाओं में भी दिखाई देती है।

उन्होंने सोचा, "यदि हम अपने जीवन में हर दिन एक कदम उठाएं, एक प्रयास करें, तो वह स्वयं में एक स्वर्ग बन जाता है। और यदि हम अपनी जिम्मेदारियों से कतराते हैं, तो हम अपने लिए नरक ही बनाते हैं।" यह विचार उनके मन में इस प्रकार घर कर गया कि जीवन की असली गुणवत्ता हमारे कर्मों, मेहनत, सहयोग एवं नम्रता में निहित है। उसी समय उन्होंने महसूस किया कि जीवन में मिले सुख–सुविधाएँ किसी भी स्वायत्त व्यवस्था द्वारा नहीं, बल्कि स्वयं हमारे द्वारा किए गए प्रयासों से ही प्राप्त होती हैं।

इस प्रेरणादायक अनुभव से बुजुर्ग औरत ने न केवल आत्मनिरीक्षण किया, बल्कि उनसे यह भी सीखा कि ईश्वर के द्वार पर पहुँचने के लिए केवल औपचारिक कार्यों या प्रदर्शनों की आवश्यकता नहीं होती, बल्कि यह उस आंतरिक सजगता, लगन और प्रयत्न से संभव है जिसमें हम स्वयं अपना सर्वस्व न्योछावर करते हैं। असल में, स्वर्ग बाहर का कोई भौतिक स्थान नहीं, बल्कि वह मनोभाव है जिसे हम अपने अच्छे कर्मों, सत्कार्यों और सच्चाई के द्वारा रची–बसाई करते हैं, और नरक उसी आलस्य, लापरवाही तथा निष्क्रियता का परिणाम है।

बुजुर्ग औरत के लिए यह यात्रा स्वर्ग और नरक की मात्र दो अलग–अलग अवस्थाएँ नहीं थीं, बल्कि यह एक गहन अनुभव था जिसने उन्हें जीवन के वास्तविक अर्थ एवं उसके लक्ष्य का बोध कराया। उन्होंने देखा कि जहाँ नरक में लोग स्वयं को संकट के घेरे में बंद कर लेते हैं, वहीं स्वर्ग में लोगों का जीवन सामूहिक प्रयास एवं साझेदारी से सज्जित है। स्वर्ग में उनलोगों ने पर्यावरणीय संसाधनों– वृक्षों, पेड़ों, नदी–झरनों और अपने आसपास के प्राकृतिक सौन्दर्य को अपनाकर एक ऐसा मंच तैयार कर लिया था, जिससे वह न केवल शारीरिक रूप से संतुष्ट होते थे, बल्कि मानसिक एवं आध्यात्मिक रूप से भी समृद्ध हो उठते थे। उन्होंने मिलकर विशाल लकड़ी की सीढ़ी बनाई, जिसके सहारे हर कोई उस

पतीले तक पहुँचता था और आपसी सहयोग तथा सहभागिता के साथ उस मीठे खीर का आनंद लेता था। यह वस्तुतः एक ऐसी प्रेरणा थी जो यह स्पष्ट करती है कि आत्म–सुधार, परिश्रम और सहयोग से किसी भी बाधा को दूर किया जा सकता है।

यह कथन न केवल आज के समाज के लिए, बल्कि उन पुरातन शिक्षाओं के लिए भी एक अमूल्य संदेश था, जिसमें मानव जाति को अपने जीवन के प्रति सजग, संवेदनशील और उत्तरदायी बनने की प्रेरणा दी गई थी। यह संदेश दर्शाता है कि चाहे कितनी भी बाधाएँ आए बुजुर्ग औरत के लिए यह अनुभव एक आत्मिक मुक्ति का संदेश बन गया , जिसने उन्हें यह अहसास दिलाया कि ईश्वर और प्रकृति के नियम अपरिवर्तनीय हैं, परंतु हमारी कोशिशें, हमारे कर्म हमें वह स्वर्ग या नरक का अनुभव करवाते हैं, जिसकी हमने कल्पना की होती है। इसीलिए हमें हरपल स्वयं में सुधार के प्रयास करने चाहिए, अपने अंदर की क्षमताओं को पहचानना चाहिए, और समाज के साथ मिलकर एक ऐसा वातावरण तैयार करना चाहिए जहाँ हर व्यक्ति अपने जीवन को पूर्ण आनंद में जी सके।

स्वर्ग का यह दर्शन स्वाभाविक रूप से बताता है कि सत्य सुख पाने के लिए केवल शारीरिक साधनों की आवश्यकता नहीं, बल्कि मानवीय सहयोग, लगन और आत्मविश्वास का होना भी अत्यावश्यक है। और यही कारण है कि स्वर्ग के लोग स्वयं सीढ़ियाँ बनाकर उस ऊँचे पतीले तक पहुँचे, जिससे कि उनके लिए खुशियों का भंडार स्वयं ही खुल गया।

उनकी आँखों में यह संदेश स्पष्ट था कि जीवन में मेहनत और सहयोग से ही सुख और संतोष प्राप्त होता है। चाहे हम कितनी भी ऊँचाइयों पर हो, यदि हम अपनी आत्मा को सुधारने के लिए प्रयासरत रहते हैं तो हमारा जीवन स्वर्ग के समान हो जाता है। दूसरी ओर, यदि हम आलस्य, निष्क्रियता एवं आत्म–ध्यानहीनता के कारण अपने जीवन के प्रति उदासी न हो जाते हैं, तो समाज में नरक के समान स्थिति उत्पन्न हो जाती है, जहाँ लोग उन सभी सुख सुविधाओं से वंचित हो जाते हैं जिन्हें वे स्वयं पाने में असमर्थ रहते हैं।

जीवन के हर मोड़ पर चाहे वह व्यक्तिगत स्तर हो या सामाजिक, कर्म का महत्व सर्वोपरि है। इस संदर्भ में बुजुर्ग औरत ने महसूस किया कि जीवन की चुनौतियाँ चाहे कितनी भी बड़ी क्यों न हों, उनमें से पार पाने का मार्ग हमेशा हमारे अपने प्रयास से ही निकलता है। समाज में सकारात्मकता और सहयोग का जो वातावरण बनता है, उसी में स्वर्ग के समान सुख का संचार होता है।

यमराज के स्वर में विद्यमान उपदेश यह प्रस्तुत करता है कि स्वर्ग और नरक की सीमा केवल बाहरी भौगोलिक स्थानों में नहीं, बल्कि हमारे अंदर के दृष्टिकोण, कर्म और प्रयासों में निहित है। इसीलिए हर व्यक्ति को चाहिए कि वह अपने अंदर की भावनाओं, संकल्पों और कर्मों का मूल्यांकन करे, और उसी के अनुरूप अपने जीवन में सुधार तथा उन्नति के लिए कदम बढ़ाए।

अंत में, जब यमराज ने बुजुर्ग औरत को प्रभु के धाम की ओर अग्रसर करते हुए विदाई ली, तो उन्होंने एक बार पुनः उस गूढ़ संदेश को दोहराया: "स्वर्ग और नरक मनुष्यों के हाथ में ही हैं। जो प्रयास करता है, मेहनत में विश्वास रखता है, वही अपने लिए असली स्वर्ग का निर्माण कर सकता है और जो अपनी क्षमताओं एवं अवसरों का सदुपयोग नहीं करता, वह स्वयं के लिए नरक का सृजन कर लेता है।"

यह संदेश बताता है कि हमारी भाग्यशाली स्थिति केवल किसी ईश्वर की अनुकम्पा से नहीं, बल्कि हमारे अपने कर्मों, योगदान और निष्ठा से तय होती है। चाहे जीवन में विषम परिस्थितियाँ हों, यदि हम उनमें प्रयासरत रहते हैं, तो वह स्वयं हमारे लिए स्वर्ग का निर्माण कर देते हैं। इसी हेतु हमें चाहिए कि हम अपने जीवन में प्रत्येक क्षण का सदुपयोग करें, स्वयं में सुधार करें और समाज के एक सकारात्मक अंग के रूप में कार्य करें।

इस प्रकार , बुजुर्ग औरत के लिए यह यात्रा केवल एक भौतिक यात्रा नहीं रही, बल्कि इसमें उन्हें आत्मिक, मानसिक एवं सामाजिक स्तर पर भी एक अद्भुत शिक्षा मिली। उनके अनुभव ने उन्हें यह सिखाया कि जीवन के हर मोड़ पर अपने कर्मों की कदर करनी चाहिए, क्योंकि वही कर्म ही हमारे जीवन की सच्ची दशा निर्धारित करते हैं।

भारतीय रेल का सफ़र : कुछ खट्टे–मीठे अनुभव

श्री प्रदीप कुमार
लेखाकार

जीवन में अनुभव हासिल करने के लिए सफ़र का बहुत महत्त्व है। प्राचीन समय में सारे दार्शनिक एक देश से दूसरे देश तक का सफ़र कर डालते थे और उससे जो उन्हें अनुभव और ज्ञान प्राप्त होता था वो उनके देश के विकास में लाभकारी सिद्ध होता था। आज के समय में आम इन्सान के लिए भारतीय रेल का सफ़र भी खट्टे–मीठे अनुभव प्राप्त करने का अच्छा साधन है। ऐसे ही कुछ जीवन को प्रभावित करने वाले अनुभवों से मैं भी रूबरू हुआ हूँ।

एक बार मैं विक्रमशिला एक्सप्रेस से दिल्ली जा रहा था। ट्रेन मुगलसराय जंक्शन पर रुकी हुई थी। वहाँ ट्रेन काफी समय रूकती है। हमारे डिब्बे में एक दम्पति बैठे हुए थे। उन्होंने अपना खाना अभी खत्म ही किया था और आम का स्वाद ले रहे थे। अब सब को पता है कि आम खाना सभी को पसंद है और आम देखकर किसी को भी लालच आ जाता है। वहीं प्लेटफोर्म पर ही एक बच्चा टहल रहा था। उसे कहीं जाना नहीं था। जैसे ही उसने उन्हें आम खाते देखा उसका बाल मन आम खाने को मचल गया। उसने उनसे आम खाने को माँगा किन्तु उन्होंने नहीं दिया। ट्रेन में जितना किसी दूसरे का दिया हुआ खाना खतरनाक है उतना ही किसी को कुछ खाने को देना। आज कल ऐसी घटनाएँ अक्सर देखने को मिलती है कि आप किसी को कुछ खाने को दें और वह किसी प्रकार आपके खाने के कारण अस्वस्थ होने का नाटक करे और आप एक साजिश का शिकार हो जाएँ। ऐसा अक्सर बच्चों को ही कुछ खाने को देने पर ज्यादा देखने को मिलता है। उनका समूह होता है जो तुरंत सक्रिय हो जाता है। इसीलिए उन्होंने उसे आम नहीं दिया, अन्यथा एक आम खाने को देना कौन सी बड़ी बात है, जैसा कि उन्होंने मुझसे बताया। उनकी ये बातें सुनकर मैं भी अचंभित रह गया। लेकिन इन सब बातों से परे वह बच्चा बहुत ही हठी था। उसने तो जैसे आम लेने की जिद पकड़ ली, और लगातार उनसे मांगता ही रहा। उसने तो इतना तक कह दिया कि आम तो वो लेकर ही रहेगा और खिड़की पकड़ कर खड़ा रहा। ट्रेन खुलने का संकेत हो चुका था पर वह खिड़की नहीं छोड़ रहा था। ऐसा प्रतीत हो रहा था कि जैसे वह आम लेने की जिद पर अडिग था। मैंने उनसे कहा कि उसे आम दे दीजिये क्योंकि अगर ट्रेन खुल गयी तो विद्युत् इंजन होने के कारण तुरंत रफ़्तार पकड़ लेगी और वो बच्चा गिर जायेगा। उन्होंने भी सोचा होगा कि अब ट्रेन चलने ही वाली है तो अब कोई ठगी का खतरा न होगा , सो उन्होंने उस बच्चे को एक नहीं दो आम दिए। बच्चे के चेहरे पर जीत की खुशी की मुस्कान थी, और उन दम्पति के चेहरे पर बिना किसी संकट में पड़े किसी की मदद करने की खुशी थी। देखा जाये तो उस बच्चे की कुछ हासिल करने की जिद और साथ ही उन दम्पति की दया–भावना प्रसंशनीय और शिक्षाप्रद थी।

इसी प्रकार मैं एक बार सम्पूर्ण क्रांति एक्सप्रेस से दिल्ली जा रहा था। ट्रेन के डिब्बे में एक लड़की अपने भाई के साथ सफ़र कर रही थी। डिब्बे में उस लड़की के अलावा कोई महिला नहीं थी। यह भी एक संयोग ही था, जो कि उस लड़की के लिए परेशानी का विषय था। वह छोटे शहर की लड़की थी इसीलिए उस परिस्थिति में खुद को सहज महसूस नहीं कर पा रही थी। कुछ समय के बाद जब मुगलसराय जंक्शन आया तो उसके डिब्बे में एक बुजुर्ग महिला चढ़ी। उनके पास

उस श्रेणी का उचित टिकट नहीं था। इन दोनों भाई–बहन ने उन्हें अपनी सीट पर ही बिठा लिया। अब वह लड़की इस महिला की उपस्थिति में कुछ हद तक सहज महसूस कर पा रही थी। उसके लिए वो महिला एक सहारे के समान महसूस हो रही थी। रात आसानी से बीत गयी, सुबह दिल्ली आने से पहले उस महिला ने उस लड़की के बाल भी बना दिया। वह लड़की बहुत ही खुश थी कि सफ़र बिना किसी परेशानी से कट गया। इसलिए उसने उस महिला को धन्यवाद भी किया। तो इस प्रकार इस सफ़र में उस लड़की द्वारा उस महिला को अपने सीट पर बिठाने की, दया करने की वजह से उसके सिर्फ पुरुषों के बीच सफ़र करने के कारण होने वाली किसी अवांछित परेशानी के भय से छुटकारा भी मिला और सफ़र आनंदमय भी रहा।

इसी प्रकार एक बार मैं अपनी पत्नी के साथ नार्थ–ईस्ट एक्सप्रेस से गुवाहाटी जा रहा था। मेरी एक सीट कन्फ़र्म थी लेकिन एक सीट वेटिंग ही रह गयी थी। ट्रेन का डिब्बा पूरा भरा हुआ ही था। टी.टी.ई. साहब भी लगातार टिकट की जाँच कर रहे थे ताकि वोटिंग टिकट वालों को सीट दिया जा सके। मैं उनके पास गया और उन्हें बताया कि मैं सेना में हूँ और अपनी समस्या बताई कि हमें सीट की बहुत जरुरत है। उन्होंने कहा कि पूरी टिकट जाँच कर लेने दीजिये फिर अगर उपलब्ध होगी तो आपको देंगे। कुछ समय के पश्चात् वो खुद मेरे पास आये और मेरी सीट निश्चित कर दी। मैंने उन्हें तहे दिल से धन्यवाद किया। मुझे यह बहुत अच्छा लगा कि उनके मन में सेना के प्रति सम्मान की भावना है और उन्होंने बिना किसी तरह की मांग किये मुझे सीट दी थी जो कि उनके ईमानदार होने का परिचायक था। सभी को पता है कि टी.टी.ई. साहब इतनी आसानी से पहले सीट नहीं दिया करते थे क्योंकि पहले ऐसी कोई तकनीक नहीं थी और ना अब है जिससे आम जनता को यह पता चले कि सीट किसे मिलनी चाहिए। इस सन्दर्भ में भारतीय रेलवे को अभी भी बहुत सुधार की आवश्यकता है।

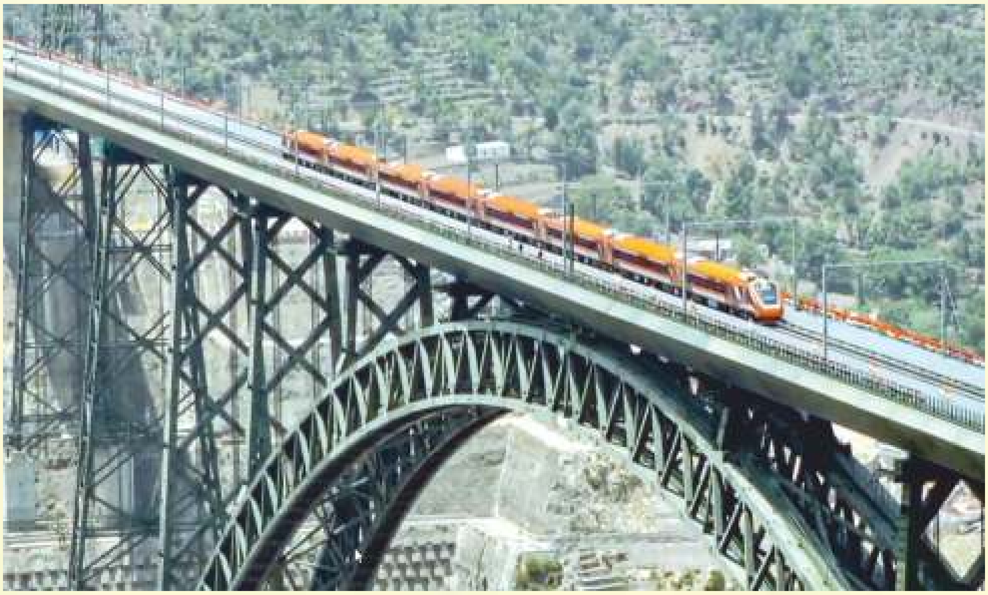

इसी प्रकार एक बार मैं तूफ़ान एक्सप्रेस से मुगलसराय जा रहा था, उसके बाद मुगलसराय से हावड़ा–जोधपुर एक्सप्रेस से जोधपुर जाना था। तूफान एक्सप्रेस कुछ देरी से चल रही थी इसीलिए मैं रात में काफी देर से ट्रेन में चढ़ा था। घर पर दो–दो शादी में शामिल होने के कारण मैं बहुत थका हुआ था। ट्रेन में मेरी सीट ऊपर वाली थी। मैंने अपना सामान सीट के नीचे रखा और ऊपर चढ़ कर सो गया। जब सुबह मुगलसराय आने से कुछ देर पहले मैं उठा तो देखा कि मेरा एक बैग गायब था। आज तक कभी भी ट्रेन के सफ़र में ऐसा होते मैंने देखा नहीं था। इसीलिए बैग में चैन भी नहीं लगाया था। लोगों से जब पूछा तो उन्होंने बताया कि रास्ते में किसी स्टेशन पर शादी में शामिल होने वालों का समूह उतरा था, लगता है गलती से आपका सामान भी उतार लिया। मैं तो पूरा हक्का–बक्का रह गया। अब करता तो क्या करता। चाहे गलती से हो या जानबूझकर हो, मेरा तो सामान चला गया था। ट्रेन देर से चल रही थी और मुझे दूसरी ट्रेन पकड़नी थी, इसीलिए मुझे मुगलसराय में शिकायत करने का मौका नहीं मिला। इस बारे में जब मैं जोधपुर रेलवे स्टेशन पर पहुँचा तो वहाँ अपना सामान गुम होने की शिकायत दर्ज करवाई। किन्तु बाद में भी मुझे सामान नहीं मिला, कैसे मिलता ये संभव ही नहीं प्रतीत हो रहा था। भले ही इस सफ़र में मेरी लापरवाही भी शामिल थी, लेकिन यह मेरे ट्रेन के सफ़र का अबतक का सबसे दुखद अनुभव था। इस सफ़र में यह सीख मिली थी कि अपने सामान की रक्षा करना स्वयं की जिम्मेदारी है और किसी दूसरे के ईमानदारी के भरोसे आप सफ़र नहीं कर सकते हैं।

जिंदगी का सफ़र यूँ ही चलता रहता है, चाहे रेल के सफ़र में हो या उसके बाहर हर सफ़र में कुछ न कुछ खट्टा–मीठा अनुभव जरुर मिलता है। हमें इनसे सबक लेना चाहिए और सकारात्मक दृष्टिकोण से जीवन में आगे बढ़ना चाहिए।

"निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल।
बिन निज भाषा–ज्ञान के, मिटत न हिय को सूल।।"
– भारतेंदु हरिश्चंद्र

डर

सुश्री गूंजा मालवीय
आशुलिपिक

सुबह उठी तो भाई के फ़ोन से तीन मिस्ड काल्स थे, व्हाट्सएप्प (Whatsapp) खोला तो एक मेसेज......

"माँ की तबियत बिगड़ने लगी है आकर मिल लो एक बार, माँ ने लोगों को पहचानना बंद कर दिया है।"

माँ को पिछले 6 साल से डेमेंसिया (Dementia) है, दिमागी भूलने की बीमारी....ये सब शुरू, छोटी–मोटी चीजें भूलने से हुआ था, पर धीरे–धीरे उनकी दिमागी हालत बिगड़ती चली गयी और वो अपने रोज मर्रा के काम करने में भी अक्षम हो गयीं... ऐसे में भाई ने माँ के साथ रुककर माँ का ध्यान रखने का फैसला किया और मैं अपने सपनों का पीछा करते–करते दिल्ली आ गयी.....घर और माँ से काफी दूर...यूँ तो माँ की हालत का अंदाजा मुझे पहले से ही था, पर आज भाई के कॉल के बाद मन में एक अजीब सी घबराहट घर करने लगी है ....

यादों का समुन्दर मानो मुझे डुबोने को आ रहा हो....और इन यादों के साथ मन में कई सवाल जो मुझे अंदर से खाने लगे थे ......जीवन में लिए सारे फैसलों पर मैं पुनः विचार करने लगी.....क्या मेरा घर छोड़ना जरुरी था?....क्या अपने आप को अपने काम में झोंक देना.. ..ठीक था? नाम, शोहरत की होड़ में मुझसे क्या–क्या पीछे छूट गया?...

पर इन सभी ख्यालों पर हावी हो रहा था एक डर.....क्या माँ मुझे पहचानेंगी? और अगर उन्होंने मुझे नहीं पहचाना तो मैं कैसे उन्हें अपना परिचय दे पाउंगी? जिन्होंने मुझे, मुझसे पहले जाना...मैं कैसे उन्हें बताउंगी कि मैं कौन हूँ?

इन सभी सवालों की पोटली बाँध मैं दूसरे ही दिन घर पहुँच गयी,.... भाई ने दरवाजा खोला...."माँ कमरे में है जाओ मिल लो....." मैंने गहरी सांस ली, अपना सारा साहस एकत्रित किया और माँ के कमरे में गयी, माँ कुर्सी पर बैठी दीवार ताक रही थी...उन्होंने मेरी तरफ देखा ....और मैं कुछ कहती इससे पहले ही उनकी निगाहें मुझ से हट कर वापस दीवार पर हो गयी....मेरे कलेजे पर जैसे कोई हाथी बैठ गया....कंठ में पत्थर भर गए....हाथ–पांव बर्फीले पर्वत से ठन्डे हो गए.....माँ की आँखें उनमें अब कुछ भी ना था.....न स्नेह, न करुणा....न वो अगाध प्रेम जिससे माँ.... माँ लगती थी....मानो उनके आँखों के पार का संसार बदल गया हो...

मेरी आँखें भर आई...और मैं माँ के कमरे से निकल गयी और अपने पुराने कमरे में घुस कर रोने लगी.....मेरा पुराना कमरा...जहाँ अब भी मेरी कई यादें...कुछ सामान और बहुत सी किताबें पड़ी थी...मेरी नजर एक पुरानी डायरी पर पड़ी....जो मेरे स्कूल डेज की हुआ करती थी.....मैंने उसे खोला....उस पन्ने का शीर्षक था– "मेरा सबसे बड़ा डर"...दुनिया में गुमनाम हो जाने का डर!..नाम न बना पाने का डर!....भूला दिया जाने का डर!....मेरी सांसें थम गयी.... आँखों से आंसुओं का सैलाब उमड़ पड़ा.....ये क्या विडम्बना थी..... आज मैं पूरे जग को याद हूँ पर मेरी माँ मुझे भूल गयी।

बेचारी बूढ़ी माँ

श्री संतोष कुमार राय
लेखाकार

किसी गाँव में एक बुढ़िया रहती थी। वह विधवा थी। उसके दो पुत्र– हरि और गोपाल थे, परंतु वे दोनों साथ नहीं रहते। जब हरि और गोपाल के पिता जीवित थे तब वे चारों बहुत खुशीपूर्वक रहते थे।

पिता के निधन के बाद, दोनों बच्चों की शादी हुई, वे दोनों अपने–अपने पत्नी और बच्चों के साथ अलग–अलग रहने लगी। बेचारी बुढ़िया को बहुएं ने अपने पास रखने के लिए एक शर्त रखी– यदि बुढ़िया हरि के पास रहेगी तो वह छः महीने तक गोपाल तथा उसके पत्नी और बच्चों से नहीं मिलेगी, ना हीं बात करेगी।

जब छः महीने पूरे होते तो गोपाल की पत्नी भी यही शर्त रखती। बेचारी बुढ़िया दो वक्त की रोटी के लिए अपने सभी पोते–पोतियों को एक साथ प्यार–दुलार भी नहीं कर सकती थी। वह सोचती, मैं और मेरे पति ने दोनों बच्चों को कितने स्नेह से पाला, परंतु मेरे बच्चे मेरे साथ कैसा दुर्व्यवहार करते हैं। वे दोनों ना कभी अपने माँ के पास बैठते, न हीं बातें करते। ना कभी पूछते कि माँ आपने खाना खाया या नहीं।

बुढ़िया घर के द्वार पर एक झोपड़ी में पड़ी रहती थी। सुबह–शाम बहु रूखी–सूखी रोटी दे जाती और पलटकर दुबारा देखती भी नहीं। एक दिन बुढ़िया बहुत बीमार हो गई। उसे तेज बुखार था लेकिन उनके दोनों बेटे–बहुएं उन्हें देखने भी नहीं आए। वह बुखार से तड़प रही थी और मन हीं मन सोच रही थी– जब गोपाल और हरि बीमार पड़ते थे तो मैं सारी रात जागकर बच्चों को तामीरदारी करती थी। आज ये बच्चे इतने बड़े हो गए कि अपनी माँ को ही भूल गए। बुखार तेज होने के कारण बुढ़िया की सांसें थमने लगे। वह बोली– जो दिन आज मेरे हैं, कल वो इनके भी हो सकते हैं।

ऐसा कहकर बुढ़िया ने अपने प्राण त्याग दिये।

पारसनाथ की यात्रा

श्री वैभव नंदन डाग्लिल
द्वारा- श्रीमती असाई माई पाड़ेया
वरिष्ठ लेखा अधिकारी

कॉलेज की जिंदगी किसी जादुई किताब की तरह होती है, हर पन्ने पर एक नया रंग, एक नया किस्सा। सुबह की भागदौड़ में लेक्चर के लिए दौड़ना, कैंटीन में दोस्तों के साथ ठहाके लगाना, और रात को असाइनमेंट्स की जंग, हर दिन एक नया रोमांच। मैं तीसरे सेमेस्टर में था और हमारा दोस्तों का ग्रुप – अभिजीत, कबीर, सनी, विशाल, विकाश और मैं हर छोटी–बड़ी बात में मस्ती का मौका निकाल लेते थे। कैंपस की वो गलियाँ, जहाँ हम चाय की टपरी पर घंटों गप्पें मारते और लेक्चर के समय पीछे की बेंच पर बैठकर हँसी के फव्वारे को नियन्त्रित करना और वे सपने कि एक दिन कुछ ऐसा करेंगे जो जिन्दगी भर याद रहे – यही तो कॉलेज की जान थी। लेकिन जब तीसरे सेमेस्टर की अंतिम परीक्षाएँ खत्म हुई तो एक अजीब–सा सुनापन छा गया। खुशी थी कि पेपर खत्म, राहत थी कि अब कुछ दिन आजादी, लेकिन मन में एक बेचैनी थी – जैसे जिन्दगी कुछ बड़ा, कुछ अनोखा मांग रही हो। दिमाग खाली था, लेकिन दिल कहीं टिक ही नहीं रहा था।

हम सब अपनी पसंदीदा चाय की टपरी पर बैठे थे, गर्मा–गर्म चाय की चुस्कियाँ लेते हुए गप्पें मार रहे थे। बाहर हल्की–सी बारिश की फुहारें पड़ रही थीं और टपरी की छत पर टप–टप की आवाज माहौल को और सुहाना बना रही थी। तभी कबीर, जो हमेशा कुछ न कुछ क्रेजी आइडिया लाता है, उसने जोश में कहा, "यार, पारसनाथ चलते हैं। " पारसनाथ, झारखंड की सबसे ऊँची पहाड़ी जो सिर्फ जैन धर्म का पवित्र तीर्थस्थल ही नहीं, बल्कि प्रकृति का एक अनमोल खजाना भी है। हरी–भरी वादियाँ, ठंडी हवाएँ जो चेहरे को सहलाती हैं, और वो शांति जो दिल को सुकून देती है। कहते हैं, यहाँ जैन तीर्थंकरों ने तपस्या की थी, और उनकी आध्यात्मिक ऊर्जा आज भी यहाँ की हवा में बसी है। हर साल हजारों लोग इसकी चढ़ाई करते हैं। कुछ आस्था के लिए, कुछ रोमांच की तलाश में, और कुछ अपनी सीमाओं को आजमाने के लिए। पारसनाथ का नाम सुनते ही हम सबके चेहरे खिल उठे। सनी ने फटाक से फोन निकाला और यूट्यूब पर पारसनाथ के ब्लॉग्स चलाने शुरू कर दिए। एक ब्लॉग में कोई मंदिर की प्राचीन कहानियाँ सुना रहा था, दूसरा चढ़ाई के रोमांच का जिक्र कर रहा था, तो तीसरा उस खूबसूरती का, जो शिखर पर इंतजार करती है। हम सब एक–दूसरे को देखकर मुस्कुराए, ट्रिप हमारी जिन्दगी का सबसे यादगार पल होने वाली थी।

हमारे ग्रुप में अभिजीत सबसे खास था। उसकी एक टांग में बचपन से कमजोरी थी, जिसकी वजह से लंबा चलना या तेज चढ़ाई उसके लिए आसान नहीं था। लेकिन जब उसने कहा, "मैं भी चलूँगा", तो उसकी आँखों में वो जोश था, जो हमें हिलाकर रख गया। वो पल हमारे लिए प्रेरणा बन गया। हम उसके घर गए, उसके माता–पिता से मिले, जो थोड़ा चिंतित थे। हमने उन्हें भरोसा दिलाया, "अंकल–आंटी, हम सब अभिजीत का पूरा ख्याल रखेंगे। वो हमारे साथ है, और हम सब एक–दूसरे के बिना अधूरे हैं।" अभिजीत की मुस्कान और उसका हौसला देखकर उनके चेहरे पर भी राहत की रेखाएँ उभर आईं और अभिजीत अपनी कमजोरी को एक चुनौती की तरह देख रहा था, जैसे कह रहा हो, " पहाड़, तू तैयार रह, मैं आ रहा हूँ।"

02 जनवरी 2025 की तारीख तय हुई, टिकट बुक हुए, और अगले कुछ दिन हम तैयारियों में डूब गए। कबीर ट्रेकिंग शूज की तलाश में बाजार के चक्कर काट रहा था, सनी स्नैक्स की लंबी लिस्ट बना रहा था और विशाल गूगल मैप पर रास्ता चेक कर रहा था। मैं और अभिजीत ने मिलकर एक प्ले–लिस्ट तैयार की, 2007–2012 के बॉलीवुड गाने और नब्बे के दशक के हिट गाने, ताकि सफर का मजा दोगुना हो। जिस दिन ट्रेन थी, रात से ही नींद गायब थी। दोपहर 2 बजे की ट्रेन थी, लेकिन उत्साह ऐसा कि हम सब स्टेशन एक घंटा पहले पहुँच गए, अपने भारी–भरकम सामान और चेहरों पर उत्साह मिश्रित बेताबी लिए। स्टेशन पर भीड़ थी, चाय की टपरी से भाप उठ

रही थी और ट्रेन की हॉर्न की आवाज ने माहौल में एक अलग ही उमंग और जोश भर दिया था। ट्रेन ढूँढी, सीटों पर कब्जा जमाया, पर बदकिस्मती–हमारी सीटें बिखरी हुई थीं। लेकिन हम कहाँ हार मानने वाले थे। थोड़ी–सी बातचीत, थोड़ा हंसी–मज़ाक और बाकी यात्री इतने प्यारे निकले कि उन्होंने अपनी सीटें हमारे साथ बदल लीं। अब हम सब एक साथ, एक ही डिब्बे में, जैसे कोई छोटा–सा परिवार।

ट्रेन चली तो माहौल बन गया। कबीर ने ताश निकाला और जल्दी ही हम 'ब्लफ' खेलने में डूब गए। विकाश खिड़की से हरे–भरे खेत, छोटे–छोटे गाँव और दूर क्षितिज पर उभरते पहाड़ निहार रहा था, बार–बार कह रहा था, " यार, ये तो किसी फिल्म का सीन है।" मैं ट्रिप की प्लानिंग में जुटा था, बोला, "वहाँ पहुँचकर हम सेल्फी लेंगे और वे लोग जो कहते हैं हम नहीं चढ़ सकते, उन्हें दिखाएंगे।" रास्ते में छोटे–मोटे स्टेशन आते, चाय वाले की 'चाय–चाय' की पुकार गूँजती और बाहर का नजारा, हवा में लहराते पेड़, खेतों में काम करते किसान, और वो पुरानी बालीवुड फिल्मों जैसा माहौल। सब कुछ मानो जैसे सपनों की दुनिया में हो। हमने गाने भी गाए, 'दिल चाहता है' का 'कोई कहे......' और 'हम तुम' का टाइटल ट्रैक और कॉलेज की मजेदार किस्से सुनाए। एक बार तो अभिजीत ने हमारे प्रोफेसर की नकल उतारी, और हम इतना हँसे कि बगल की सीट वाले अंकल भी मुस्कुराने लगे।

पारसनाथ स्टेशन पहुँचे तो रात हो चुकी थी। बाहर टैक्सी ड्राइवरों की भीड़ थी, सब अपनी–अपनी गाड़ी की तारीफ में जुटे थे। एक दयालु दिखने वाले ड्राइवर अंकल ने हमें एक किफायती होटल का वादा किया। रास्ते में वो पारसनाथ की कहानियाँ सुनाने लगे, जैन तीर्थंकरों की तपस्या, पहाड़ की रहस्यमयी खूबसूरती और वो शांति जो यहाँ की हवा में घुली है। उनकी बातें सुनकर हमारा उत्साह और बढ़ गया। होटल पहुँचे, दो कमरे बुक किए, क्योंकि हम छह लोग थे। लेकिन मज़ेदार वाकया, कमरे के दरवाजे में ताले नहीं थे। होटल मालिक ने हँसते हुए 100 रुपये जमा करवाकर एक पुराना–सा ताला थमा दिया, बोले, " चेकआउट पर लौटा देना।" हमने हँसते–हँसते सामान एक कमरे में ठूँसा, स्थानीय ढाबे पर गरमा–गरम दाल–रोटी खाई, और रात को जमकर मस्ती की। विकाश ने अपने ब्लूटूथ स्पीकर पर गाने चलाए, कबीर ने अपनी भयानक डांस मूव्स दिखाया और हम सब अगले दिन की चढ़ाई की रणनीति बनाते–बनाते हँसते रहे। अभिजीत ने मजाक में कहा, "यार, मैं तो शिखर पर जाकर मेडल मांगूंगा।" और हम सब उसकी हिम्मत पर फिदा हो गए।

सुबह मैं सबसे पहले उठा। खिड़की से बाहर झाँका तो पारसनाथ का शिखर हल्की धुंध में नज़र आ रहा था, जैसे हमें चुनौती दे रहा हो। सूरज की पहली किरणें पहाड़ की चोटी को सुनहरा कर रही थीं, और हवा में एक ताजगी थी। "उठो यार, पहाड़ इंतजार कर रहा है", मेरी आवाज सुनकर विशाल ने तकिए से अपना मुँह ढक लिया, लेकिन कबीर ने तुरंत 'करेज द कायरली डॉग' का डायलॉग मारा, "पत्थर लौटा दो!" और कमरा ठहाकों से गूँज उठा। हमने हल्का नाश्ता किया, चाय के साथ गरमा–गरम पराठे, और रास्ते में कुछ बांस की लाठियां खरीदीं। ये छड़ी नुमा लाठियां चढ़ाई में मददगार होती हैं, खासकर मेरे और अंकित के लिए। अंकित ने अपनी छड़ी हवा में लहराई और मजाक में कहा, "ये मेरा जादुई छड़ी है, अब पहाड़ को देख लूंगा।" और हम सब उसकी हिम्मत पर फिर से कायल हो गए।

चढ़ाई शुरू हुई। सुबह की ठंड ऐसी थी कि जैकेट, मफलर, और दस्ताने सब चढ़ा लिए थे। जंगल के रास्ते पर पेड़ों की छाँव थी, और सूरज की किरणें पत्तियों से छनकर जमीन पर सुनहरे पैटर्न बना रही थी। हवा में हल्की–सी फूलों की खुशबू थी, और कहीं दूर से पक्षियों की चहचहाहट आ रही थी। लेकिन आधा घंटा चढ़ते ही हम पसीने से तर–ब–तर। एक जगह रुककर मैंने जैकेट उतारी, तो देखा उससे भाप निकल रही थी। विशाल ने चिल्लाकर कहा, "अरे, ये तो स्टीम इंजन बन गया।" और हम सब हँसते–हँसते लोटपोट हो गए। विकास ने फोन निकाला और बोला, "ये सीन तो इंस्टा स्टोरी के लिए परफेक्ट है।" लेकिन नेटवर्क न होने की वजह से उसका प्लान धरा का धरा रह गया। हमने वहाँ एक छोटी–सी धारा देखी, जहाँ ठंडा पानी बह रहा था। हमने चेहरा धोया, और वो पानी इतना ठंडा था कि दाँत किटकिटाने लगे। मैंने मज़ाक में कहा, " यार, ये तो फ्रिज का पानी है!" और फिर हँसी का दौर शुरू हो गया।

चढ़ाई आसान नहीं थी। पथरीले रास्ते, कभी तीखी ढलान, तो कभी घने जंगल। थोड़ा चढ़े और थकान शुरू। अभिजीत थोड़ा धीरे चल रहा था, लेकिन उसकी हिम्मत देखकर हम सब रुक–रुककर उसके साथ कदम मिलाते। हमने उसे बीच में रखा, ताकि वो कभी अकेला न महसूस करे। विशाल ने उसका बैग ले लिया और मैं उसके साथ गप्पें मारने लगा ताकि उसका ध्यान थकान पर न जाए। हमने एक–दूसरे

को हौसला देने के लिए नारे लगाए– "बस थोड़ा और, यार! हम हैं सुपरस्टार।" लेकिन तभी कुछ स्थानीय लोग मिले, जिन्होंने मजाक में कहा, " तुम लोग ऊपर नहीं पहुँच पाओगे, वापस चले जाओ। अभी तो आधा रास्ता भी नहीं हुआ।" उनकी बातें सुनकर हमारा खून खौल उठा। अभिजीत ने मुस्कुराते हुए कहा, "देख लेना, हम ज़रूर पहुँचेंगे। ये पहाड़ हमारा है।" और उसकी वो मुस्कान, जैसे सारी थकान को पल में उड़ा दे। हमने ठान लिया कि चाहे जो हो, हम शिखर तक जाएंगे।

रास्ते में एक बुजुर्ग अंकल मिले, जिनके कंधों पर भारी सामान लदा था। वो धीरे–धीरे चढ़ रहे थे, लेकिन उनके चेहरे पर एक अजीब–सी शांति थी। हमने उनका सामान उठाया, और रास्ते में उनसे बातें की। उन्होंने पारसनाथ की कहानियाँ सुनाई कैसे ये पहाड़ तीर्थंकरों की तपस्या का गवाह है, कैसे यहाँ की शांति आत्मा को सुकून देती है, और कैसे रात में भी यह जगह सुरक्षित है। अभिजीत को देखकर वे बोले, "बेटा, तुम्हारी हिम्मत देखकर लगता है, ये पहाड़ तुम्हारे लिए छोटा है।" उनकी बातों ने हमें नया जोश दिया। हमने अभिजीत के कंधे पर हाथ रखा और कहा, "तू हमारा हीरो है, भाई।" और वह हँसते हुए बोला, "बस, शिखर तक पहुँच जाऊँ, फिर देखना।"

नेटवर्क न होने की वजह से ऑनलाइन गाने तो चले नहीं, लेकिन मेरी दूरदर्शिता काम आई। मैंने पहले ही 'दिल चाहता है' का 'कोई कहे'. ...., 'हम तुम' का टाइटल ट्रैक, और 'दिलवाले दुल्हनिया ले जाएंगे' का 'तुझे देखा तो.........' डाउनलोड कर रखे थे। हम गाते–झूमते चढ़ते रहे, और जंगल में हमारी आवाजें गूँजती रहीं। रास्ते में छोटी–छोटी धाराएँ मिलीं, जहाँ हमने ठंडा पानी पिया और चेहरा धोया। वो पानी काफी ठंडा था, लेकिन मजा आ गया। एक जगह हमें रंग–बिरंगे पक्षी दिखे, जो पेड़ों की टहनियों पर उछल–कूद कर रहे थे। कबीर ने कहा, "यार, ये तो जंगल का डांस पार्टी है!" और हम सब हँस पड़े।

तीन–चौथाई रास्ता पार करने पर हमें मिला बंदरों का झुंड। वो इधर–उधर, उछल–कूद मचा रहे थे। कुछ स्थानीय लोग पालकी और बाइक से यात्रियों को ले जा रहे थे, लेकिन बाइक वालों की लापरवाही देखकर हमें सावधान रहना पड़ा। एक बाइक वाला इतनी तेजी से आया कि हम सब किनारे की ओर भागे और अभिजीत ने मजाक में कहा, "यार, ये तो फास्ट एंड फ्यूरियस का सीन है!"

आखिरकार दोपहर 2 बजे, हम शिखर पर पहुँचे। वो पल–जैसे समय ठहर गया हो। चारों तरफ हरी–भरी वादियाँ, दूर तक फैली पहाड़ियाँ, और हवा में एक मीठी–सी सनसनाहट। मंदिर की घंटियों की आवाज और वहाँ की शांति–सब कुछ अद्भुत था। हमने एक छोटे–से ढाबे पर चावल, मिक्स वेज, पापड़ और सलाद खाया। खाना इतना स्वादिष्ट था कि विशाल ने कहा, "यार, ये तो घर के खाने को टक्कर दे रहा है!" बंदर हमारे पीछे पड़े थे, लेकिन हमने अपने पापड़ बचा लिए।

शिखर पर खड़े होकर हमने उन लोगों को याद किया, जिन्होंने कहा था कि हम नहीं चढ़ पाएंगे। हमने जोर–जोर से चिल्लाया, "देखो, हम पहुँच गए।" हमारी आवाज जंगल में गूँज उठी, और लगा जैसे पहाड़ भी हमारी जीत का जश्न मना रहा हो। बी.एस.एफ. के कैंप दिखे, वहाँ के जवान मुस्कुराते हुए हमें देख रहे थे। थोड़ी देर आराम कर के, मंदिर के दर्शन करके और सेल्फी लेकर हम सब ने सोचा कि किसी ने सोचा भी नहीं होगा कि हम सब इतने बड़े पहाड़ की चढ़ान कभी भी कर पाएंगे। हमने मंदिर में दर्शन किए, और वहाँ की शांति ने हमारे थके हुए शरीर को जैसे नई ऊर्जा से भर दिया। सनी ने कहा, "यार, यहाँ की हवा में कुछ जादू है।" और हम सब ने चुपके से उस पल को जी लिया। हमने उन खुबसुरत नजारों को अपने–अपने मोबाइल, कैमरे में कैद किया और अपने आगे के सफर के बारे सोचा और पहाड़ से उतरने लगे।

वापस उतरना, चढ़ने से भी मुश्किल था। पथरीले रास्ते पर पैर फिसलने का डर, और ऊपर से अंधेरा होने लगा था। हमने टार्च और मोबाइल की फ्लैशलाइट जलाई, और गाने बजाए ताकि जंगली जानवर दूर रहें। 'ये जवानी है दीवानी' का 'इलाही......' बज रहा था, और हम गाते हुए उतरते रहे। रास्ते में जब दूर शहर की टिमटिमाती लाइट्स दिखीं, तो हम सब रुक गए। वो नजारा, रात में शहर का वो चमकता समंदर–जैसे हमारी पूरी यात्रा की कहानी कह रहा हो। कबीर ने कहा, "यार, ये पल ज़िंदगी भर याद रहेगा।" और हम सब उस पल को जीने लगे।

होटल पहुँचे, तो थकान ऐसी कि पैर जवाब दे रहे थे। स्थानीय ढाबे पर रात का खाना खाया, गरमा–गरम रोटी, दाल और आलू की सब्जी। खाने के बाद हम बिस्तर पर गिरे और पलक झपकते ही नींद आ गई। अगली सुबह ट्रेन पकड़ी और राँची लौट आए। लेकिन यह यात्रा सिर्फ एक ट्रिप नहीं थी। वो थी हिम्मत, दोस्ती, और खुद को आजमाने की कहानी। अभिजीत की हिम्मत, जो अपनी कमजोरी को पीछे छोड़कर शिखर तक पहुँचा, वो हम सबके लिए प्रेरणादायक थी। हमने जाना कि अगर दिल में जुनून हो और दोस्त साथ हों, तो कोई भी पहाड़ छोटा पड़ जाता है। और हाँ, अगली बार ट्रिप पर जाएंगे तो और ज्यादा गाने डाउनलोड करेंगे, क्या पता फिर नेटवर्क मिले न मिले।

शाकाहार बनाम मांसाहार

श्री प्रतीक जैन
सहायक लेखा अधिकारी

विगत फरवरी माह में, सदन में मत्स्यपालन, पशुपालन और डेयरी मंत्रालय से संबंधित पूरक प्रश्न पूछते हुए माननीय सांसद राजीव प्रताप रूढ़ी ने कहा कि देश में 95 करोड़ लोग मछली खाते हैं और एक करोड़ लोग मछली उत्पादन करते हैं। भाजपा सांसद ने कहा कि "अध्यक्षजी पता नहीं आप मछली खाते हैं या नही।" इस पर श्री ओम बिरला जी ने कहा कि मैं नहीं खाता। एक अन्य प्रसंग में लेखिका, समाजसेवी और शिक्षाविद् श्रीमती सुधा मूर्ति ने एक लोकप्रिय शो में अपने खान–पान के विषय में बताते हुए कहा कि जब वह विदेश जाती हैं तो अपने साथ खाना भी ले जाती हैं। उनका सबसे बड़ा डर होता है कि कहीं एक ही चम्मच का इस्तेमाल शाकाहारी व मांसाहारी दोनों तरह के भोजन में ना हुआ हो।

इन दो घटनाओं में व्यक्ति विशेष द्वारा निजी खानपान की शैली के बारे में वक्तव्य दिया गया था। परंतु जाने क्यों मांसाहारी वर्ग को यह चिढ़ानेवाला और नीचे दिखानेवाला लगा। लोग सोशल मीडिया पर आक्रामक हो पड़ें। इसे जातिवाद, ब्राह्मणवाद और अस्पृश्यता से जोड़कर आलोचना और निंदा का अनवरत दौर चला। फूड च्वाइस का मामला निजी घृणा तक जा पहुंचा।

उक्त संदर्भ में यह देखने लायक है कि मांसाहारियों का फूड च्वाइस का अधिकार समान रूप से शाकाहारियों पर भी लागू होता है। परंतु "मॉय बॉडी, मॉय च्वाइस" का राग अलापने वाली मांसाहारी आबादी प्रायः शाकाहारियों को ट्रोल करती पाई जाती है। 2018 में लाइफ़सम ऐप की एक स्टडी में पाया गया कि शाकाहारी या वीगन डाइट लेनेवाले 80% से ज्यादा लोग अपने रोजमर्रा के जीवन में लगातार मजाक एवं व्यंग्य झेलते हैं। वेजिटेरियंस पर ये नफरत इस कदर बढ़ चुकी है कि अर्जेंटीना में बकायदा यह मांग होने लगी है कि रंग, नस्ल व जाति से बचानेवाले कानून में एक नियम वेजिफोबिया पर भी होना चाहिए ताकि शाकाहारी सुरक्षित रह सकें।

जीव हत्या के विषय में कोई भी मांसाहारी सर्वप्रथम यही कहता है कि पेड़–पौधों में भी तो जीवन होता है। मतलब कि शाकाहारी भी तो मांसाहारी के समान हत्यारे ही होते हैं। सच है, और वैज्ञानिक रूप से है कि पशु–पक्षी–मछली के समान पेड़–पौधों में भी जीवन होता है और निश्चित रूप से मनुष्य भी सजीव हैं। तो जब शाकाहार से मांसाहार का तर्क सिद्ध होता है तो फिर मांसाहार से नर मांस भक्षण का तर्क स्वतः सिद्ध है। पेड़ से फल तोड़ना और बकरे का गला काटना बराबर है, तो फिर बगीचे में फल तोड़ने का दृश्य इतना

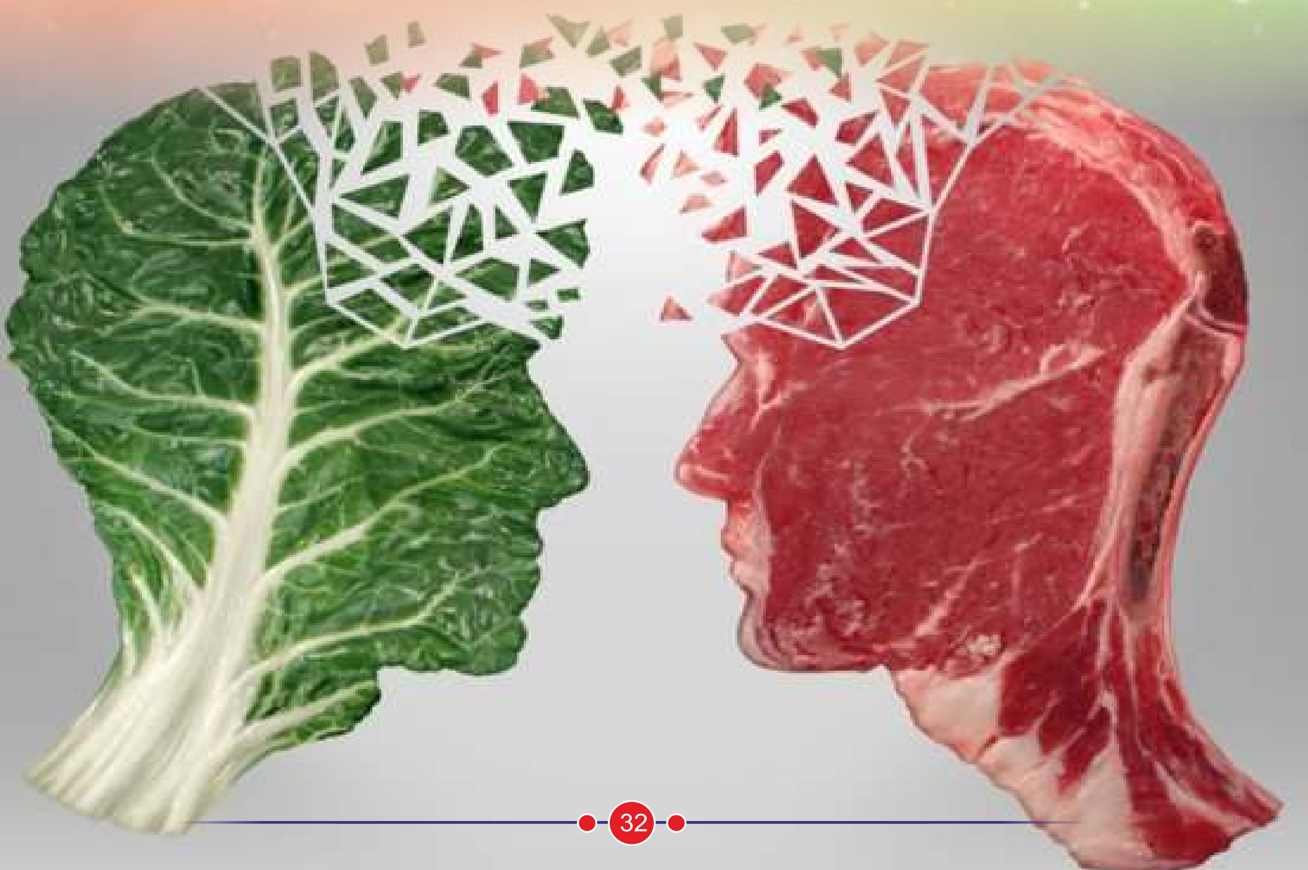

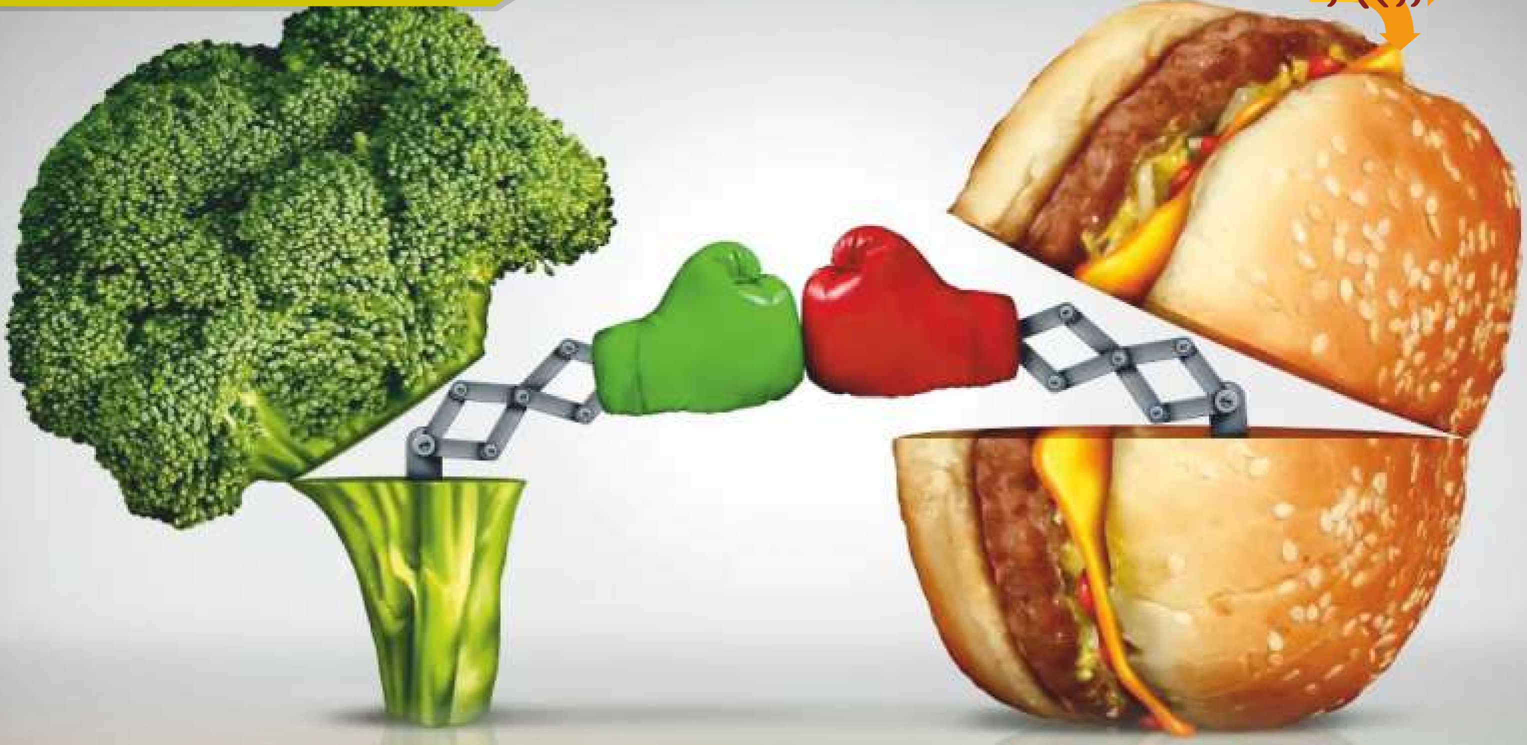

मनोरम और रुचिकर लगता है और पशु–पक्षी की हत्या, वधशाला को पब्लिकली प्रदर्शित करने पर ग्राफिक या सेंसिटिव कंटेंट कहकर सोशल मीडिया भी धुंधला कर देता है। अगर पेड़–पौधे, पशु–पक्षी और मनुष्य सब में समान रूप से जीवन होता है तो सिर्फ नर हत्या ही अपराध क्यों है? क्योंकि हम खुद मनुष्य हैं। अगर पेड़–पौधे तोड़ना मांसाहार के समान हत्या है तो फिर मनुष्य की हत्या भी चूहे, मेमने की हत्या के समान गैर–अपराध होनी चाहिए। ऐसे कम ही शाकाहारी होंगे जो पेड़ को जड़ से काट कर खत्म कर देने के पक्षधर हों। यह फर्जी कुतर्क, जो शाकाहार को हत्या से जोड़ता है, मात्र ट्रोल करने का एक बहुत पुराना ढर्रा है। अगर यह सही होता तो मांसाहारी अपने बच्चों को पार्क ले जाने के बजाय घूमाने वधशाला लेकर जाते। मात्र जिह्वा के रसास्वादन के वशीभूत शायद वे पशुओं का आक्रंदन, चीख, मौत के लिए भूखे प्यासे कतार में लगकर इंतजार करना भूल जाते हैं। कम ही मांसाहारी होंगे जो जीवहत्या का दृश्य देखना पसंद करते हैं। किसी विद्वान ने कहा था कि आप किसी अबोध बच्चे को एक सेब और एक खरगोश दीजिए, अगर वह सेब से खेलने लगे और खरगोश को मार कर खा जाए तो मैं मान लूंगा कि मनुष्य द्वारा पशुवध और मांस भक्षण स्वाभाविक है।

मांसाहार शाकाहार की बहस भारतीय परिपेक्ष में प्रायः धार्मिक मापदंडों पर आधारित होती है। अगर मांसाहार अधर्म नहीं है तो भी निश्चित रूप से अनैतिक, क्रूर और अमानवीय है। यह माय च्वाइस का प्रश्न मात्र नहीं बल्कि जब आप मांस का सेवन करते हैं तो बात सिर्फ आप तक सीमित नहीं रहती, उस प्राणी के जीवन के अधिकार से संबद्ध होती है। मनुष्य की विचारशीलता ने अपने अधिकारों की रक्षा के लिए कई न्याय–कानूनों को जन्म दिया है। परंतु पारिस्थितिकी के अन्य जीवों के जीवन के मूलभूत अधिकारों को छोड़ दिया है। अपने को श्रेष्ठतम प्राणी मानने वाला मनुष्य अपने आहार चुनाव के मामले में पशुओं से तुलना करता है। यहां पर उसका विवेक और तर्क पीछे रह जाता है और वह अपनी आदम वृत्तियों से संचालित होकर सर्वभक्षी बन जाता है। जीव हत्या घोर अवांछनीय है। फिर भी संक्षेप में यह समझा जा सकता है कि किसी भी अवस्था में पूर्ण अहिंसा असंभव है। अन्नाहार, जल या श्वासोच्छ्वास सभी हिंसक ही है। पर विकल्प न होने पर काम हिंसा को चुनना ही विवेक है। प्रश्न खानपान की आजादी से बढ़कर किसी जीव के प्राणों को नष्ट करने तक का है। मांसभक्षण का संबंध आजादी और चयन से नहीं है क्योंकि इसमें वध किया जा रहा है एवं इसमें पशु –पक्षी की आजादी या सहमति शामिल नहीं है। लियो टॉलस्टॉय के शब्दों में "जब तक बूचड़खाने रहेंगे, तब तक युद्ध के मैदान भी होंगे।"

(द फर्स्ट स्टेप– 1892)

"हिंदी हमारे देश और भाषा की प्रभावशाली विरासत है।"
– माखनलाल चतुर्वेदी

प्रेमा

श्री पुरुषोत्तमदास
प्रमंडलीय लेखा पदाधिकारी– ग्रेड–।।
ग्रामीण विकास विशेष प्रमंडल, जामताड़ा

ईबराह, यही नाम था उसका। कराची के रईस परिवार से ताल्लुक रखती थी। आधुनिक विचारों वाली जहीन कमसिन थी। डॉक्टर बनना हो, यह शायद ख्वाहिश हो, पर इस वक्त वह कीव के नेशनल यूनिवर्सिटी में फ्रेशर थी। लंबा कद, शांत और सौम्य चेहरा सलीकेदार परिधान में फूलों की तरह खिल जाती थी वह।

कई दफा वह नोटिस करती थी कैंपस के युवक को। वह शांत–सा था। पहनावा साधारण। उसे वहां पढ़ाई के अलावा किसी और चीज से मतलब हो कम–से–कम से देखकर तो ऐसा नहीं लगता। जब भी दिखता तो लड़कियों की तरह किताबें कोहनी और छाती के बीच दबाए, नजरें जमीन पर, कैंपस में आते या बाहर जाते ऐसे ही बस।

ईबराह अपने क्लासेज करने के बाद बी–ब्लाक से हॉस्टल के लिए निकल रही थी। तभी उसने उस लंबे–गोरे नौजवान को अपने नजदीक आते देखा, वह परेशान दिख रहा था। उसके चेहरे पर हवाइयाँ उड़ी हुई थी। कुछ कदम साथ चलता रहा।

ईबराह से नहीं रहा गया तो पूछ बैठी– "बताएं, कोई परेशानी है आपको?"

नवयुवक– "म...म...मैम.........मैं बी–ब्लाक फर्स्ट ईयर से हूँ।" लड़खड़ाहट जा नहीं रही थी।

ईबराह – "जनाब इंडिया से है।"

नवयुवक– "जी...।" "मैम, पी. जी. वालों ने मेरी किताबें और हॉस्टल की चाभी रख ली है।"

ईबराह – "तो जनाब।"

नवयुवक – "मैम सॉरी, बट उन्होंने कहा है कि मैं आपका दुपट्टा खींचूँ ... तो मेरी चाभी और किताबें देंगे।" उसने झिझकते हुए ही कहा था।

ईबराह–"अच्छा तो पी.जी. वाले यहाँ भी इंडिया–पाकिस्तान करवाना चाहते हैं।....................लेकिन कोई नहीं जी, आप खींच लो लेकिन यह दुपट्टा नहीं स्कार्फ है।"ईबराह मुस्कुरा रही थी वह समझ गई कि पी.जी. वालों ने नए बकरे को कुरबानी के लिए भेजा है।

नवयुवक ने झिझक से नजरें नीची कर ली। उसने पीछे मुड़ कर देखा तो पी .जी. वाले वहाँ से नदारद थे।

"जनाब जब तक आप यहाँ दुबक कर रहेंगे, यूँ ही कुरबानी होगी आपकी। मुझे तो बरतन तक धोने को कहा था मैंने तो कह दिया नहीं –जी–नहीं करेंगे। "

कुछ रुककर "इंडिया में कहाँ से हैं जी और नाम तो बताएँ आपका।"

"जी हरमन। मैं पंजाब से हूँ।"

"पंजाबी तो बड़े दमखम वाले होते हैं और एक आप निकले फन्ने खाँ।" ईबराह हँसते हुए हॉस्टल के लिए बढ़ गई।

उनकी यह छोटी सी मुलाकात शायद ही जिंदगी के नक्शे पर आती अगर रूस ने युक्रेन पर एक तरफा हमला न कर दिया होता। 24 फरवरी 2022 का दिन राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन के आदेश पर रूसी सैनिकों ने दक्षिण के अपने पड़ोसी देश युक्रेन पर बड़े स्तर पर हमला करना शुरू कर दिया। पहले दिन रूस ने युक्रेन पर जमकर गोलीबारी की। कीव में लाखों लोगों ने विस्फोटों और गोलियों की आवाज सुनीं। चारों तरफ अफरा–तफरी मच गई। लोग अपने घरों को छोड़कर भागने लगे। नेशनल यूनिवर्सिटी का वह कैंपस जो शिक्षणार्थियों के शोर–शराबे से गुलजार रहता था, अब वहाँ सन्नाटा पसरा था। देश–दुनिया के हजारों छात्र जो अपना भविष्य बनाने सैकड़ों–हजारों किलोमीटर चलकर यहाँ आए थे, मानो अंधेरे कुएँ में पहुँचा दिए गए थे। दुनिया भर की सरकारों को इस अप्रत्याशित मानवनिर्मित विपदा ने दवाब में ला दिया। रोज कैंपस में हजारों की तादाद में छात्र जमा होते और अपने–अपने एम्बेसी की एडवाईजरी को डिसकस करते। धीरे–धीरे कर सभी देशों ने अपने नागरिकों और छात्रों को वॉरजोन से निकालना आरंभ कर दिया। हालांकि युक्रेन की सरकार ने यूनिवर्सिटी संचालन बंद करने को कोई आदेश जारी नहीं किया था ना ही यूनिवर्सिटी प्रशासन की ओर से शिक्षणार्थीयों को कॉलेज छोड़ने और घर लौट जाने को कहा जा रहा था। लेकिन वहाँ बने रहना अस्तित्व का संकट था। धीरे–धीरे कॉलेज विदेशी छात्रों से सूना होना शुरू कर दिया।

ईबराह कॉलेज की लाइब्रेरी से निकल रही थी और मुख्य दरवाजे पर टंगे पर्दे पार करते ही एक आदमी से उसकी टक्कर हो गई और किताबें उसकी हाथों से बिखर गई। वह हरमन था।

" सॉरी , आपको कहीं चोट तो नहीं आई।" किताबें उठाते हुए हरमन ने कहा।

"नहीं तो पर जनाब आप .., आप वार जोन में क्या कर रहे हैं। आपके पी.एम. तो डैसिंग हैं, सारे हिन्दुस्तानियों को तो उन्होंने कब का एयर लिफ्ट करा लिया, फिर आप? "

"नहीं गया। "

वार जोन में डरावने सपने नहीं आते हैं जनाब को? ""

" मै"म ... आप भी तो नहीं गई हैं। "

"क्या मैम–मैम लगा रखी है। मुहतरमा को ईबराह कहते हैं और मेहरबानी होगी आप हमें ईबराह कहें "

"आप रोज लाइब्रेरी आती हैं, कब आती हैं "

"जब तक क्लासेज सस्पैंड हैं तब तक तो रोज हूँ। सुबह आती हूँ,

खाली रहती है। आप भी आते हो, रोज?"

"मैंने नून शिफ्ट लिया है। लेकिन मेरे लिए भी मॉर्निंग शिफ्ट सही रहेगा। आप हॉस्टल निकल रही हैं, चलिए आपको छोड़ देता हूँ।"

"शुक्रिया, पर मैं चली जाऊँगी..., इंशा अल्लाह मुझे कुछ नहीं होनेवाला। तो कल जनाब से मॉर्निंग शिफ्ट में भेंट होती है..., मैं भी अकेले बोर हो जाती हूँ।"

अगली रोज वहाँ एक खुशनुमा सुबह थी। भला कुदरत को इंसानों के फितूर से क्या लेना। हरमन मॉर्निंग शिफ्ट के लिए लाइब्रेरी में था लेकिन उसका दिल पढ़ने में नहीं था। उसने किताब खोली पर मन दरवाजे की ओर। वह लाईब्रेरी के बाहर लॉबी में रेलिंग थामकर खड़ा हो गया। कुछ ही देर में ईबराह कैंपस के गेट से अंदर आ रही थी। ईबराह लाल रंग की गाऊन पर सफेद स्कार्फ डाले हुई थी। बिलकुल अधखिले गुलाब जैसी लग रही थी, आज उसके कदमों में अलग उत्साह था। हरमन की तरुणाई को भी विश्राम मिल गया। " मेरे पिताजी हैं। वह हाई स्कूल में क्लर्क थे। उनका स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहता, वह दीदी के पास रहते हैं।"

"दीदी के पास...??"

"मेरे पिताजी रिटायर करने के बाद अपने सारे पैसे मुझे यहाँ भेजने के लिए लगा दिए। माँ की बीमारी में हमारा घर पहले ही बिक चुका था। दीदी उनको अपने पास ले गई है।"

"ओह!"

"आपने पूछा था न कि मैं इंडिया वापस क्यों नहीं जाना चाहता। हम सब जानते हैं कि युक्रेन से मेडिकल की पढ़ाई बीच में छोड़ने का क्या मतलब है। कॉलेज छोड़ने से आगे की राह बहुत कठिन होने वाली है। हमें अब कहीं और एडमिशन भी नहीं मिलने वाला.... और मिल भी जाए तो मेरी फैमिली उसे अफोर्ड नहीं कर सकती। मैंने दीदी को कह दिया है कि यहाँ यूनिवर्सिटी में कोई दिक्कत नहीं है। हमला स्कूल–कॉलेजों, रिहायशी जगहों और पब्लिक प्लेस पर नहीं होने वाली है।"हरमन का गला रूँध गया।

ईबराह ने हरमन के बाकी बचे गुबार को निकालते हुए कहा– "और जाएं भी तो कहाँ, दीदी तो पहले से पिताजी को रखे हुए हैं। खुद्दार भाई, बहन पर और बोझ कैसे बन सकता है।"

हरमन कुछ देर तक नहीं बोला। फिर ईबराह की ओर देखते हुए पूछा– "आपके पिताजी क्या करते हैं पाकिस्तान में। आप तो अच्छे घराने से लगती हैं।"

"मेरे अब्बु ..., मेरे अब्बु अमन पसंद और जिंदादिल इंसान थे। शायद इसलिए अल्लाह ने उन्हें अपने पास बुला लिया। हमारा मेडिकल इक्विपमेंट का खानदानी बिजनेस है। बिजनेस मेरी वालदाइन चलाती हैं अब।"

"आप तो अच्छे फैमिली से हैं तो यहाँ खतरों के बीच रुकना क्यों चाहती हैं।"

"पाकिस्तान एक अमन पसंद मुल्क है इसलिए।" कहकर खामोश हो जाती है। कुछ रुककर फिर "चलें किताबें बेचारी परेशान हो रही हैं कहीं हमारा सेमेस्टर न खराब हो जाए।"

पूरे यूनिवर्सिटी में खामोशी सी रहती.... लेकिन यह जोड़ा रोज लाइब्रेरी की मॉर्निंग शिफ्ट में होता और इसी से वहाँ की फिजां रौशन हो जाती। मुश्किल समय ने दोनों को हमदर्द बना दिया था। दोनों को एक–दूसरे का इंतजार रहता।

हरमन को अभी लाइब्रेरी से लौटे कुछ ही देर हुआ था कि कान के पर्दे हिला देने वाली बहुत तेज आवाज से सहम गया। आस–पास कहीं विस्फोट हुआ था। वह फौरन बाहर निकला और लोगों को गर्ल्स हॉस्टल की ओर भागते देखा। गर्ल्स हॉस्टल के बीचो बीच मिसाइल गिरी थी। वह भी जी–जान से गर्ल्स हॉस्टल की ओर भागा। दमकल की गाड़ियों के सायरन की आवाजें भी उस ओर जा रही थी। मिसाइल से गर्ल्स हॉस्टल का एक हिस्सा क्षतिग्रस्त हो गया था। वहाँ से धुल और धुएँ का गुबार अब भी उठ रहा था। ईबराह का कमरा फर्स्ट फ्लोर पर था। दमकल कर्मियों के आवाज देने पर भी हरमन नहीं रुका और ईबराह के कमरे के पास ही जा कर रुका। उसने देखा कि ईबराह के कमरे के पीछे दीवार थी ही नहीं।

"ईबराह ..., ईबराह... ,"

ईबराह आधे बचे कमरे के फर्श पर औंधे पड़ी हुई थी । उसका शरीर धूल से लथ–पथ सना हुआ था। कंक्रीट का एक छर्रा उसके माथे पर

> "हिंदी उन सभी गुणों से अलंकृत है,
> जिनके बल पर वह विश्व की साहित्यिक भाषा की अगली श्रेणी में समासीन हो सकती है।"
> \- मैथिलीशरण गुप्त

भी लगा था, उस जगह उसके बाल जले पड़े थे। हरमन ने उसको सीधा किया और फिर आवाज दी – " ईबराह ... ईबराह..... "

उसने दो पल के लिए आँखें खोली और इतना ही कह सकी– "हरमन....तुम!!" इसके बाद वह बेहोश हो गई। ईबराह अगले तीन दिनों तक कोमा में रही। जब उसे होश आया तो वह हॉस्पिटल के बेड पर थी और उसके माथे पर पट्टी बंधी थी। सामने हरमन बैठा था। वह उसके होश में आने की आशा में था।

"मैं कितने दिनों से होश में नहीं थी। "

"आज तीसरा दिन है। "

"और आप तीन दिनों से मेरे पास थे। " " आपकी अम्मी का फोन आया था। मैंने कह दिया थोड़ी तबीयत नासाज थी इसलिए हॉस्पिटल में है। "

"मेरी प्यारी अम्मी। खुदा का शुक्र है आपने उन्हें ज्यादा नहीं कहा। "

"मैंने आपको कहा था न लौट जाने को , अभी आपकी अम्मी आपको हमेशा के लिए खो दे सकती थी। "

"पता है आप जब मेरे पास आए तब मुझे होश था, फिर आपने मुझे अपने गोद में लिया..., यहाँ आने के बाद ऐसा पहली बार था जब मुझे मेरी परवाह नहीं करनी पड़ रही थी। "

"आपको पता है आपकी जान जा सकती थी, आप वादा कीजिए अब आप अपने देश लौट जाएंगी। जान सलामत रही तो फिर कर लीजिएगा एम.बी.बी.एस. (MBBS)। "

"जान की किसे पड़ी है, पर जान के लिए हम लौट के उन कठमुल्लों के बीच नहीं जाएंगे। पता है आपने मुझसे कहा कि मैं क्यों नहीं अपने मुल्क लौट जाती। मेरे अब्बु निहायत शरीफ और नेक दिल इंसान थे, उनकी जान पाकिस्तानी रेंजर्स के हाथों सिर्फ इसलिए चली गई कि उन्होंने एक बलोच के लिए हमदर्द दिखाई थी, उसकी जान बचाने की कोशिश की थी। मेरे आँखों के सामने उनका इंतकाल हो गया। और कठमुल्लों ने क्या– क्या नहीं कहा अम्मी को कि तुम्हारी बेटी का हलाला करवाएंगे। मेरी माँ एक मजबूत औरत है, वह कुछ भी स्वीकार करेंगी पर उनकी बेटी को जिल्लत का सामना करना पड़े यह किसी कीमत पर उन्हें कबूल नहीं होगा। "

"लेकिन, यहाँ हर घड़ी खतरा......"

ईबराह ने उसे बीच में हीं रोक दिया– "आप मुझे महफूज देखना चाहते हैं तो मुझे अपने आगोश में रहने दें उसी दिन की तरह। मेरे जिंदगी में सबसे अच्छा दिन था वह। "

"आप क्या कह रही हैं। "

"सही कह रही हूँ आप दिल से कहें कि आप नहीं चाहते मुझे, मुझे आपकी आँखों में रोज दिखता है..., या आप किसी और के साथ लिव–इन में तो नहीं? "

"नहीं मैं भला..., आपको ऐसा लगता है..., मेरी दीदी मेरी सबसे बड़ी दोस्त भी है। वह हमेशा कहती है कि अपने जीवनसाथी को देने के लिए सबसे बड़ा तोहफा है कौमार्य। "

" सही कहा दीदी ने..., उन्हें इल्म होगा इस गुनाह का, जिसके गर्त में हमारी जेनेरेशन जा रही है। पर मैं वादा कर सकती हूँ कि मेरे आपके करीब रहने से आपके करियर या कहीं और कोई दिक्कत नहीं होगी।"

"लेकिन आपका मुल्क..., आपकी अम्मी उन्हें फिर से परेशानी उठानी होगी। "

"मेरा मुल्क मेरा मुल्क है और उसके लिए मेरा बेपनाह प्यार है और रही बात कठमुल्लों की तो मैंने आपको कहा न कि मेरी अम्मी दुनिया की सबसे बहादुर अम्मी है। और मैं ये बातें जज्बात में बिलकुल नहीं कह रही। वह हमेशा मुझसे कहती हैं कि जीवन में जो कोई तुम्हारे पिता की तरह मिल जाए उसमें मेरी रजामंदी जानो। बस वह बायोलाजिकली करेक्ट हो। "दोनों हँस पड़ते हैं इस पर।

"और जो मैंने बीच रास्ते आपको छोड़ दिया तो। "

"जो बंदा अपनी किताबों को भी अपने सीने से लगाकर रखता हो और अपने बहन की राखी महीनों अपनी कलाई से छूटने नहीं देता, वह मुझे छोड़ देगा ये मैं नहीं मानती।"

युक्रेन की युद्धरत भूमि पर भी प्रेम की कोपलें फूट रही थी।

> "हिंदी भाषा वह नदी है जो साहित्य, संस्कृति और समाज को एक साथ बहा ले जाती है।"
> -रामधारी सिंह दिनकर

थोड़ा रुक जाना भी ज़रूरी है

श्री राहुल कुमार
सहायक लेखा अधिकारी

बहुत कुछ करना था जीवन में,
पर अब उलझा है मन चिंतन में।
थक गए हैं तन से, मन से,
बिखर गए हैं हम सपनों के धन से।।

हर दिन लगता है जैसे बोझ उठाया,
हर कदम पर खुद को खोया पाया।
अब हिम्मत भी जैसे रोने लगी है,
और उम्मीदें चुपचाप सोने लगी हैं।।

गिरते रहे बार–बार हम राहों में,
भटकते रहे अपने ही चाहों में।
अब दिल ये पूछे, क्यों फिर चलना?
जब हर सपना लगता है रोना।।

पर रुकना भी तो एक पल होता है,
साँस लेना भी संबल होता है।
हर रात के बाद सवेरा आता है,
जो खोया था, वो फिर से पाता है।।

चलो, कुछ देर बस यूँ हीं सो जाएं,
थकी पलकों को थोड़ी राहत दे जाएं।
पर ये नींद हार की चुप्पी नहीं होगी,
ये शुरुआत फिर से उठने की होगी।।

कल जब जागेंगे, आसमान छू लेंगे,
फिर से हम अपने ख्वाब बुन लेंगे।
थोड़ा थमे हैं, पर रुके नहीं हैं,
हम टूटे सही, मगर झुके नहीं हैं।।

श्रेय नहीं तो कम–से–कम दोष मत देना

श्री अमन कुमार सिन्हा
लेखाकार

चलो बाँट लेते हैं बाधा
आधा–आधा।
अगर सफल हो कार्य
तो तुम ले लेना पूरा श्रेय
सीधा–सीधा।

पर चाहिए तुमसे
एक पूरा वादा,
अगर हो कुछ बुरा
तो मत देना दोष देने वाला
आह् सीधा–सीधा।

मेरा सारा ज्यादा तुम्हारा।
और तुम्हारा
सारा हारा मन मेरा।
पर श्रेय नही तो
कम–से–कम दोष मत देना।

मेरा गांव अब उदास रहता है....

श्री अमित कुमार
कनिष्ठ अनुवादक

लड़के जितने भी थे मेरे गांव में।
जो बैठते थे दोपहर को आम की छांव में।
बड़ी रौनक हुआ करती थी जिनसे घर में,
वो सब के सब चले गए अब किसी शहर में।
ऐसा नहीं कि रहने को मकान नहीं था।
बस यहां रोटी का इंतजाम नहीं था।
हास, परिहास का आम तौर पर उपवास रहता है।
मेरा गांव अब उदास रहता है।।

बाबू जी ठंड में सिकुड़े और गर्मी में पसीने में नहाए थे।
तब जाकर घर में तीन कमरे किसी तरह बनवाए थे।
अब तीनों कमरे खाली है, मैदान बेजान है।
छतें अकेली है, साथ हीं गलियां वीरान है।।
मां का शरीर भी अब घुटनों पर भारी है।
पिता को हार्ट और डाईविटीज की बीमारी है।
अपने ही घर में मां–बाप का वनवास रहता है।
मेरा गांव अब उदास रहता है।।

छत से बतियाते पंखे, दीवारें और जाले हैं।
कुछ मकानों पर तो कई वर्षों से ताले हैं।।
बेटियों को ब्याह दिया गया, वो ससुराल चली गई।
दीवाली की छुरछुरी एवं होली का गुलाल चली गई।
मोहल्ले में जाओ, जरा झांको कपाट पर।
बैठे मिलेंगे अकेले बाबू जी, किसी कुर्सी या खाट पर।।
सावन के झूले उतर गए, भादों भी निराश रहता है।
मेरा गांव अब उदास रहता है।।

कबड्डी, वालीबाल, अंताक्षरी, सब वक्त की तह में दब गए।
हमारे गांव के लड़के कमाने अहमदाबाद जब गए।।
अब रामलीला, दुर्गापूजा की वो बात नहीं रही।
गर्मियों मे छतों पर हलचल की रात नहीं रही।।
दलान पे बैठे बुजुर्ग भी स्वर्ग सिधार गए।
जो जीत गए थे मुश्किलों से, वो बीमारियों से हार गए।।
ये अंधी दौड़ तरक्कियों की, गांव सूना कर गई।
खालीपन का घाव अब तो, और दोगुना कर गई।
जाने वाले चले गए, यहां कोई न अब आस रहता है।
मेरा गांव अब उदास रहता है।।

मेरे जीवन की यात्रा

श्री कृष्ण लाल
लेखाकार

बचपन में बड़े होने की चिंता,
बड़ा हुआ तो पढ़ाई की चिंता,
पढ़ लिया तो नौकरी की चिंता,
मिली नौकरी, तो लगा अब आराम से समय बिताऊंगा।

पर यह मंजूर नहीं था रब को,
मुझसे दूर किया मेरे घर को,
उत्साह बहुत था मन में मेरे,
पहुंचा जब वहां, दिन भी हुए बड़े।

मुश्किल था वहां समय बिताना,
फिर भी जोड़ा ताना–बाना,
किसी तरह से वक्त बिताया,
परिस्थितियों ने रहना सिखलाया।

सोचा अब हम समझदार हो गए,
अपने मन के वफादार हो गए,
पिता घर में सब देख ही लेंगे,
अपना हम कुछ सोच ही लेंगे।

अब तो सबकुछ जीत ही लूंगा,
जीवन को नई दिशा मै दूंगा,
पर ज्यादा चला न मेरा सपना,
पिता का साथ था सिर्फ उतना।

घर का भार जब सर पर आया,
सर मेरा तो बहुत चकराया,
कितना आसान था कमियां निकालना,
पर मुश्किल था अब सबकुछ संभालना।

कोशिश की तो संभल गया मन,
नियम यही है, सुन, बंध गया मन।
खैर, फिर मैं लौटा अपने कार्य स्थल,
मन से शांत, दिल से निश्छल।

दुनिया की तो रीत यही है,
जीवन का संगीत यही है,
अच्छे पल भी आएंगे,
नया सवेरा भी लाएंगे।

प्रतिनियुक्ति की खबर जब आई,
सुनकर मन में उत्सुकता छाई,
घर में सबने बांटी मिठाई,
नजदीक आ गया घर के भाई।

पर मन में एक चुप सी बेचैनी थी,
खुशी और गम की आँख मिचौनी थी,
क्या सबकुछ फिर वैसा ही रहेगा,
क्या नया परिवार मुझे स्वीकार करेगा?

वापसी का समय जब आया,
मन मेरा तो बहुत घबराया,
क्या जो खोया, उसे फिर से पा सकूंगा?
क्या घर की सारी जिम्मेदारियां निभा सकूंगा?

लेकिन जीवन की राह पर हर कदम,
नए अनुभवों से गुजरते हैं हम,
सच्चाई यही है, कभी न रुकते हैं हम,
क्योंकि जिम्मेदारियों का बोझ,
हमें हर मोड़ पर सिखाता है नया कदम।

अब जान चुका हूं, रुकने की कोई मंजिल नहीं,
जीवन को समझ कर ही उसे जीने की कोई राह नहीं,
बस यही सोचकर फिर एक बार,
सामने आया नया सूरज,
मन में नया उत्साह और विश्वास है,
जो होगा अच्छा ही होगा।

संवेदना कहीं खो गई है

श्री प्रदीप कुमार
लेखाकार

मंजिल अपनी हासिल करने में परहित का ध्यान नहीं है,
स्वार्थ अपना सफल करने में परमार्थ का ध्यान नहीं है,
कौन छूटा, कौन टूटा, कौन हारा, इन सब का भान नहीं है,
प्रगति की मिथ्या होड़ में जैसे संवेदना कहीं खो गई है।

मैं अच्छा हूँ, मैं सच्चा हूँ, मैं सिद्ध हूँ, मैं प्रसिद्ध हूँ ,
मैं ही ज्ञानी, मैं ही ध्यानी, मैं मृदुभाषी, मैं अभिलाषी,
निज प्रशंसा से जीवन लोगों का अंधकारमय हो गया है,
स्वयं को श्रेष्ठ सिद्ध करने में संवेदना कहीं खो गई है।

अर्थहीन महत्वहीन तर्कों से बढ़ रहा आपसी विवाद,
नाजुक पवित्र रिश्तों में गलतफहमी से बढ़ रहा है अवसाद,
बंधु बांधवों में आजकल राम भरत सा मेल नहीं है,
जीवन मूल्यों के संरक्षण में संवेदना कहीं खो गई है।

अंधविश्वास और आडंबर का चारो ओर बाजार सजा है,
मिथ्या प्रलोभन और अपेक्षाओं का भंडार लगा है,
कर्म पर ही अधिकार है अपना, इस सत्य को भूल गए हैं,
भाग्य भरोसे लिप्सा पूर्ति में संवेदना कहीं खो गई है।

नैतिक मूल्यों और आदर्शों का कोई अस्तित्व नहीं है,
सबकी बेटी अपनी बेटी इस मर्म का ज्ञान नहीं है,
पाश्चात्यता में मद्दोन्मत अपने संस्कारों से विमुख हैं,
आधुनिक विकलांग समाज में संवेदना कहीं खो गई है।

आ रहा अहेरी है

श्री अमित कुमार पुष्पम
द्वारा– श्री अमित कुमार, कनिष्ठ अनुवादक

आ रहा अहेरी है।
निरीह, निरपराध, निर्द्वेग पंछी
उड़ान भर! आ रहा अहेरी है।

(1)
नीर नहीं इन नर के नयनों में, न ही जीवित, यह मृत समान है।
विहग निकर आंदोलन का आतंकी रोक रहा उत्थान है।।
पंछी को यह मार गिराता
अन्न के दो कन लुटाता
पंछी भक्षी घूमता यहाँ
जब हो जाता झुटपुटा
निठुर खड़ा बरैला में निर्दयता की निशा अंधेरी है।
निरीह, निरपराध, निर्द्वेग पंछी, उड़ान भर! आ रहा अहेरी है।

(2)
जहरयुक्त कलेवा लिए, देखने में लगता साधु समान है।
सावधान! नदारत हो री नामुराद इसका यही प्रमाण है।
सतर्क हो! सतर्क हो!
त्याग दे तू मूर्खता
कलेवा नही काल है तेरा
कब समझेगा धूर्तता
किसी किसलय की कोख में जा सो जा बची रात थोड़ी है।
निरीह, निरपराध, निर्द्वेग पंछी, उड़ान भर! आ रहा अहेरी है।।

(3)
अतिशयोक्तिपूर्ण दुरात्मा वधिक, तोड़ रहा संविधान है।
सावधान! नदारत हो, रे नामुराद यह बैढ़ा मंझारण धान है।।
शिकार नही करता यह शिकारी
नींद चैन लुटा रहता क्षुब्ध
पूछता हूँ तुमसे आज विधाता
कहाँ गये गांधी, ईसा, महावीर, बुद्ध
सब्र का बाँध तोड़कर, भारत को छोड़कर भाग जा!
बचाव पक्ष में देरी है।
निरीह, निरपराध, निर्द्वेग पंछी, उड़ान भर!
आ रहा अहेरी है।

(4)
सतयुग–द्वापर–त्रेता तारकर, कहाँ बैठे भगवान है।
कलियुग का कायर कंस बनकर बैठा गुमनाम है।।
कौन अपना कौन पराया
खूब तुझे संज्ञान है।
चंद्र–मंगल रटते वैज्ञानिक
क्या इसपर आपका ध्यान है।।
क्या देख रहे? क्या सोच रहे? नि:संदेह उड़ान भर!
यह सलाह मेरी है।
निरीह, निरपराध, निर्द्वेग पंछी, उड़ान भर!
आ रहा अहेरी है।।

(5)
नि:संदेह शैतान की औलाद, यह दयावान नही हैवान है।
क्या करें? एक कड़े कानून का; दूजा समाज मेहरवान है।।
प्यारा है प्राण सबका
बचाने को जाल में जा दुबका
पर कट चुका है परिंदो का
हैवानियत दिख रहा दरिंदों का
खुले गगन के नीचे, छोटे–छोटे घास पीछे
निरस्त जाल अनउभरी है।
निरीह, निरपराध, निर्द्वेग पंछी, उड़ान भर!
आ रहा अहेरी है।।

(6)
हृदयतंत्र का तार टूट गया, अब क्या गुणगान करूँ।
सारा ईद मुहर्रम हो गया, अब क्या रमजान करूँ।।
दया करो! हे दयानिधे
ये बेजुबान प्राणी प्रकृति का नूर है।
और हम पढ़े–लिखे सभ्य का चोला ओढ़े
इनके प्राणातुर है।।
हे पित्रों के तृप्ति के साधन विहग उड़ान भर!
यहाँ सब हेरा–फेरी है।
निरीह, निरपराध, निर्द्वेग पंछी, उड़ान भर!
आ रहा अहेरी है।

नादान परिंदा

श्रीमती गीतांजलि कुमारी
लेखाकार

दूर कहीं आसमान से एक नादान परिंदा आया है,
घर के दहलीज़ में तिनकों से अपना घर बनाया है,
शाम–सवेरे की चहचहाहट से घर रौशन सा छाया है।।

जब पूछा, ऐ परिंदे! क्या तेरी कहानी है?
वो बोला, हे मानुष! कब सुनी तूने मेरी जुबानी है।
दूर क्षितिज़ मंज़िल मेरी, एक आशियाना है,
आज यहाँ, कल वहाँ, सारा जग ही मेरा ठिकाना है।

आँखों में आशा है, पंखों में असीम साहस,
नाप चुका गगन सारा, जितनी थी मेरी ताकत,
धूप–छांव में रहता हूँ,
शरद, शीत, वसंत का उन्मुक्त आनंद उठाता हूँ।
दिन रहे या रात रहे,
अपने ही धून में गाता हूँ ।
सुनो! सुनाऊ, मेरी कहानी,
उड़ता हूँ उन्मुक्त गगन में, आज़ादी का जश्न मनाता हूँ ।

कभी वन की हरियाली में, कभी तरुवर की डाली में,
मैंने अपना घर बनाया था।

तिनका तिनका चुनकर एक आशियाना बड़ी सिद्दत से सजाया था।

पर हे मानव! तेरी करतूत ने
संकट की घड़ी लायी है,
सरोवर में पानी नही, खेत–खलिहान सुनसान पड़ी,
बड़ी ही ख़ामोशी से उसने अपनी व्यथा बतायी है,
दूर कहीं आसमान से एक नादान परिंदा आयी है।

सनातन धर्म और महाकुंभ

श्रीमती रंजना कुमारी
(द्वारा– श्री विनय प्रधान, वरिष्ठ लेखाकार)

सनातन की गाथा अनंत, यह सत्य, शाश्वत, दिव्य प्रचंड,
धर्म की ध्वजा लहराती जाती, युग–युग से यह अखंड।

गंगा के तट पर महाकुंभ आता, श्रद्धा का सागर लहराता,
संतों का संगम जब होता, अध्यात्म का दीप जगमगाता।
चार धाम, चार तीर्थ मिलते, बारह वर्षों में पर्व सजता,
आस्था के अटल प्रवाह में, जीवन का मर्म प्रकटता।

डुबकी एक पावन जल में, हर पाप हर बंधन हारे,
मोक्ष द्वार यह कुंभ दिखाए, संतों के अमृत वचन उबारे।
अखाड़ों की गूंज सुनाई देती, शंख और घंटों की तान,
सन्यासी, योगी, भक्तजन मिल, गाते हरि का गुणगान।

यह केवल एक मेला नही है, संस्कृति की यह शान है,
सनातन की अमर धरोहर, भारत की यह पहचान है।
जय गंगे, जय जगदंबे, जय सनातन धर्म महान,
महाकुंभ की पावन गाथा, गूंजे सदा, रहे अविराम!

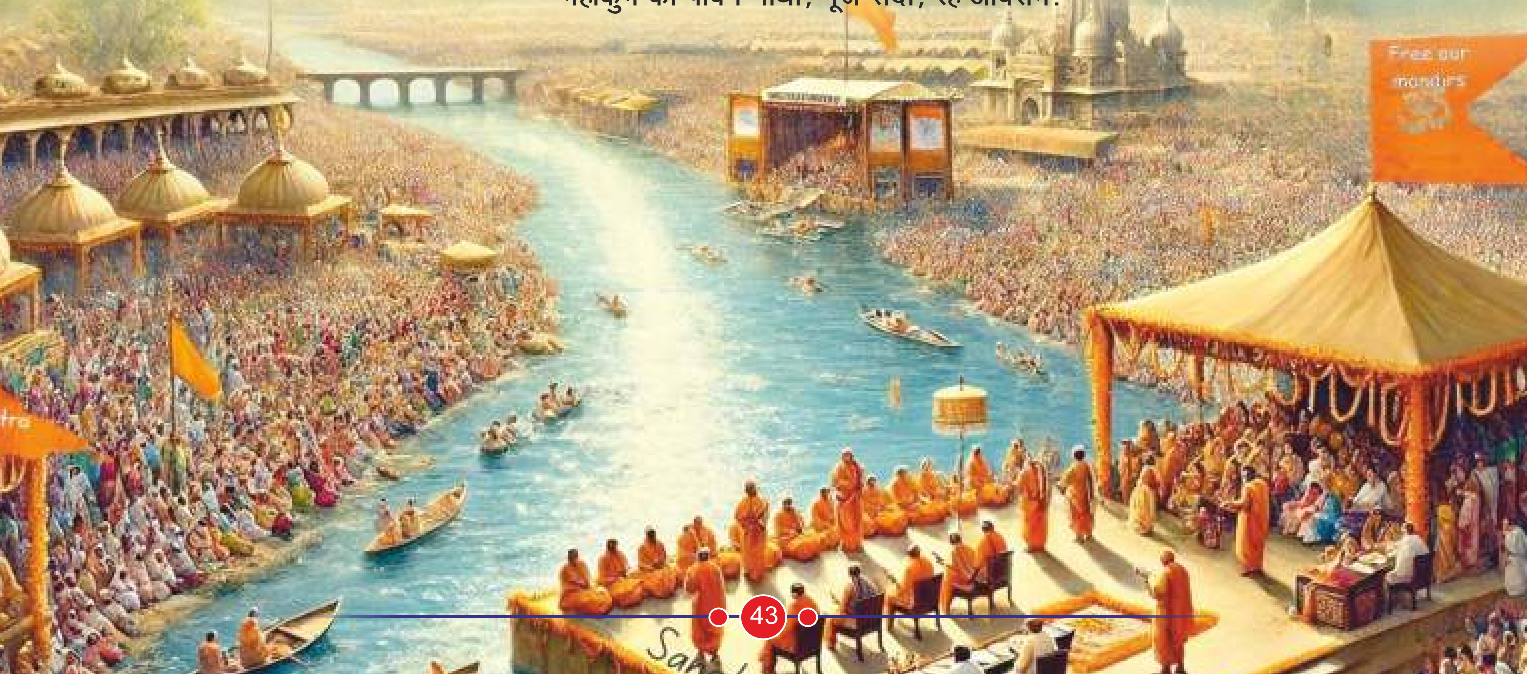

भ्रष्टाचार

श्री जगर नाथ सन्डील
वरीय प्रमंडलीय लेखा पदाधिकारी,
सुवर्णरिखा नहर प्रमंडल, जमशेदपुर

कोई ईमान चोर तो कोई कामचोर है।
हर कोई चोर, भ्रष्टाचार घनघोर है।।

भ्रष्टाचार का डोर है ऐसा फैला चारो ओर है।
इस मायावी मकड़जाल का अंतहीन छोर है।।
गूंज चारों दिशाओं में है, पर ध्वनिहीन शोर है।
कर रहा सुकुन से भ्रष्टाचार कितना भी नियम कठोर है।।

कोई ईमान चोर तो कोई कामचोर है।
हर कोई चोर भ्रष्टाचार घनघोर है।।

भ्रष्टाचारियों का गठजोड़ ऐसा, होता अजब की गुटबंदी है।
विश्वसनीय और अटूट ऐसा, ऐसा अलिखित संधि है।।
हिस्सेदारियों का ये कारवाँ, चल पड़ता एक पगडंडी है।
रोजाना है सदाबहार इनका, कभी न होता मंदी है।।

कोई ईमान चोर तो कोई कामचोर है।
हर कोई चोर भ्रष्टाचार घनघोर है।।
आम सेवकों की भीड़ में बेईमान अनन्त है।
कुकृत्य उजागर करते नही, रहते सब शांत है।।
इनका एक रूप है, इनका एक पंत है।
हर कार्यालय और प्रतिष्ठानों पर इनका ही आकान्त है।।

कोई ईमान चोर तो कोई कामचोर है।
हर कोई चोर भ्रष्टाचार घनघोर है।।

न्याय सम्मत काम करने को हर कोई लेता सौगंध है।
सत्ता और शक्ति मिलते ही करने लगता कुप्रबंध है।।
लालसा और लालची का, बन जाता पाबन्द है।
भ्रष्टाचार की जड़ें ऐसे ही फैलती, फैलता अदृश्य दुर्गन्ध है।।

कोई ईमान चोर तो कोई कामचोर है।
हर कोई चोर, भ्रष्टाचार घनघोर है।।

मंत्री हो या अधिकारी हो या
किसी दफ्तर का चपरासी है।
भ्रष्टाचार को ऐसे सींचते,
जैसे यही इनका चासी हो।।
सामाजिक कल्याण और विकास से इनका
कोई सरोकार नही।
इनकी मेहनत का मकसद तो बस
अपने हिस्से की राशि है।।

कोई ईमान चोर तो कोई कामचोर है।
हर कोई चोर भ्रष्टाचार घनघोर है।।

कल्याण और विकास कार्य धरातल पर जिन्हें लानी है।
भ्रष्टाचार की राह पर चल करता रहता वो मनमानी है।।
करता काम चवन्नी का और रखता अपने पॉकेट में अठन्नी है।
शागिर्द और आकाओं का मुँह बंद रखने को बाँट देता चवन्नी है।।

कोई ईमान चोर तो कोई कामचोर है।
हर कोई चोर भ्रष्टाचार घनघोर है।।

रखकर ध्यान सबके कर्तव्य और हैसियत का,
वेतन, भत्ते और सुविधाएँ सबकुछ मिलता भरपूर है।
पूरी होती हर इच्छाएँ, मिलता इतना जरूर है,
भ्रष्टाचार की कमाई करने को फिर भी क्यों आतुर है।।

कोई ईमान चोर तो कोई कामचोर है।
हर कोई चोर, भ्रष्टाचार घनघोर है।।

एक स्वप्न 'मां का गुजरना'

श्री अमित कुमार
कनिष्ठ अनुवादक

रात हुई, फिर सपनों की,
बरसात दिखाई देती है।
मैं जब भी अकेले रहता हूं,
मां साथ दिखाई देती है।
मां तुम कितनी निर्मल हो,
मां तुम कितनी शीतल हो।
मां तुमसा कोई नहीं यहां,
मां तुम जैसे गंगा जल हो।
मां तुम्हारी परिभाषा,
कोई नही कह सकता है।
मां तुम सबसे सुंदर हो,
तुम बिन कोई नही रह सकता है।
मां तुम्हारी छाया में मैं,
बचपन पूरा खेला हूं।
मां आज बड़ी जरूरत है,
मैं एकदम से अकेला हूं।
मां, आई, अम्मा, अम्मी,
इनसे तुम्हें जाना जाता है।
मां, ईश्वर से भी बढ़ कर,
तुमको माना जाता है।
मां तुमने कितनी ही नाजों से,
हम बच्चों को पाला है।
मां खुद की चिंता न करके
तुमने हमे संभाला है।
मां लाल तुम्हारा है तुमको,
फिर से है पुकारता।
मां उठो भी न तुम शैय्या से,
तुम्हारा लाल तुम्हें निहारता।
मुझे आप बतलाओ पिताजी,
मां क्यों नहीं है बोलती।
क्या हुआ उन्हें कुछ तो बोलो,
मां आंखे क्यों नहीं खोलती।
घर का हूं सबसे बड़ा मैं,
मां तुमने नाजों से पाला है।
मां देखो तुम्हारा लाल आज,
कुछ अच्छा बनने वाला है।
मां मेरी बात मान लो भी,
एक बार मुझे तुम देखो भी।
मां लाल तुम्हारा रो रहा,
मां आंसू मेरे तुम पोछों भी।
मां भी बेचारी आज उसको,
क्या ही कुछ बोलेगी..!
मां जा चुकी है, उठो बेटा,
मां आंखे कैसे खोलेगी..!
मुझको अलग हटा करके,
मां को ले जाया जाता है।
फिर उनके अग्रज पुत्र के हाथों से,
उन्हें मुखाग्नि दिलाया जाता है।
तू बड़ा है, समझता नहीं,
लेकिन तू तो मां का प्यारा है।
मां चली गई, ना आयेगी,
अब तू पापा का सहारा है।
कल सपनो में आकर फिर,
मां ही सब याद दिलाती है।
स्मृति पटल पर इक वही छाप,
फिर दुबारा आ जाती है।
मां तुम बिन मेरा कुछ भी नहीं,
न हीं यहां है आधार कोई..!
मां तुम बिन कैसे खुश रहूँ,
तुम बिन मेरा परिवार नहीं..!
मां,
तुम बिन मेरा परिवार नहीं..!

सफर का हमसफर

श्री राहुल कुमार
सहायक लेखा अधिकारी

आज अगर है, कल मगर है,
जाने कहाँ, कल का डगर है।
जिंदगी है जनाब, सपनों का सफर है,
यहाँ कोई नहीं, अपना हमसफर है।।

यूँ मिली थी, ज़िंदगी के सफर में,
हमसफर का किरदार बनके।
चल पड़ी मुसाफिर की तरह,
छोड़ मुझे अकेले, मेरे ही सफर में।।

वो लम्हें अब तस्वीर बन गए हैं,
आँखों की कोरों में शबनम बन गए हैं।
हर बात, हर झलक अब खामोश सी है,
धड़कनों में बसी उसकी हसी, मधुर धुन सी है।।

ना कोई शिकायत, ना ही कोई इल्जाम है,
बस कुछ यादों का बोझ, और सन्नाटा तमाम है।
जिंदगी है जनाब, सपनों का सफर है,
यहाँ कोई नहीं, अपना हमसफर है।।

जो साथ निभाने चली थी एक रोज,
अब वो बस अधूरी कहानी सी है।
ना कोई अपना, ना कोई हम कदम,
बस तन्हा सफर, और बेजुबान शाम सी है।।

जिंदगी है जनाब, सपनों का सफर है,
यहाँ कोई नहीं, अपना हमसफर है।।

मगर सफर रुकता नहीं, थमता नहीं,
हर रात के बाद, एक नया सवेरा है कहीं।
अब जो मिलेगा, उसे खोने का डर नहीं,
हर मोड़ पर अब मैं हूँ, और कोई नहीं।।

जिंदगी है जनाब, एक लम्बी सफर है,
यहाँ कोई नहीं, अपना हमसफर है।।

आज अगर है, तो कल फिर बेखबर है,
जाने कहाँ ये रास्ता, जाने कैसी ये डगर है।

जिंदगी है जनाब, सपनों का सफर है,
यहाँ कोई नहीं, अपना हमसफर है।।
आज अगर है, कल मगर है,
जाने कहाँ ये कल का डगर है।
जिंदगी है जनाब, सपनों का सफर है,
यहाँ कोई नहीं, अपना हमसफर है।।

संघर्ष से थका मन

श्री सुनील कुमार साव
सहायक निदेशक (राजभाषा)

थक गया हूँ अब इन राहों की गर्द से,
हर कदम पर चोट है, हर मोड़ एक जंग है।
जीवन की इस दौड़ में न जाने क्या पा लिया,
पर जो खोया है, उसका हिसाब नहीं बनता।

कभी सपनों की उड़ान थी, आसमान से बातें थी,
अब तों सपने भी थककर आँखों में रुक जाते हैं।
हर सुबह उम्मीदें लेकर आती है ज़रूर,
पर शाम होते ही वो भी चुपचाप मर जाती हैं।

लोग कहते हैं – "मजबूत बनो, टूटो मत,"
पर क्या कभी किसी ने टूटी हुई साँसों को सुना है?
चेहरे पर जो मुस्कान है, वो मास्क सी बन गई है,
भीतर की चुप्पी अब शोर बनकर बहने लगी है।

बस कुछ पल चाहिए, जहां न हो कोई सवाल,
जहां मैं खुद से मिल सकूं, बिना किसी मुखौटे के हाल।
न कोई दौड़, न मंजिलों का भार,
बस एक छांव, जहां थकान ले सके आराम हर बार।

अगर संघर्ष ही जीवन है, तो थोड़ा विश्राम भी दे,
ऐ जिंदगी, अब कुछ पल सुकुन के भी दे।
थक गया हूँ अब इन राहों की गर्द से,
संघर्ष से थका मन को अब थोड़ा विराम भी दे...।

इन्दुवचन बाबा

श्री अमित कुमार ''पुष्पम''
द्वारा– श्री अमित कुमार, कनिष्ठ अनुवादक

हम से पूछो मैथिल का वजूद क्या है ?
मैथिल का हम से निगूढ़ क्या है ?
घी बिना रोटी गले से उतरता नही।
बिना दही के पेट भरता नही।।
पापड़ – तिलकोर – साग – चटनी – तरुआ
भोजन का श्रृंगार है।
दूध के बिना भी कोई आहार है?

मैथिल से पूछो पान – मखाना – माछ की महिमा।
भात – दाल में निहित बैगन अदौरी और कदिमा।।
रोहू – जासर – गईची – कबई – बोआरी।
ढालों सिंघी तरले में भरल थारी।।

मुख शुद्धि में मिश्री – सौंफ – अमोट।
मन असकसाय तो जाय ज़मीन पर लोट।।
दही – चुरा – चीनी मैथिल का शान है।
उदार कुण्ड में बसते मैथिल के भगवान हैं।।

मैथिल का भोजन भी एक हवन होता है।
छुधा तृप्ति ही उनका धन होता है।।
सबसे पहले वो क्षुधाग्नि में घी का आहुति देता है।
फिर तरकारी – हथकारी – फरकारी का भोग लेता है।
बैठे – बैठे दुख जाय पाँव तो,
एक पसार दूसरा मोर लेता है।
सर्दी भी हो तो दवा में,
मछली का झोड़ लेता है।।
इसलिए,
कहे हमारे इंदु बाबा,
बोल मैथिल तूने क्या संपत्ति बनाया।
अरे!
ज़मीन बेचकर खाया नहीं तो क्या मैथिल कहलाया।।
ज़मीन बेचकर खाया नहीं तो क्या मैथिल कहलाया।।

जिस देश को अपनी भाषा और साहित्य के गर्व का अनुभव नहीं है, वह उन्नत नहीं हो सकता।

– डॉ राजेंद्र प्रसाद

शिक्षक की भूमिका

श्रीमती गीतांजलि कुमारी
लेखाकार

बचपन की गलियारों से,
घर–आँगन की छांवों से,
दूर हुए ननिहालों को,
मित्र बनकर समझाते हैं, जीने की राह दिखाते हैं।
वही शिक्षक कहलाते हैं।

जब माँ की ममता की याद सताए,
पितृ–स्नेह बिन आँख भर आये,
तब, जो करुणा दिखलाते हैं,
प्रेम का सीख सिखाते हैं,
जीने की राह दिखाते हैं ।
वही शिक्षक कहलाते हैं ।

भले–बुरे का आभाष करायें,
अनुशासन का पाठ पढ़ायें,
जब–जब राह से भटके छात्र,
सही मार्ग बतलाते हैं, जीने की राह दिखाते हैं।
वही शिक्षक कहलाते हैं।

शिक्षक अर्जुन की बाण हैं,
कर्ण की पहचान हैं,
श्री राम का त्याग हैं,
गीता का सम्पूर्ण ज्ञान हैं,
जो युगों–युगों तक अमर हो जाते हैं,
जीने की राह दिखाते हैं,
वही शिक्षक कहलाते हैं।।
वही शिक्षक कहलाते हैं।।

"यदि गद्य कवियों की कसौटी है तो निबंध गद्य की कसौटी है।
भाषा की पूर्ण शक्ति का विकास निबंधों में ही सबसे अधिक संभव होता है।"
– आचार्य रामचंद्र शुक्ल

भगवान जी से इंटरव्यू

श्री ओम
(द्वारा – श्री उमेश कुमार ओझा, वरिष्ठ लेखाकार)

हैलो भगवान जी, हाउ आर यू?
जरा ध्यान, इधर भी दीजिए।

हम इतनी देर से बैठे हैं,
श्वास खींचकर, आँखे मीचकर,
किंतु आप एकदम मौन हैं।
कम से कम यह तो पूछ लीजिए
हम कौन हैं?

आपसे भेंट करने का कोई समय नहीं, नियम नहीं, कानून नहीं।
कम्पलेन भी करें तो आपके यहाँ टेलिफोन नहीं,
नाराज न हो तो आपसे कुछ बाते कर लें,
प्रश्न यह था भगवन् कुर्सी से चिपकने वाले जब धरा पर मौजूद थे,
तो छिपकली का निर्माण किया क्यों?
इतने सारे दलबदलूओं के रहते गिरगिट का निर्माण किया क्यों?

इतनी सी प्रार्थणा है आपसे
मेरे इस छोटे से इंटरव्यू में कृप्या इन प्रश्नों का जबाब तो दिया कीजिए.....

यदि धरा पर वृक्ष न होंगे

सुश्री श्रद्धा ओझा
(द्वारा – श्री उमेश कुमार ओझा, वरिष्ठ लेखाकार)

यदि धरा पर वृक्ष न होंगे, जल न होंगे, वायु न होंगे,
घने कुंज की छाया में तब खग–कुल की चहुचाट न होंगे।।

टकली सी होंगी वसुंधरा, पशुओं से रिक्त होगी कंदरा,
शीतल स्वच्छ ब्यार न होंगे।।

खाने को भोजन न होंगे, और धारण को वस्त्र न होंगे,
डाल न होंगे, पात न होंगे।।

जीवन दायिनी नदियों में निर्मल जल संचार न होंगे।।
फल न होंगे, फूल न होंगे, मंदिर में श्रृंगार न होंगे।।

शेर, हाथी, बाघ न होंगे ऋतुएँ एवं ऋतुराज न होंगे।।
नेताओं के गले में शोभित न पुष्पों का हार ही होंगे।।

आशा रहित इस दुनिया में, जीवन का संचार न होंगे।।
हे मानव ! तू कहाँ बचेगा, यदि धरा पर वृक्ष न होंगें।।

मेहनत का पेड़

एक समय की बात है, आमपुर नामक एक छोटे से गाँव में एक बड़ा सा आम का पेड़ था। वह पेड़ बहुत पुराना और विशाल था, और हर साल इस पर बहुत मीठे आम लगते थे। गाँव के लोग उस पेड़ के नीचे बैठकर आम खाते थे और उसकी छांव में आराम करते थे।

वहीं पास के गाँव फलपुर के लोग एक दिन अपनी यात्रा के दौरान आमपुर में आए। वे रास्ते से गुजरते हुए उस पेड़ के पास रुके और देखा कि पेड़ पर आम लदे हुए हैं। उन्होंने एक आम तोड़ा और खाया। आम की मिठास ने उनकी मुँह की लब्ज़ों को चुप कर दिया। वे बहुत खुश हुए और आपस में कहने लगे, 'यह आम बहुत ही मीठा है! अगर हम इसे अपने गाँव ले जाएं तो कितना अच्छा होगा! 'उन्होंने सोचा कि वे ढेर सारे आम तोड़कर अपने गाँव ले जाएंगे। लेकिन गाँव के मुखिया ने आकर कहा, 'ये आम हमारे पेड़ के हैं, आप इन्हें नहीं ले जा सकते।'

सुश्री ज्योति कुमारी
कक्षा – III
द्वारा– श्री कृष्ण लाल
लेखाकार

फलपुर के लोग यह सुनकर उदास हो गए और सोचा कि इतने मीठे आम उनके गाँव में क्यों नहीं हैं। फिर उन्होंने अपनी मेहनत से एक नया पेड़ लगाने का फैसला किया। उन्होंने फलपुर में एक आम का पेड़ लगाया। कुछ समय बाद, उस पेड़ पर भी मीठे आम लगने लगे। फलपुर के लोग बहुत खुश हुए और अपने मेहनत के फल का आनंद लिया।

कुछ साल बाद, आमपुर के लोग भी फलपुर में आए और देखा कि वही पेड़, वही आम... लेकिन इस बार कहानी उलटी थी। अब फलपुर के लोग समझ गए थे कि हर पेड़, हर फल, और हर खुशी मेहनत और समय के बाद मिलती है।

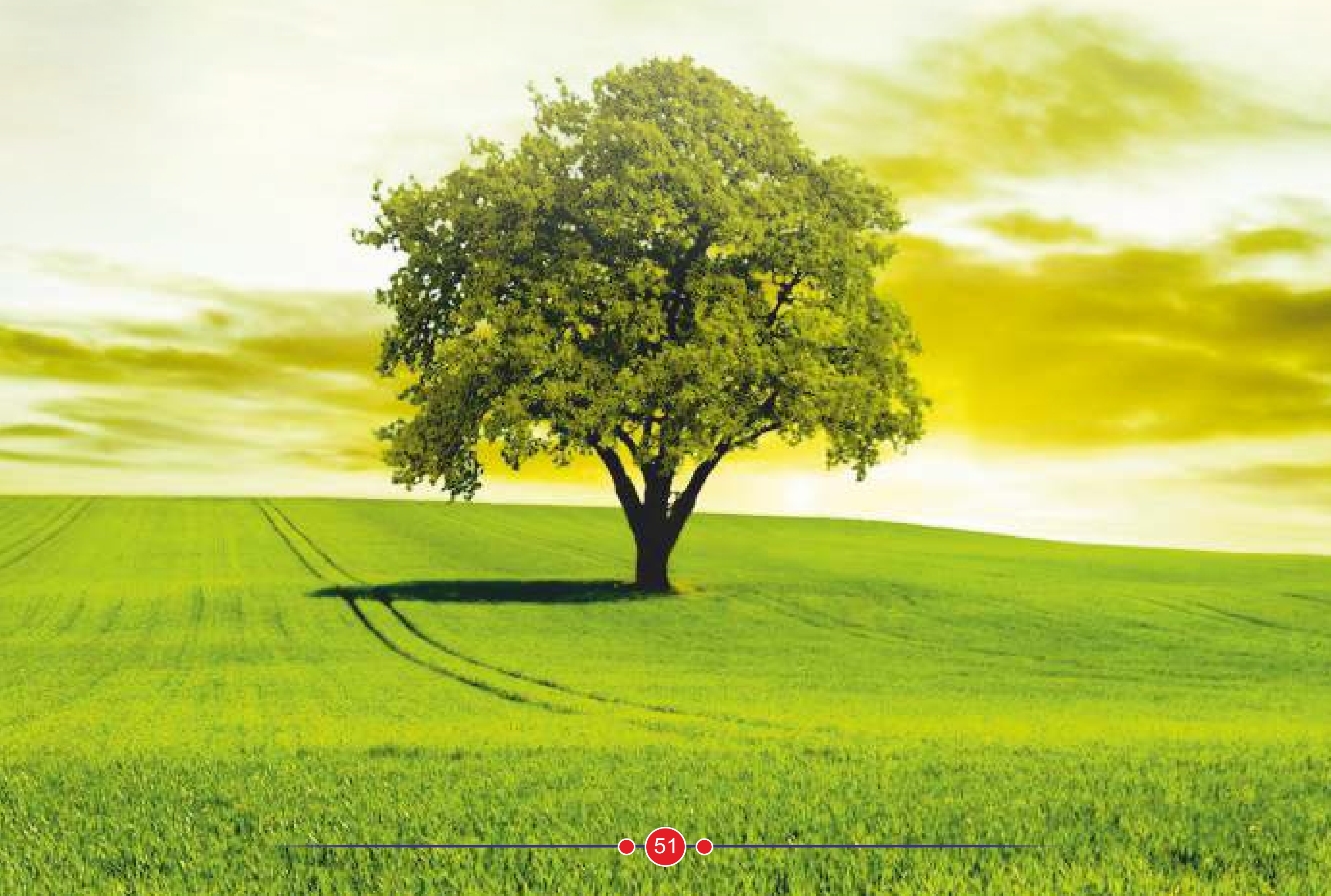

हिंदी पखवाड़ा 2024 का समापन समारोह।

हिंदी पखवाड़ा 2024 का समापन समारोह।

हिंदी कार्यशाला (वर्ष 2024–25) में व्याख्यान देते श्री सुनील कुमार साव, हिंदी अधिकारी।

राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक।

अंतराष्ट्रीय योग दिवस 2025 का आयोजन।

अंतराष्ट्रीय योग दिवस 2025 का आयोजन।

हिंदी पखवाड़ा 2024 का समापन समारोह पर संबोधन देते
श्री सुनील कुमार साव, हिंदी अधिकारी।

दिशा पत्रिका 2024 के 47वें अंक का विमोचन।

श्री प्रतीक जैन, सहायक लेखा अधिकारी द्वारा निर्मित चित्र